सदस्य थे। वे ब्रिटिश तथा अमेरिका के विरोध में काफी बातें किया करते और साथ ही रूस के संदर्भ में खुल कर प्रशंसा किया करते। पश्चिम बंग के मुख्यमंत्री उस समय विधान राय थे। कांग्रेस और विधान राय के कुशासन के विरुद्ध सीपीआई (भाकपा) काफी मुखर प्रचार करती। स्कूल में हड़ताल कर हम सीपीआई के जुलूस में शामिल होते थे। 1955 में कलकत्ते में रूस के प्रधान मंत्री बुल्गानिन और ख्रुश्चेव नाम के दो नेता आये। बांग्ला में गडेर मठ, जो भारतीय सेना के पूर्वांचल सब फोर्ट वीलियस नामक गढ़ के नियंत्रनाधीन रहता था उसी विशाल मैदान की सभा में इन्हें देखने–सुनने लाखों लाख लोगों से मैदान ही नहीं, रास्ते और फुटपाथ तक जन–सैलाब से हिलोरें लेने लगे। हम भी उन्हें देखने–सुनने पहुंचे। पर भारी भीड़ के चलते करीब नहीं जा पाये। आसपास उपस्थित लोगों से सोवियत रूस के बारे में काफी भली–बुरी, मिली–जुली बातें सुनी। उस समय पश्चिम बंगाल में मूलतः तीन राजनीतिक पार्टियां थीं। कांग्रेस, सीपीआई, तथा प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (PSP) थी। इनके अतिरिक्त कुछेक छोटी पार्टियाँ RSP, SUCI आदि भी थी। मेरे छोटे मामा PSP पार्टी में सक्रिय थे। वे घर पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं मंगाया करते थे। उन पत्रिकाओं में सोवियत रूस किस तरह अभी–अभी आजादी हासिल करने वाले जन–चीन की विभिन्न औद्योगिक परियोजनाओं में मदद कर रहा है, इन विषयों पर बहुतेरे लेख और तस्वीरें हुआ करती थी। उस समय रूस और चीन के साथ भारत का गहरा दोस्ताना संबंध बन चुका था। हमारे घर के पास ही (एल्गिन रोड पर) चीनी दूतावास ने एक रीडिंग रूम खोला। हम उस पुस्तकालय में जा कर चीन और सोवियत रूस की विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं और पुस्तकें पढ़ा करते।

इस दौरान (1955) चीन के प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाई दोस्ताना सफर पर भारत आये। कलकत्ता आ कर जवाहरलाल नेहरू के साथ खुली जीप पर सवार हो कर जब कहीं जा रहे थे, तब हमने बहुत ही करीब से उन्हें देखा। वे छोटी कद काठी के छरहरे बदन के व्यक्ति थे। हाथ उठाकर बहुत ही महीन (कोमल) स्वर में सड़क पर उमड़ी भीड़ को संबोधित करते हुए हिंदी–चीनी भाई–भाई कह कर अभिवादन कर रहे थे। 1956 में पहले दर्जे से स्कूल फाइनल की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। छात्र जीवन में कभी भी प्राईवेट कोचिंग क्लास में नहीं गया। जो कुछ सीखा, सब अपनी ही कोशिश से। उसी वर्ष घर

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के
वरिष्ठ व अनुभवी पोलित ब्यूरो सदस्य

कामरेड सुशील राय की स्मृतिकथा

(जन्म-25 दिसम्बर 1936, शहीद-18 जून 2014)

vej 'kghn dkejsM l|'khy jk; dh J)katfy lHkk ¼dydÙkk½ dh dN rLohjs

ऑफ टू सिटीज़, ओथेलो और होमर के लिखे इलियाड और ओडिसी से ली गई विभिन्न कहानियाँ।

इन के अलावा 'आनंद मठ' एवं शरद्चंद्र की 'पथेर दाबी' के अलावा भी उनकी अन्य कई किताबें पढ़ी।

घर के नजदीक उस किताबों की दुकान में बच्चों की एक मासिक पत्रिका 'शुकतारा' मिलती थी। उस पत्रिका में 'अमरवीर गाथा' शीर्षक से पुरानी ऐतिहासिक रचनाएं रहती थी। उस में छत्रपति शिवाजी, राणा प्रताप, झांसी की रानी, तांत्या टोपे, टीपू सुल्तान, मंगल पांडे की जीवनी सहित तत्संबंधी ऐतिहासिक विवरण भी होता।

इसी के साथ अग्नि युग के क्रांतिकारी खुदीराम बोस, शहीद भगत सिंह, बाघा जतिन, विनय–बादल–दिनेश गुप्त के क्रांतिकारी कार्यकलापों सहित उनकी जीवनियां भी हुआ करती थी। क्रांतिकारी दिनेश गुप्त रिश्ते में मेरे चाचा (पिताजी के मौसरे भाई) लगते थे। इन तीनों ने अनुशीलन पार्टी की योजना के तहत कलकत्ते के सरकारी मुख्यालय राइटर्स बिल्डिंग में हमला कर वहाँ अंग्रेज अफसर कर्नल सिम्प्सन को जान से मार दिया था। आधे घंटे तक दोनों तरफ से गोलीबारी जारी रही। यह युद्ध इतिहास में अलिंद (बरामदा) युद्ध के नाम से मशहूर हुआ। इसमें उन्होंने कर्नल सिम्प्सन को मार गिराया था, घटना 8 दिसंबर 1930 की है। इसी के बाद तीनों क्रांतिकारी बुरी तरह घायल अवस्था में पकड़े गये थे। नेता विनय और बादल की अस्पताल में ही मृत्यु हो गयी और दिनेश गुप्त धीरे–धीरे स्वस्थ हो उठे, पर न्याय के नाम पर अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। वर्तमान में डलहौजी चौक (स्क्वेर) का नाम बदलकर विनय–बादल–दिनेश बाग कर दिया गया है।

'शुकतारा' पत्रिका में उन तमाम लेखों के अलावा भी अग्नियुग के बहुत सारे क्रांतिकारियों की जीवनियां मैंने पढ़ी। उस समय बंगाल के दो क्रांतिकारी संगठन – 'अनुशीलन' और 'युगांतर' – के बारे में प्रकाशित रचनाएं भी पढ़ी। किशोरावस्था में ये तमाम रचनाएं मुझे बेहद आकर्षित करती थीं।

1955 में दसवीं कक्षा में पढ़ते समय कुछ राजनीतिक चर्चाएं सुनाई देती थी। हमारे स्कूल के गणित के शिक्षक तत्कालीन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के

मामा देश के बंटवारे के पहले ही से मकान किराये पर लेकर रहते थे।

कई महीने बाद हमलोग मामाबाड़ी को छोड़ वहीं भवानीपुर ही में रह रहीं हमारी एक धनी मौसी के घर रहने चले आये।

कुछ महीनों बाद पता चला कि हमारे बड़े भाई बॉम्बे में हैं, वहाँ 1948 में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हुये नौसैनिक विद्रोह (यह विद्रोह 1946 में हुआ था) के लड़ाकों की मदद कर रहे थे। 'दादा' (बड़े भाई) वहाँ एक अल्पवेतन पर छोटी–सी नौकरी कर रहे थे। कुछ समय बाद एक नयी नौकरी पाकर बिहार के धनबाद आ गये। उस समय (1949 में) धनबाद के सिंदरी में जो खाद का कारखाना बना, वहीं उन्हें नौकरी मिली थी। बड़े भैया के सिंदरी आ जाने के बाद वहाँ उभरे नये नगर में उन्हें क्वार्टर मिला था। जगह को शहरपुरा कहा जाता था। हम सब पूरे परिवार के साथ शहरपुरा रहने चले आये।

Nk= thou

छात्र जीवन में बहुत सारी घटनाएं हैं, जिनका विस्तृत लेखा–जोखा देना यहां मुनासिब/संभव नहीं है। छात्र के तौर पर मैं औसत दर्जे का था। स्कूल में मुझे कभी 1 से 10 के बीच कोई जगह नहीं मिली, पर मोटे तौर पर अच्छे अंकों से पास हुआ करता था।

स्कूल की पढ़ाई–लिखाई के दरमियान मैंने दूसरी बहुत सारी किताबें पढ़ ली। हमारे घर के पास ही फुटपाथ पर किताबों की एक दुकान थी (अब भी है)। वे लोग अखबार बेचते थे, इसके साथ तरह–तरह की बांग्ला किताबों के साथ विदेशी/अंग्रेजी किताबों के अनुवाद बाहर सजा कर रखते थे। सुंदर रंगीन मुखपृष्ठों वाली ये किताबें उस समय बहुत आकर्षित करते थे। देश–विदेश का इतिहास मेरा बहुत प्रिय था (अब भी प्रिय है)। स्कूल में इतिहास में अच्छे नंबर पाता था। लिहाजा ये तमाम विदेशी ऐतिहासिक रचनाएं मुझे बहुत आकर्षित करती थी। पैसे जमा करते हुए ये तमाम किताबें खरीदा करता। इन तमाम किताबों में से कुछ थे आइज़नहो, मैन इन द आयरन मॉस्क (ब्रिटेन के नाईट योद्धाओं पर लिखा), बेनहर, स्पार्टकस, हेलेन ऑफ ट्राय, मैक्बेथ, ए टेल

dkejM l|'khy jk; dh ^LefrdFkk* d¢ i¦dk'ku d¢ ckj¢ e¢a FkksM+h&lh ckr¢a

gekjh dEiuh; dkejsM d¢ ofj"B ikfyr C;jks lnL; o vej 'kghn dkejM l|'khy jk; mudh eR;q d¢ dN&gh fnu igys d¢Uæ¢ chekjh dk Hkkjh rdyhQHkjk fpfdRlk/khu jgr¢ le; e¢a gh dN Nk= o cf) thfo;k¢ d¢ vu|jk/k ij ^LefrdFkk* fy[kA vly e¢a bl dk mí¢'; Fkk] ub¢ ih<h d¢ vufxur dkejMk¢ d¢ lkeu 1960 d¢ n'kd dh vrjjk"Vh; o jk"Vh; Lrj ij dE;fuLV vkUnksyu dh mFky&iFky Hkjh fLFkfr d¢ ckj¢ e¢a ,d Li"V /kkj.kk j[kfdr djuk(ftl¢ egku dkejM Lrkfyu dh eR;q d¢ ckn dh ifjfLFkfr e¢a [kLpo l¢'kk/kuokn ¼;kuh 'kkfri.kZ ekxZ l¢ lektokn e¢a lØe.k dk ?kkj l¢'kk/kuoknh fopkj½ dk mn; o vrjjk"Vh; dE;fuLV vkUnksyu dk foHkktu] egku ekvk&Rl¢r³ d¢ iR;{k urRo e¢a phuh dE;fuLV ikVh ¼lhihlh½ }kjk lpkfyr £Lpo l¢'kk/kuokn d¢ f[kykQ egku cgl ¼Great Debate½ dh 'k:vkr] egku ekvk d¢ iR;{k urRo o n¦[kj¦[k e¢a phu e¢a i¦thokn d¢ jkgxhjk¢ d¢ f[kykQ lpkfyr egku lo¢gkjk lkLdfrd Økfr ¼GPCR½ vkj Hkkjr d¢ dE;fuLV vkUnksyu e¢a tkjh nk&ykbu d¢ chp rho l?k"k dh /kkjk e¢a 1967 e¢a crkj ,d ot?kk"k uDlyckMh d¢ ,frgkfld foækg dk mnHko vkj lPp dE;fuLV o >B dE;fuLVk¢ d¢ chp lLi"V foHkktu&bR;kfn mYy[kuh; ?kVuk,¡ FkhA

vyko] Hkkjr e¢a turk dh efDr dk lgh ekxZ ;kuh l'kL= df"k&Økfr d¢ ekxZ e¢a vxlj gku¢ d¢ fy, rFkk ekvk&inf'kr xko l¢ 'kgj ?kju¢ dh ykbu ;kuh nh?kdkyhu yksd;q) dh ykbu d¢ vu|lkj 0;kogkfjd i¦;kx l¢ lcf/kr cgr&l¢ vuHkok¢ d¢ ckj¢ e¢a Hkh cgr&gh vPNh /kkj.kk,¡ Hkh ub¢ ih<h d¢ dk;drkvk¢ d¢ fy, veY; vuHkok¢ d¢ Hk.Mkj d¢ :i e¢a dke djxhA

pfd ^LefrdFkk* dk mí¢'; jktuhfrd o 0;kogkfjd vuHkok¢ dk ub¢ ih<h d¢ fy, ykuk Fkk vkj pfd bldk fy[kr¢ le; mud¢ lkFk dke

fd;s ,Isk dkbZ Hkh dkejsM mifLFkr ugha Fks] blhfy, blesa D;k&D;k vf'k ughas nus lsa Hkh vkrrfoLrq ;k vuHkkok esa fd lh Hkh idkj dk Qdz ugha vk,xk] mlh rjg ls Qkbuy idk'ku ds le; mlsa xj&t :jh vfa'k dks NkaV fn;k x;k gSA vyko] dgha&dgha tks lk g ols lk gh jgus ls FkkMh cgqr Hkkfr ink gks ldrh gS ;k ikVh&,drk fojk/kh 'kfDr o n"ipkj pyklukokyh e'khujh bldk xyr Qk;nk mBkus dk iz;kl dj ldrk gS] blhfy, ml vf'k dks Bhd fd;k x;k gSA lkFk gh lkFk ,elhlh ds bfrgkl esa bykdk foLrkj ds loky ij dku dkejsM dk dc dgka Hkh tk x;k Fkk] blesa Hkh o"kZ dk ftØ djrs le; mudk mruk ;kn ugha jgus ds dkj.k FkkMh&cgqr Hkwy jg x;h Fkh] ftl s Bhd dj fn;k x;k gSA vfrem esa jhe ¼RIM½ ds lkFk ,elhlhvkbZ ds lc/k ds ckjs esa ;gka ,d ckr ftØ djuk Bhd gksxk fd jhe lxBu dh rjQ ls ,elhlhvkbZ dks ,d ?kVd ¼Constituent½ lxBu ds :i esa Lohdfr ;k ekU;rk nh x;h gS& ,Ik dkbZ Official ¼vkf/kdkfjd i=½ gekjs ikl ugha Hkstk x;k gSA blfy, ,elhlhvkbZ [kn dks dHkh jhe dk lnL; dgdj ugha ekukA ge fuf'pr gSa fd dkejsM l|'khy nk u ftl me o ftl rdyhQ dks lgrs gq, ^LefrdFkk* fy[kk] mlesa jhe ds ?kVd lxBu lc/kh tfVy o ipshnk iz'u dk vfre ifj.kke ds crkj ,elhlhvkbZ dk Qlyk D;k gS vkSj Fkk mlls dN gn rd Hkwy tkuk LokHkkfod gh FkkA

mEehn gS fd dUnh; deVh }kjk idkf'kr bl ^LefrdFkk* ds idk'ku ls u;h ih<h ds vufxur dkejsMks dks ,d lPps dE;fuLV ds jktuhfrd thou o lo|gkjk x.klEiUu thou&'kSyh rFkk veY; 0;kogkfjd vuHkoks dk HkMkj feyxkA

mEehn gS fd ubZ ih<h ls ydj reke lkfFk;ksa ds fy, Hkkjrh; Økfr dh ektnk dfBu o tfVy fLFkfr dk lQyrkiwod edkcyk dju ds fy, ;g ^LefrdFkk* cgqr&gh dkjxj fl) gksxkA

vej 'kghn dk- l|'khy jk; thou ds vfre cn [ku jgus rd mDr LefrdFkk ds tfj, ge lcks ds fy, tks cgqr&gh rkRi;iw.kZ l)kfrd&jktuhfrd o 0;kogkfjd vuHkoks dks fy[kdj x, gS& og ,d

cpiu&Nk= thou

मेरा जन्म 1936 के 25 दिसंबर को पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) के ढाका जिले के सिंगाई नामक गाँव में हुआ। जब मैं समझने–बूझने लायक हुआ तब से देश के विभाजन तक हम ढाका जिले के मानिकगंज में रहे। मानिकगंज विकासमान बड़ा गाँव (कस्बा) था। हम छः भाई और दो बहनें थे। मैं माता–पिता की पाँचवी संतान था। मुझसे छोटा एक भाई और एक बहन थी। हम लोग स्कूल में भर्ती हुए। देश के बंटवारे के पहले मैं चौथा दर्जा पास हो चुका था।

ऐसे में 1947 के 15 अगस्त को तथाकथित आजादी के नाम पर देश का बंटवारा हो गया। हम बच्चे इन घटनाक्रमों से कुछ खास आलोड़ित नहीं हुए। इस (विभाजन के) मामले की इतनी भयंकर परिणति हो सकती है, इस बारे में हमारी कोई समझ नहीं थी। कई महीने बाद सुना कि बांग्लादेश में (दोनों बंगालों में) चारों ओर हिंदु–मुसलमानों के बीच भयानक दंगे शुरू हो गये हैं। दंगा क्या होता है, हम समझ नहीं पाते थे। बड़ों से सुनता था, हिंदु और मुसलमान एक दूसरे की हत्याएं कर रहे थे। घर–द्वार लूटकर उन्हें आग के हवाले कर रहे थे। सिर्फ यही नहीं, बंगाल को दो हिस्सों में – पश्चिम बंगाल और पूर्वी बंगाल – में बाँट दिया गया। पूर्वी बंगाल को भारत की पश्चिमी सीमा पर बने पाकिस्तान के साथ जोड़ दिया गया था। फलस्वरूप पूर्वी बंगाल के हिंदु अपने ही घर में अल्पसंख्यक हो गये और बहुसंख्यक मुस्लिम हमलावरों के हमले झेल रहे थे। परिणामस्वरूप अपनी जमीन और अपने गाँव–कस्बों से लाखों की संख्या में पश्चिम बंगाल की ओर व असम और त्रिपुरा की ओर भाग खड़े हुए। हालांकि मानिकगंज में हिंदु अल्पसंख्यक ही थे पर वहाँ कोई सांप्रदायिक दंगा होने नहीं दिया गया।

मगर बाद में हालात में तेजी से आती गिरावट के चलते सभी परिवारों ने पश्चिम बंगाल चले जाने का फैसला किया। पिताजी की नौकरी के कारण इस तरह चले आने की कोई गुंजाइश नहीं थी/सरकारी अनुमति नहीं थी। मगर हालात के परिप्रेक्ष्य में घर के सारे सामान मिट्टी के मोल बेच कर वे चले आने पर मजबूर हुए। आखिरकार दो टमटम किराये पर लेकर दोपहर को लगभग दो बजे हम कलकत्ता में ननिहाल – भवानीपुर पहुँचे। वहाँ हमारे कुछ

lPp dE;fuLV d fy, mTToy felky d :i e dke djxkA mud bl ;kxnku (contribution) dk rgfny l ijh Lohdfr nr g, gekjh dUnh; deVh mud ifr vlhe drKrk o 'kr&'kr yky lyke i'k dj jgh gA

7 uoEcj] 2016

Økfrdkjh vfHkoknu d lkFk
dUnh; deVh
Hkkdik ¼ekvkoknh½

मेरे इस लेखन में जिन्होंने उत्साह दिया है वे हैं, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में पढ़ रहे कुछ छात्र–छात्राएं और कुछ बुद्धिजीवी जो मेरे बहुत करीबी हैं। उनके आग्रह और उनकी प्रेरणा का आभार मानना ही होगा।

अन्त में कहूंगा, मेरी देखभाल के लिए गाँव का जो लड़का (कामरेड) है, उसकी सेवा और ममता ने मुझ में लिखने की ताकत जुटायी है। महज 18 वर्ष के कामरेड (विप्लव कुमार विमल) के उँचे विचार, क्रान्तिकारी मानसिकता, ईमानदारी तथा शुद्ध हृदय ने मुझे ममता के बंधन से बाँध लिया है।

l|'khy jk;
20 vDVcj 2013]
ubl fnYyh

fo"k; lwph

Hkfedk ds cnys **i`"B la**

1. बचपन–छात्र जीवन ...13
2. नौकरी तथा राजनीति के प्राथमिक पाठ 19
3. सी.पी.आई. में सैद्धान्तिक बहस तथा फूट 31
4. क्रान्तिकारी राजनीति का उद्भव, सी.पी.आई.(एम) के भीतर सैद्धान्तिक राजनीतिक बहस शुरू 36
5. कृषि क्रान्ति की राजनीति के सम्पर्क में आना और सीपीआई(एम) से सैद्धान्तिक मतभेद – 'चिन्ता' दस्तावेजों की भूमिका 41
6. चीन की सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का प्रभाव तथा 'दक्षिण देश' पत्रिका की भूमिका 46
7. महान नक्सलबाड़ी किसान आन्दोलन तथा भारत में कम्युनिस्ट आन्दोलन में नयी क्रान्तिकारी दिशा का आगाज 49
8. ''दक्षिण देश'' संगठन के स्वतन्त्र प्रयास से पश्चिम बंगाल में काम की प्रारंभिक पहल 53
9. को–आर्डिनेशन कमेटी का गठन और हमारी बहस 56
10. सोनारपुर – भांगर का किसान संघर्ष 64
11. पेशेवर क्रान्तिकारी के तौर पर पहली बार देहात में जाने का अनुभव 65
12. सीपीआई (एमएल) पार्टी के गठन की घोषणा 74
13. माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र के गठित होने की ऐतिहासिक वास्तविकता 76
14. माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र के संस्थापकों में प्रमुख नेता कामरेड चन्द्रशेखर दास (दादू) की बर्बर हत्या 79
15. दूसरे राज्यों में एमसीसी संगठन का विस्तार 81
16. सीपीआई (एमएल) पार्टी में बिखराव की प्रक्रिया शुरू और नक्सलबाड़ी आन्दोलन के संस्थापक चारु मजुमदार की मौत 89
17. पश्चिम बंगाल में दूसरे जिले का काम 91

18. कॉंकसा – आऊसग्राम का संघर्ष 95
19. चुनाव बहिष्कार के बारे में हमारा नजरिया 99
20. एमसीसी के नेतृत्व में बिहार का संग्राम तथा संगठन के विस्तार के साथ नयी–नयी जीत हासिल करना 102
21. पार्टी–कमेटी व्यवस्था–जनसंगठन का समन्वय साधना 107
22. पार्टी–कमेटी व्यवस्था, जनवादी केन्द्रीयता के नियम मानकर पार्टी के काम को संचालित करना ही है 111
23. आलोचना व आत्म–आलोचना – लक्ष्य और पद्धति 115
24. पार्टी में गैर–सर्वहारा सोच–विचाार के बारे में 117
25. सीपीआई (एमएल) पार्टी के विभिन्न गुटों के साथ हमारा एकता–चर्चा का प्रयास 123
26. सीपीआई (एमएल)[पी डब्ल्यू] के साथ एकता – बातचीत की प्रक्रिया शुरू 130
27. एमसीसी के संस्थापक कामरेड अमूल्य सेन (मास्टर मोशाई) और कामरेड कन्हाई चटर्जी (KC) की असमय मृत्यु 132
28. मेरी चीन यात्रा 138
29. सीपीआई (एमएल) (पी डब्ल्यू) से धारावाहिक बातचीत शुरू और मिलेजुले कामकाज का दौर 145
30. एमसीसी का पहला तथा दूसरा सम्मेलन 148
31. नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएन) के साथ हमारा सम्पर्क, संयुक्त काम तथा RIM संगठन से जुड़ाव 149
32. सीपीआई (एमएल) (पी डब्ल्यू) के नये नेतृत्व के साथ बातचीत और उनसे मतभेद का उभरना 153
33. बिहार के पी डब्ल्यू और एमसीसी संगठन के बीच विरोध का सूत्रपात, कड़वाहट तथा संघर्ष का वातावरण 155
34. एमसीसी में एकता विरोधी ताकत का उभरना तथा उसका नतीजा 159
35. सीपीआई (एमएल) (पी डब्ल्यू) से अंतिम बातचीत तथा ऐतिहासिक आत्मआलोचना 163
36. अंत में एकताबद्ध महान सीपीआई (माओवादी) पार्टी का गठन। ...166

Hkfedk d cny

आत्मकथा लिखनी होगी ऐसा कभी भी नहीं सोचा था। कई शुभाकांक्षी कामरेडों के खास अनुरोध पर इस काम में हाथ लगाया। मेरी उम्र अभी 76 साल 10 महीना है। जानलेवा बीमारी से आक्रांत होकर कमजोर शरीर में तरह–तरह की यातनाएं भुगत रहा हूँ, फिर भी मौत से पहले आत्मकथा के बदले कुछ यादें बांटने की इच्छा हुई। मेरा राजनीतिक जीवन हर तरफ से एमसीसी के जन्मकाल से ही जुड़ा हुआ है। पर यह एमसीसी का कोई इतिहास नहीं है। मेरे अकेले के लिए इतिहास लिखना संभव नहीं है। इसके लिए शोध और टीम वर्क की जरूरत है, जो अभी बिलकुल ही संभव नहीं है। राजनीतिक जीवन की दिशा में एमसीसी में जो तमाम महत्वपूर्ण मोड़ और घुमावों का सामना किया है, इतिहास की दृष्टि से मैंने केवल उसी का स्मृतिचारण किया है। बचपन से मेरा जीवन जिस तरह आगे बढ़ा, उसे सामने रखने की कोशिश की है, इसे आत्मकथा कहने के बजाय स्मृतिकथा कहना ज्यादा मुनासिब होगा।

आत्मकथा लिखने का अर्थ आत्म–उन्मोचन भी होता है। व्यक्तिगत ईमानदारी यहाँ एकमात्र पैमाना है। उसका निष्ठा के साथ पालन किया है। लेखन में महान मार्क्स और लेनिन की कुछ उद्धृतियाँ हैं। उन्हें एवं ''जलार्क'' पत्रिका के विशेषांक में प्रकाशित एमसीसी के कुछ पुराने लेख जो उस समय के ''दक्षिण देश'' पत्रिका में प्रकाशित हुए थे – उससे लिया गया है। फलस्वरुप उसकी विश्वसनीयता में कोई शक नहीं है।

सन्–तारीख के मामले में जो याद है, उन्हीं का उल्लेख किया, बाकियों की याद नहीं।

बहुत दिनों से महत्वपूर्ण रचनाओं में हाथ नहीं लगाया। लिखने लगे तो महसूस हो रहा है कि वाक्य रचना में कुछ कमी रह जा रही है। उन्हें दुरुस्त करना मेरे लिए संभव नहीं है – पाठकगण क्षमा करेंगे।

14 अप्रैल 2013 से लिखना शुरू किया था। और कई महीनों के लगातार प्रयास के बाद 10 अक्टूबर 2013 को पूरा किया। तबीयत खराब रहने के चलते बीच–बीच में लिखना बंद रखकर लेट जाना पड़ता था।

के तौर पर पहचाना गया। जेल में बंदी रहते समय से ही वितर्क का आगाज हो गया था। अब मुक्त होने के बाद पार्टी के आंतरिक सैद्धांतिक–राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उन्हीं लोगों ने पार्टी में फूट लाने के लिए पार्टी के संविधान को अस्वीकार करते हुए खुलेआम नेतृत्व के एक हिस्से के खिलाफ हमला शुरू किया। सीपीआई के उस समय के महासचिव एस. ए. डांगे को ही वे हमले का प्रधान निशाना के तौर पर सामने रखकर उसे कांग्रेस के दलाल और अंग्रेजों के कारागार में बंदी के तौर पर रहते समय अंग्रेज अधिकारी को लिखी उनकी चिट्ठी को केंद्र में रखकर, ब्रिटिश सरकार के आगे आत्मसमर्पणकारी के तौर पर दिखलाकर उसके डरपोक और कापुरुष चरित्र को उजागर करने की कोशिश की गयी। डांगे और उनके अनुगामी के तौर पर पार्टी की केंद्रीय समिति के नेता/सदस्यों के तौर पर, भवानी सेन, रनेन सेन, अजय घोष, राजेश्वर राव, भूपेश गुप्त सहित और कई नेता आदि रूसपंथी के तौर पर चित्रित किये गये। ये सब नेता भारतीय क्रांति के सवाल पर ''शांतिपूर्ण संसदीय राह'' की बातों के जोरदार हिमायती थे। रूसपंथी ये नेता भारतीय पूंजीपतियों को साम्राज्यवाद विरोधी बताते रहे और इनकी राजनीतिक प्रतिनिधि कांग्रेस को ''राष्ट्रवादी'' ताकत के तौर पर चिह्नित करते हुए उनके साथ जरूरत पड़ने पर राजनीतिक एकता कायम करने के भी पक्ष में थे। सी.पी.आई. के सदस्यों का एक हिस्सा अखिल भारतीय स्तर पर नेतृत्व के इस राय का समर्थन करता रहा।

इसके विपरीत पार्टी का दूसरा धड़ा जिन्हें तथाकथित चीनपंथी के तौर पर चिह्नित किया गया था, वे तमाम नेता– मुजफ्फर अहमद, रणदिवे, नंबूदरीपाद, बसवपुन्नैया, पी. सुंदरैया, राम मूर्ति, गोपालन, हरेकृष्ण कोणार, प्रमोद दासगुप्त आदि ने रूसपंथी नेताओं की तीव्र भर्त्सना करते हुए संसदीय राजनीति में कांग्रेस को मुख्य दुश्मन के तौर पर पहचान की। ज्योति बसु कुछ दिनों तक ढुलमुल बने रहे और बाद में उन्होंने चीनपंथियों का समर्थन किया। यहां उल्लेखनीय है कि दोनों ही भारत को एक सार्वभौम–स्वाधीन देश मानते रहे और भारतीय संविधान को मानकर संसदीय चुनावों में हिस्सा लेने के पक्ष में काम करते जा रहे थे। सीपीआई के अंदर यह बहस क्रमशः तीव्र होती गयी। अब दोनों धड़ों ने अंत तक एक दूसरे के खिलाफ कुत्सा प्रचार और कीचड़

के पास ही आशुतोष कालेज के संध्याकालीन विभाग में मैंने 'आर्ट्स' विषय में दाखिला ले लिया।

संध्या विभाग में भर्ती होने के पीछे मेरा इरादा दिन के समय दूसरे किसी हुनर में प्रशिक्षण लेने का था। क्योंकि आठवीं कक्षा में पढ़ता था, तभी बिन्नागुड़ी में हृदयरोग से ग्रस्त होकर मेरे पिता का देहांत हो गया था। मां सहित उस समय परिवार में नौ सदस्य थे। पूरा परिवार मानो गहरे पानी में गिर पड़ा था। मंझले भैया उसी समय नौकरी की तलाश में कलकत्ता आये। बड़े चाचा उस समय चीफ इंजीनियर की हैसियत से सरकारी मुख्यालय राइटर्स बिल्डिंग में कार्यरत थे। चाचा ने कोशिश कर मंझले भैया को अपने ही विभाग में एक नौकरी जुटा दी। सरकारी नौकरी पा कर मंझले भैया दक्षिण कलकत्ते के बेहाला में एक किराये का मकान ले कर बिन्नागुड़ी से सभी को वहां ले आये। मैं उस समय भवानीपुर स्थित मामा के घर पर ही रह गया। मगर परिवार में आर्थिक क्षमता नहीं थी। खींचातानी के संसार में मामा कुछ मदद कर दिया करते थे। लिहाजा ऐसी स्थिति में मेरे लिए नौकरी करना खास अहम बात हो गयी थी। लेकिन सिर्फ आर्टस् में ग्रैजुएट होकर कोई नौकरी आसानी से नहीं मिल सकती थी। मेरे मामा उस समय 'उषा' कंपनी में अच्छे पद पर कार्यरत थे। मेरा भी उस समय उषा कंपनी में ही नौकरी पाने का जोरदार आग्रह था। क्योंकि वहां अच्छी तनख्वाह तो मिलती ही थी, 'पूजा' के समय छह महीने के वेतन के बराबर बोनस भी मिलता था। मंझले मामा ने सुझया कि कोई तकनीकी प्रशिक्षण कर लेने पर किसी तरह कोई नौकरी मिल सकती थी। इसी उद्देश्य से बालीगंज के एक पॉलीटेक्निक में मैंने दाखिला ले लिया। डेढ़ साल का कोर्स था। दिन में पॉलिटेक्निक इंस्टिट्यूट में पढ़ कर रात में कॉलेज जाने लगा।

डेढ़ साल के एक छोटे से इंजीनियरिंग कोर्स के अंतर्गत हमें ड्राफ्ट्समैनशिप के अतिरिक्त हाथ की कारीगरी के तरह–तरह की तकनीकी ट्रेनिंग लेनी पड़ती थी। सूक्ष्म वस्तुओं को नापने के लिए सेट्स्क्वेयर और माइक्रोमीटर, वर्नीयर कैलिपर्स इत्यादि के नाम सिखाये जाते थे। हर तरह के धातुओं के स्वभाव और गुणों के बारे में सैद्धांतिक (थ्योरिटिकल) और प्रैक्टिकल कक्षाएं होती। जैसे नर्म लोहे को माइल्ड स्टील से स्टील (फौलाद) किस तरह

बनाया जाता है। स्टील से हाई स्पीड स्टील किस तरह तैयार होता है। लोहा एनेलिंग करने का तरीका वगैरह। इसके अलावा लेथ मशीन से लोहा काटना, पेंच काटना, लोहे में छेद करना आदि की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती। साथ ही हर दिन डेढ़ घंटे की सैद्धांतिक शिक्षा दी जाती। इस कक्षा में मशीनों की डिजाइन का नक्शा खींचना, उसके नाप–तौल और आयामों के विवरण किस तरह तय किये जाते हैं आदि की शिक्षा दी जाती थी। कभी–कभी कॉलेज के प्रिंसिपल भी ऐसी क्लासों में पढ़ाया करते। यह कॉलेज चूंकि सरकारी था, पूर्वी बंगाल से आये हम जैसे छात्रों को विशेष सुविधा के बतौर ''डिस्प्लेस्ड कार्ड'' और महीने में तीस रुपये का वजीफा भी दिया जाता।

डेढ़ साल के अंत में जब परीक्षा के नतीजे आये तो पता चला कि मैं प्रथम स्थान पर उत्तीर्ण हुआ था। सिर्फ यही नहीं, पश्चिम बंगाल के तमाम इन्स्टिट्यूटों में भी मेरा स्थान सबसे अव्वल था। हमारी परीक्षा उषा कंपनी के जनरल मैनेजर के. पी. गांगुली ने स्वयं ली थी। इस नतीजे के आने के पंद्रह दिनों बाद ही भोपाल के एक तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र से प्रशिक्षक पद पर नियुक्ति का निमंत्रण मिला। मेरठ और कानपुर से भी इसी तरह के पत्र आये। ये अच्छी पेशकश थी। मगर घरवालों ने उतनी दूर नहीं जाने दिया। मेरी भी प्रबल इच्छा उषा कंपनी में काम करने की ही थी। मामा ने कहा कि जब तुम्हारे नतीजे इतने अच्छे रहे, और जब उषा कंपनी के जनरल मैनेजर ने स्वयं तुम्हारी परीक्षा ली है, तब अपने प्रमाणपत्रों के साथ तुम स्वयं जा कर मैनेजर से मिलो।

इसके चलते मैं एक दिन साहस कर हाल ही में बन कर तैयार हुए उषा फैन (पंखा) के कारखाने में जा पहुंचा, जो टॉलीगंज के बांसद्रोणी में थी, और कंपनी के जनरल मैनेजर के. पी. गांगुली से मुलाकात की।

उन्होंने कहा ''हमारा यह कारखाना सिर्फ दो साल पहले बना है। अभी तक सारे विभाग शुरू नहीं हुए। कुछ प्रशिक्षार्थी लेने की योजना बनी है। तुम्हें प्रशिक्षार्थी के तौर पर जुड़ना पड़ेगा। छः महीने बाद नौकरी स्थायी होगी। फिलहाल साठ रुपये महावारी वजीफा दिया जायेगा। कारखाने में मजदूरों के साथ काम करना होगा। तुम पढ़े लिखे, भद्र घराने के लड़के हो, क्या यह काम कर सकोगे? मेरी उस समय मजदूरों के बारे में कोई नीची राय नहीं थी। अतः मैं तुरंत राजी हो गया। इस तरह जीवन का एक महत्वपूर्ण दौर शुरू हुआ, जब

कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की भूमिका और उनके अनुभवों का एक बैठक में मूल्यांकन किया गया। जहां हमलोगों में से कई कार्यकर्ताओं के उल्लेखनीय कार्यों और मार्क्सवादी आदर्शों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की रोशनी में सीपीआई पार्टी में सदस्यता प्रदान करने की सिफारिश यूनियन की पार्टी फ्रैक्शन कमेटी ने की। हालांकि पार्टी में तब तरह–तरह के गोलमाल और गड़बड़ियां तथा टूटन की प्रक्रिया चल रही थी, फिर भी संग्राम के मैदान में संघर्ष के दौरान जिन्होंने त्याग और साहस का प्रदर्शन किया और आम मजदूरों की आस्था अर्जित करने में कामयाबी पायी थी, ऐसे लोगों को कलकत्ता कम्युनिस्ट पार्टी की जिला इकाई ने पार्टी सदस्यता देकर सम्मानित किया, जिनमें मैं एक था।

lhihvkbl e: l)kfrd cgl rFkk QV

1963 के आखिरी हिस्से में राजनीतिक बंदी धीरे–धीरे जेल से छूट कर आने लगे। यह वह समय है, जब सीपीआई में अखिल भारतीय स्तर पर महान बहस और गोलमाल की शुरूआत हुई। जेल में बंदी रहे कामरेडों ने छूटने के बाद सीधे पार्टी के ऊंचे स्तर के नेतृत्व को विश्वासघाती, कांग्रेस के दलाल और दक्षिणपंथी संशोधनवादी के तौर पर चिह्नित कर उन पर खुला हमला शुरू कर दिया। असल में वितर्क शुरू हुआ था, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के सवाल पर। 1956 में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस (अधिवेशन) में शांतिपूर्ण मार्ग से समाजवाद में संक्रमण की दिशा के सवाल पर रूसी–चीनी कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच सैद्धांतिक और राजनीतिक मतभेद के समय से यह बहस छिड़ी थी। 1962 में चीन–भारत सीमा–युद्ध को मद्देनजर रख यह बहस और भी तीखा बन गया। फलतः अखिल भारतीय स्तर पर एक अलिखित विभाजन रेखा खिंचती गयी। जिन्होंने सीमा युद्ध के सवाल पर चीन को हमलावर मानने से इन्कार कर दिया, उन्हें रूसपंथी पार्टी धड़े के लोगों ने संकीर्णतावादी, चीन के दलाल और वाम दुस्साहसवादी के तौर पर चित्रित और प्रचारित किया। दूसरी ओर पार्टी के तथाकथित रूसपंथी धड़े के लोग, जो सीमा युद्ध के संदर्भ में कांग्रेस का समर्थन करते दिखे, उन्हें कांग्रेस के दलाल

निकलकर हमने देखा कि पचास के करीब पुलिस मशीन शॉप में प्रवेश कर चुके हैं और जादवपुर पुलिस थाने के ओ.सी. मोहंती के नेतृत्व में वे मजदूरों को वर्कशॉप छोड़कर निकल जाने को कह रहे हैं। मजदूर भी कारखाने के भीतर पुलिस को देख कर बहुत उत्तेजित हो उठे थे। वे लोहे की छड़ें और अन्य हथियार उठा कर पुलिस को कारखाने से निकलने को कह रहे थे। हालात आमने–सामने संघर्ष की संभावना की ओर अत्यंत तेजी से बढ़ते नजर आ रहे थे। हम तुरंत जनरल मैनेजर के कमरे में लौटे और उससे पुलिस बुलाने के औचित्य की कैफियत मांगी। मैनेजर ने रक्षात्मक लहजे में कहा कि मैंने पुलिस को नहीं बुलाया है। देखूँ...... सिक्यूरिटी अफसर को बुलाकर पता करता हूँ, शायद उसने बुलाया हो। थोड़ी ही देर में सिक्यूरिटी अफसर, जो पहले जादवपुर थाने में मंझोला बाबू (सब इंस्पेक्टर) थे, अपनी वर्दी पहने मशीन रूम में आ पहुंचे। उन्हें देखते ही विक्षुब्ध मजदूरों के सब्र का बांध टूटा और उसे तुरंत घेर कर उस पर लात–घूंसों की बौछार कर दी। हमने दुमंजिले से ही एक अजीब दृश्य देखा। नदी की प्रचंड लहर में जैसे कोई आदमी डूब जाता हैं, सिक्युरिटी अफसर भी मजदूरों के घेरे में उसी तरह डूब गये। हम और उसे देख नहीं पा रहे थे। परिस्थिति हाथ से बाहर निकलती देख हम तेजी से दुमंजिले से उतर आये और उस अधिकारी की जान बचायी। मैनेजर से कहा, पुलिस को अभी इसी समय कारखाना छोड़ कर चले जाने को कहिए। इसी के अनुसार मैनेजर का निर्देश पाकर पुलिस वाले कारखाने से निकल गये। मजदूर भी तब धीरे–धीरे शांत हो गये। इस घटना के बीच हमने देखा कि मजदूरों का आत्मसम्मान बोध और लंबी लड़ाई से मिले अनुभवों से अब वे अपनी वाजिब मांगों के लिए निर्भय और एकताबद्ध होने की हिम्मत दिखा रहे हैं और प्रतिरोध में उतरने को तैयार हो गये हैं। हमने यह भी देखा कि जो तमाम मजदूर चुपचाप और शांत ही रहा करते, वे भी अब लोहे की छड़ें उठाये पुलिस को खदेड़ने के लिए दौड़े जा रहे थे।

इस घटना के बाद से मालिक पक्ष के लोग (सुपरवाइजर) डरे सहमे रहने लगे और अब यूनियन के साथ मिल बैठकर ही समस्याओं का हल करने की ओर प्रवृत्त हुए। यह मजदूरों की एक जीत ही थी।

हड़ताल खत्म होने के बाद यूनियन के दफ्तर में हड़ताल की

मैं उषा कंपनी के कारखाने में बतौर प्रशिक्षार्थी काम करने लगा। साथ ही रात को कॉलेज की पढ़ाई भी जारी रखी।

मैं एक तरफ नौकरी कर रहा था और दूसरी तरफ कालेज की पढ़ाई। इस छात्र जीवन में मेरा झुकाव संगीत की ओर भी हुआ। खास कर शास्त्रीय संगीत (क्लासिकीय) में। अंत में उच्चांग संगीत के प्रति ऐसा आकर्षण, ऐसी गहरी दिलचस्पी जागी कि मैं उस्ताद सुमेन्दु गोस्वामी के पास संगीत सीखने की शागिर्दी करने लगा। लगभग एक वर्ष तक सीखता रहा। पर बाद के दिनों में नौकरी वाले जीवन के विभिन्न खींचतान और दबावों के चलते इसे जारी न रख सका।

ukdjh rFkk ekDlZoknh jktuhfr ds izkFkfed ikB

प्रशिक्षार्थी के तौर पर करीब एक साल गुजर जाने के बाद भी हम लोगों को स्थायी करने की कोई कोशिश, कोई कदम उठाये जाने का नामोनिशान न था। इस समय तक कारखाने के जनरल मैनेजर के. पी. गांगुली का तबादला हो गया था। नये मैनेजर डी./वी.के. पांडे हमें स्थायी करने के सवाल पर टालमटोल कर रहे थे। हम कुल 28 लोग प्रशिक्षु थे, जो सभी मध्यमवर्गीय परिवारों से आये थे। इस स्थिति ने हमें खुद की पहल पर कारखाने के प्रबंधकों के सामने अपनी मांगें रखने को प्रेरित किया। पर उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई देख कर आखिर हमने फैसला किया कि कारखाने के मजदूर यूनियन के सामने यह मुद्दा रखा जाये। वे जरूर हमारी मदद करेंगे।

जाय इंजीनियरिंग वर्कर्स यूनियन, कारखाने के मजदूरों की यह यूनियन उस समय काफी ताकतवर थी। टॉलीगंज के प्रिंस अनवरशाह रोड स्थित उषा सिलाई मशीन कारखाने में उन दिनों करीब आठ हजार मजदूर काम करते थे और बांसद्रोणी के (पंखा) कारखाने में (करीब) साढ़े चार हजार मजदूर काम करते थे। उन दो कारखानों में 12500 मजदूरों का सम्मिलित संगठन था यह यूनियन। इसके अध्यक्ष थे अविभाजित सी.पी.आई. पार्टी के सांसद श्री इंद्रजीत गुप्त।

यूनियन के नेताओं ने सहानुभूति के साथ हमारी बातें सुनी। सचिव ने

आश्वासन दिया कि वे स्वयं कारखाने के अधिकारियों से इस मामले में बातचीत करेंगे। यूनियन नेताओं का बर्ताव हमें अच्छा लगा। उन्होंने हमें बीच–बीच में यूनियन के दफ्तर आते रहने का आग्रह किया। हम में से कुछ लोगों ने यूनियन के दफ्तर में आना–जाना शुरू किया। यूनियन के सभी नेतागण सीपीआई पार्टी के सदस्य या समर्थक थे। कांग्रेस या अन्य किसी पार्टी की कोई यूनियन वहां नहीं थी। फलस्वरूप यूनियन के दफ्तर में मजदूरों की तरह–तरह की समस्याओं पर चर्चा के साथ–साथ मजदूर पूंजीवादी गुलामी से कैसे मुक्ति/निजात पा सकते हैं तथा मार्क्सवाद, समाजवाद आदि विषयों पर बात होती थी। इस चर्चा के हम श्रोता थे और कुछ सवाल भी किया करते। उस समय रूस और चीन की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच मतभेद के कारण क्या थे – यह भी चर्चा का विषय होता था।

1953 के पांच मार्च को कामरेड स्तालिन की मृत्यु के बाद रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्वकारी स्थान पर खुश्चेव का आविर्भाव हुआ। उन्होंने पार्टी की 20 वीं कांग्रेस के दौरान कामरेड स्तालिन की निंदा और घोर आलोचना शुरू की। लेनिन और स्तालिन की शिक्षाओं से 180^0 का पीछेमुड़ करते हुए उन्होंने घोषणा की कि 'मजूदर वर्ग को राजसत्ता हासिल करने के लिए अब और मुल्क–दर–मुल्क सशस्त्र क्रांति करने की जरूरत नहीं है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद विश्व राजनीति की पटल पर आमूल परिवर्तन हो चुके थे। दूसरे विश्व युद्ध के बाद विश्व की तमाम साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियाशील शक्तियां काफी कमजोर पड़ गयी थी। साथ ही उपनिवेशी देशों में मजदूर वर्ग और अन्य मेहनती जनता को उपनिवेशी शोषण से मुक्ति मिल चुकी थी। विश्व की ऐसी परिस्थितियों में सर्वहारा वर्ग को राजसत्ता पर कब्जा करने के लिए सशस्त्र क्रांति करने की अब और जरूरत नहीं है। मजदूरवर्ग आंदोलन शांतिपूर्ण तरीके से संसदीय व्यवस्था में बहुमत हासिल कर सत्ता पर कब्जा कर सकता है।'

दूसरी ओर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने कामरेड माओ–त्से तुंग के नेतृत्व में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता खुश्चेव की इस स्थापना को संशोधनवादी करार दिया और घोषणा की, कि विश्व की परिस्थितियों में परिवर्तन के बावजूद मुल्क दर मुल्क साम्राज्यवाद, पूंजीवाद एवं प्रतिक्रियाशील सामंतवादी शोषण–शासन अब भी व्यापक स्तर पर बरकरार है। लिहाजा

को नौकरी पर नहीं बहाल किया। जो लोग लौटे भी, उनमें से अधिकांश को कच्चे माल के अभाव में नियमित काम न मिलने की स्थिति बनी रही। मालिक पक्ष ने मजदूरों को सताने के लिए तरह–तरह का जुल्म और सीधे हमला बोलने की नीति अपनायी। बहुत से मजदूर काम पर हाजिर होने पर भी उन्हें दिन भर (आठ घंटे) का काम देने के स्थान पर चार ही घंटों का काम देकर बाकी चार घंटों का ले–ऑफ देकर उसी अनुपात में उनकी वेतन में कटौती भी करने का दांव मालिक वर्ग ने अख्तियार किया। बहुत से मजदूर फैक्टरी गेट पर आते, पर अपना नाम ले–ऑफ सूची में देख बिना रोजगार पाये ही घर लौट जाने को मजबूर होते। उस दिन उनकी कोई आमदनी नहीं हो पाती थी। मामूली बहाने से ही उन्हें चार्जशीट दे दी जाती, मजदूरी काट ली जाती। मजदूरों के कैंटीन में हड़ताल से पूर्व मजदूरों के खाने में कोई काट–छांट नहीं होती थी। मजदूर अपनी जरूरत भर भात पा जाते। हर दिन मछली, मांस या अंडे भी दिये जाते। पर हड़ताल के बाद भात केवल 200 ग्राम तक सीमित कर दिया गया। अब इसके चलते अधिकतर मजदूर आधे पेट भोजन पर गुजरने को मजबूर हो गये। सप्ताह में तीन दिन तक अब सभी को निरामिष (सागभात का) भोजन दिया जाता था, उन्हें दही दिया जाता। इसे लेकर मजदूरों में प्रचंड क्षोभ था। हम ने इस सवाल पर अधिकारियों से बातचीत करनी चाही तो वे तरह–तरह के बहाने बनाते हुए कन्नी काट गये। ऐसी हालत में बीच–बीच में एक घंटे का टूल डाउन स्ट्राइक किया जाता। स्ट्राइक के दौरान कोई अधिकारी मजदूरों को धमकाकर अगर काम करने को कहता तो मजदूर मालिकों के खिलाफ जोरदार नारे लगाते हुए इसका प्रतिरोध करते। विचित्र आवाजें निकालते हुए उनका अपमान करते। अफसर अपना सम्मान बचाये रखने के लिए चुपचाप लौट जाते। वहां से निकल जाने में ही अपना भला मानते।

जब यह सब चल रहा था तभी एकदिन एक घटना घटी, वो यह है कि टूल डाउन स्ट्राइक जब जारी था, जनरल मैनेजर ने मजदूर यूनियन के प्रतिनिधियों को बुला भेजा। उस समय हमलोग वर्कर्स कमेटी (मालिक वर्ग–मजदूरों की सम्मिलित कमेटी) के सदस्यों के नाते कारखाने के जनरल मैनेजर के कमरे में गये। बातचीत शुरू होने के बाद पता चला कि कारखाने में मजदूर खूब शोर मचा रहे हैं। दुमंजिले पर स्थित मैनेजर के कमरे से

उनका मालिक पक्ष ने दलालों की तरह इस्तेमाल किया। हालांकि पिटाई के डर से ये दलाल मजदूर ज्यादा दूर तक आगे नहीं बढ़ पाये। लड़ाकू मजदूरों ने भी दलालों को चिह्नित कर उनमें से कईयों को समुचित नसीहत दी।

इस वर्ग संघर्ष से और भी समझ पाया कि मालिक वर्ग और सरकार के बीच किस तरह का गुप्त समझौता रहता है। वर्ग संघर्ष में सरकार किस तरह मालिकों की तरफ होकर कैसे मजदूरों पर हमले के लिए पुलिस उतार कर वर्ग संघर्ष को तोड़ने की हरचंद कोशिश करता है। समाचारपत्रों की भूमिका भी समझने लगा, ये भी किस तरह मालिकों का पक्ष लेकर मजदूरों के जायज संग्राम को कुत्सित ढंग से चित्रित करते हुए मालिकों के पक्ष में झूठ और फरेब का प्रचार करते हैं। देखा कि वर्ग संघर्ष के मैदान में मजदूरों के जायज संग्राम के विरोध में एक होकर तमाम मालिक वर्ग एकजुट होकर सरकार की मदद से उसे कुचलने, बर्बाद करने की कोशिश करते हैं।

यह भी नजर आया कि सामाजिक स्तर पर वर्ग संघर्ष के खिलाफ, राजनीतिक नेता, मंत्री, बड़े अधिकारी पुलिस के आला अफसर, समाचार पत्रों के मालिक–संपादक, इस तथाकथित ऊंचे समाज के लोग नाइट क्लबों में इकट्ठे होकर मजदूरों के इस वर्ग संघर्ष को खत्म करने के लिए काम करते हैं।

इस संग्राम ने उषा फैक्टरी के मजदूरों की राजनीतिक समझ और ज्ञान व चेतना को काफी बढ़ा दिया। वे समझ गये कि सरकार की भूमिका क्या है तथा समझौतापरस्त नेताओं, पुलिस तथा दलाल मजदूरों की भूमिका क्या है। यह अवश्य ही एक बड़ी शिक्षा है, जिसे केवल संघर्ष के मैदान में उतर कर ही समझा जा सकता है।

मगर छः माह के बाद कारखाने के खुल जाने के पश्चात् भी समस्याएं नहीं मिटी। कारखाने में कुल नौ विभाग थे। इनमें से सबसे बड़ा मशीन शॉप था। मैं भी मशीन शॉप का ही कामगार था। पर हमारे काम में कालिख लगने लायक कुछ नहीं था। हम बैठकर फैन के विभिन्न हिस्सों की ठीक–ठाक होने की जांच दिन भर करते थे।

मालिक पक्ष ने बताया कि छः महीने बाद भी सभी विभागों का एकबारगी शुरू करना संभव नहीं। धीरे–धीरे इन्हें एक–एक कर चालू किया जायेगा। ऐसा कहकर उन्होंने करीब एक/डेढ़ महीने तक बहुत से मजदूरों

मजदूर वर्ग को अब भी सत्ता हासिल करने के लिए सशस्त्र संघर्ष के जरिये ही सर्वहारा की तानाशाही कायम करनी होगी। दूसरे विश्व युद्ध के बाद भी परिस्थिति में कोई आमूल परिवर्तन नहीं आया था। फलस्वरूप ''सशस्त्र क्रांति के माध्यम से मजदूर वर्ग द्वारा राजसत्ता पर कब्जा करने'' के लेनिनवादी क्रांतिकारी सिद्धांत और शिक्षा से किसी भी तरह दूर हटने की कोई संभावना सोची भी नहीं जा सकती।

यूनियन के दफ्तर में उन तमाम विषयों पर हो रही चर्चाओं में कभी–कभी यूनियन अध्यक्ष इंद्रजीत गुप्त भी हिस्सा लिया करते थे। हम लोगों ने गौर किया कि इन बहस–मुबाहिसा में इंद्रजीत गुप्त रूसी पार्टी की शांतिपूर्ण परिवर्तन वाली लाइन का ही अपने वक्तव्यों में समर्थन करते आ रहे थे। जबकि दूसरी ओर यूनियन के दो सचिव अपने मंतव्यों में चीन की पार्टी की लाइन का जोरदार समर्थन कर रहे थे।

स्कूल में पढ़ते समय ही से कम्युनिस्टों के बारे में मुझ में श्रद्धा का मनोभाव बना था। खासकर कम्युनिस्ट लोग गरीबों के हमदर्द होते हैं, वे ईमानदार, शिक्षित एवं उच्च रुचिवाले होते हैं। वे लोग बहुत ही सादा जीवन जीते हैं और उनका व्यवहार निहायत ही शरीफाना या भद्र हुआ करता है। मन ही मन में कम्युनिस्टों की कद्र करता था, पर खुद भी कभी कम्युनिस्ट बनूंगा, ऐसा नहीं सोचा था।

यूनियन के दफ्तर में कम्युनिस्टों के चरित्र, समाज में बदलाव के लिए उनके संग्राम और क्रांति के बारे में उनकी बातों से मैं बहुत ही ज्यादा आकर्षित हो उठा। बीच–बीच में अध्यक्ष इंद्रजीत गुप्त मुझसे अलग से बातचीत भी करते, समाजवाद और कम्युनिज़्म के बारे में। हालांकि उनकी बहुत सारी बातें और राजनीतिक परिभाषा मेरी समझ में नहीं आती थीं। उन्होंने मार्क्सवाद की प्राथमिक किताबें पढ़ने को कहा और यूनियन के काम में शामिल होने की सलाह दी।

उस समय चीन के कम्युनिस्ट नेता लिऊ शाओ ची की लिखी ''अच्छा कम्युनिस्ट कैसे बनें'' नामक किताब मेरे हाथ लगी। मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ था इसे पढ़कर। दोबारा पढ़ा। मन ही मन तय किया कि मुझे भी ऐसा ही बनना था। उस समय लेकिन मेरी यह धारणा नहीं थी कि उस किताब में

आत्मशुद्धि, त्याग और निस्वार्थ होने की बातें की गयी हैं। लेकिन अच्छा कम्युनिस्ट बनने के लिए सबसे जरूरी तौर पर वर्ग संघर्ष में हिस्सा लेना होगा। यह बात उस पुस्तक में कहीं भी नहीं कही गयी थी। वर्ग संघर्ष में हिस्सा लिए बगैर ही सच्चा कम्युनिस्ट बना जा सकता है, यह व्यवहारिक और सैद्धांतिक तौर पर संशोधनवादी सिद्धांत है, जिसे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सांस्कृतिक क्रांति (GPCR) के दौरान घोर आलोचना की और इस किताब को वर्जित करने के निर्देश दिये।

मैं किताबें जुटाने लगा। गोर्की की मां, रूसी बोल्शेविक पार्टी का इतिहास, क्या करें, कम्युनिस्ट घोषणापत्र, राज्य और क्रांति, लेनिन और स्तालिन की जीवनियां सहित और भी कई किताबें पढ़ी।

भारत के इतिहास में एक नयी घटना इसी समय घटी। 1955 से भारत और चीन के बीच दोस्ताना संबंध बनता आ रहा था। 1962 के अक्टूबर माह में अचानक चीन–भारत युद्ध शुरू हुआ। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की कि चीन ने भारत के उत्तर पश्चिम में लद्दाख सीमा इलाके पर आक्रमण कर दिया है। इसे लेकर पूरे भारत में घोर चीन विरोधी जनमत नजर आया। भारतीय समाचार पत्रों में चीन के खिलाफ लगातार कुत्सा प्रचार चलता रहा। साथ ही साथ कम्युनिस्टों को देशद्रोही और चीन के दलाल के तौर पर चित्रित किया जाने लगा। कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तरों पर हमले चला कर उन्हें जलाना शुरू किया। कम्युनिस्ट नेता और कार्यकर्ताओं के घर उनके हमलों के निशाने बने। बहुत से कार्यकर्ताओं को बीच सड़क पर पीट–पीट का अधमरा छोड़ दिया गया।

इन हालात में अविभाजित सीपीआई के नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच सबसे महत्वपूर्ण बहस शुरू हुई। रूस की पार्टी ने पहले ही भारत सरकार की राय का समर्थन करते हुए चीन ही को आक्रामक घोषित कर दिया था।

अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति, क्रांति के पथ और पद्धति के बारे में रूस और चीन की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच तीव्र सैद्धांतिक बहस पहले ही से जारी थी। सीमा युद्ध को केंद्र में रखकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर आंतरिक बहस और भी तीव्र हो उठी। सीपीआई में जो लोग रूसी पार्टी का समर्थन कर रहे थे उन्होंने सीमा–विवाद के बारे में भारत सरकार का समर्थन

पहरे के बीच आधी रात को उन्होंने माल निकालने का फैसला लिया। कारखाने के चारों ओर पुलिस की पिकेटें बैठायी गयी। जिस रात माल निकालना तय हुआ, उसे रोकने के लिए हमने भी तैयारी कर ली थी। सड़क के तमाम महत्वपूर्ण मोड़ों पर उसी रात पुलिस हमला रोकने के लिए कई सौ वालंटियर वाहिनी की तैनाती की गई।

हमलोगों ने रात भर जाग कर पहरा दिया। पुलिस के साथ कुछ छिटफुट संघर्ष भी हुए पर कुल मिलाकर मालिक कारखाने से माल निकाल नहीं पाये। इस तरह की विभिन्न घटनाओं और संघर्ष के बीच ही हड़ताल जारी रही। दूसरी ओर मालिक भी परेशान थे। लगभग इस तरह छः महीना हड़ताल चलते रहने के बाद मालिक पक्ष लेबर दफ्तर की मध्यस्थता से यूनियन नेताओं से बातचीत करने को राजी हुआ। लेकिन उसी दिन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के आकस्मिक निधन के चलते बातचीत स्थगित हो गयी।

तीन दिन बाद मालिक पक्ष की बैठक में मजदूरों की अधिकतर मांगें मान ली गयी। मगर वे लोग 27 मजदूरों, जिनको नामजद करते हुए प्रबंधन ने जादवपुर थाने में एफ.आई.आर. दर्ज किया था, उन्हे बर्खास्त करने का प्रस्ताव भी रखा। इसमें मेरा नाम भी था। इसे लेकर बैठक में बहुत बहस और खींचतान के बाद उनमें से 10 लोगों को वापिस लेने को मजबूर हुए पर बांकी 17 को नौकरी पर रखने से इन्कार करने के बारे में वे अड़े रहे।

ऐसी हालत में लंबी लड़ाई में थके हुए मजदूरों की मानसिकता को देखते हुए तथा सर्वांगीण परिस्थिति के मद्देनजर यूनियन नेतृत्व को इस मुद्दे पर राजी होना पड़ा। मजदूरों ने इन छंटनीग्रस्त मजदूरों को श्रमिक वीरों का सम्मान दे कर उनका स्वागत व अभिवादन किया।

इस ऐतिहासिक हड़ताल संग्राम में प्रत्यक्षतः जुड़े रहने के चलते मेरे अनुभवों में इजाफा तो हुआ, साथ ही मेरी राजनीतिक चेतना में भी वृद्धि हुई। मैंने समझा, संग्राम में अटल बने रहने के लिए मजदूरों के साथ गहरा संबंध रखते हुए मजदूरों की एकता को आंख की पुतली की तरह बचाये रखना होगा। मालिक पक्ष ने मजदूरों की एकता को तोड़ने के लिए तरह–तरह की साजिशें रची। कुछ मजदूर जिन्होंने प्रारंभ से ही हड़ताल की खिलाफत की थी,

से मजदूरों के क्वार्टरों के पानी और बिजली की लाइनें काट दी गयी। पुलिसवालों ने यूनियन के नेताओं को गिरफ्तार करने के लिए रात को मजदूरों के क्वार्टर्स पर छापे मारना शुरू किया। कई नेताओं को गिरफ्तार करने में सफल भी हुए। हम लोगों ने भूमिगत होकर मजदूरों के साथ जीवंत संबंध बनाये रखा।

इन सब कामों के लिए 400 लोगों की एक वालंटियर वाहिनी के गठन का काम यूनियन के नेतृत्व में शुरू किया गया। मुझे इसके नेतृत्व की जिम्मेदारी सौंपी गयी। हमलोगों ने कारखाने के आसपास की जनता के बीच प्रचार शुरू किया। हम उन तमाम जगहों पर गये (नाकतला, रानीकूठी, बांसद्रोणी, गड़िया, ढाकूरिया और जादवपुर), जहां अविभाजित सीपीआई के प्रभाव में नागरिक कमेटियां थी। हमने उनके साथ मिलकर संयुक्त प्रचार कमेटियां बनायी। इन इलाकों में हमने वालंटियर वाहिनी के 25 कैंपों का गठन किया। यहां नियमित पोस्टर, लिफलेट और छोटे–छोटे दल (स्क्वाड) बना कर जुलूस निकाले जाने लगे। साथ ही दूसरे कारखानों के मजदूर यूनियन के साथ संपर्क बनाकर उन मजदूरों के साथ संयुक्त कार्यक्रम लिया जाता रहा। हड़ताली मजदूरों की आर्थिक सहायता और उनके लिए खाद्य की समस्या के मद्देनजर हमने नागरिक कमेटी की सहायता से मोहल्ले–मोहल्ले में जाकर चावल, दाल, कपड़े, पैसे इकट्ठा कर मजदूरों के बीच वितरित किया। दूसरी ओर मालिक पक्ष के असहयोग तथा पुलिस जुल्म के बारे में प्रचार चलाया। सरकारी लेबर दफ्तर पर दबाव बनाने के इरादे से डलहौजी स्क्वेयर स्थित लेबर दफ्तर का घेराव किया जाता था।

चार महीने बीत रहे थे। उन दिनों कारखाने के मालिक लाला श्री राम के बड़े बेटे चरतराम के इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्स की बैठक में हिस्सा लेने की बात थी। हमें इस बात की भी खबर मिली कि वे धर्मतल्ला के एक अभिजात होटल में टिकेंगे। जिस दिन उनके आने की बात थी, उस दिन हमने हजारों मजदूरों को साथ लेकर धर्मतल्ला के ग्रैंड होटल के सामने जोरदार प्रदर्शन किया। चरतराम होटल में आ नहीं पाये। शाम तक विरोध–प्रदर्शन जारी रहा। फिर प्रदर्शन समाप्त किया गया।

मालिक पक्ष के लिए भी समस्याएं खड़ी होने लगी। कारखाने के भीतर हजारों हजार फैन तैयार पड़े थे, जिसे वे बेच नहीं पा रहे थे। इसलिए पुलिस

किया। सरकार का पक्ष लिया। उन्होंने चीन को ही आक्रमणकारी के बतौर पेश किया। पार्टी नेतृत्व के दूसरे हिस्से ने इसकी मुखालफत करते हुए कहा कि ''चीन पर भारत सरकार ने ही हमला किया हैं।'' यद्यपि उन्होंने ऐसी स्पष्ट घोषणा तो नहीं की पर यह जरूर कहा कि समाजवादी चीन दूसरे देश पर कभी भी पहले हमला नहीं कर सकता। ऐसा करना समाजवादी देश की वैदेशिक नीति के विपरीत है। चीन पर हमला होने के बाद ही चीनी (लाल जनमुक्ति) सेना भारतीय फौजों को पीछे धकेलने पर मजबूर हुई। सीपीआई में जिन लोगों ने भारत सरकार के पक्ष में राय नहीं दी थी, उन तमाम नेता और कार्यकर्ताओं पर देशद्रोह की तोहमत लगा कर उनकी बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी हुई और उन्हें जेल में डाल दिया गया। कई हजार नेता और कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के कारण चीन समर्थक धड़े के सीपीआई कार्यकर्ता और नेता भूमिगत होने को मजबूर हुए।

हमारी यूनियन में भी इस मुद्दे पर बहस शुरू हुई। अध्यक्ष इंद्रजीत गुप्त की अगुआई में यूनियन के कुछ सदस्य पार्टी के पक्ष में खुलकर जा खड़े हुए और भारत सरकार का समर्थन किया। यूनियन के दो महासचिव (साधारण सचिव) सहित अन्य सदस्यों ने चीन को ''आक्रमणकारी'' कहने का तीव्र विरोध करते हुए, उसी के आक्रांत होने की दलील दी। नेतृत्व के इस राजनीतिक–सैद्धांतिक बहस में भले ही मैं शुरू में बहुत ही विव्हल/विभ्रांत हुआ पर कुल मिलाकर सचिवों की दिशा का समर्थन करते हुए चीन को ही आक्रमणग्रस्त मानने की दलील का मैंने समर्थन किया। यूनियन में अब एक विभाजन रेखा उभर आयी और उसका प्रभाव यूनियन के रोजमर्रे के काम–काज पर भी पड़ने लगा।

इसी समय आशुतोष कॉलेज से कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक हो जाने के बाद कुछ समय तक पढ़ाई–लिखाई बंद रही। कारखाने के अधिकारियों ने मुझे तरक्की देते हुए दफ्तर के काम में लगा दिया। मैं मजदूरों से अलग–थलग हो गया। यूनियन का काम करते हुए, खासकर मजदूरों की विभिन्न समस्याओं और मांगों को सुलझाने–मिटाने के सिलसिले में कारखाने के श्रम अधिकारियों से बहस चलाकर मजदूरों की समस्याएं सुलझाने के मामले में मैं मजदूरों के बीच काफी लोकप्रिय था। उन्हीं के साथ एक ही टेबल पर

खाना खाना, गप्पे लड़ाना, बीड़ी–सिगरेट शेयर करना आदि के जरिये उनके लिए मैं करीबी दोस्त बन गया था।

नौकरी में स्थायी होने के बाद कारखाने से मील भर की दूरी पर बांसद्रोणी इलाके में ही किराये का मकान लेकर पूरे बेहाल परिवार को साथ ले आया था। परिवार के पांच सदस्य उस समय पूरी तरह मेरी ही आमदनी पर निर्भर थे। उस समय जो तनख्वाह थी, उसमें कर्जा न लेकर भी मोटे तौर पर परिवार का गुजारा हो जाता था।

इधर दो महीने दफ्तर में काम करने के बाद मैं बेजार हो चुका था। क्योंकि यहां मजदूरों के खिलाफ मालिक–पक्ष के समर्थन में ही हिसाब–किताब दिखाया जाता था।

इस तरह के काम मेरे आदर्शों और मेरी मानसिकता के भी खिलाफ था। मजदूरों के साथ रोजमर्रे के मेल–जोल में रुकावट के अलावा यूनियन के काम में भी बाधा आने लगी थी। कारखाने में यार–दोस्त कहने के लिए मजदूर ही थे। हालांकि दफ्तर के काम में मेरी तनख्वाह भी कुछ बढ़ गयी थी, बावजूद इसके मैंने मन में तय कर लिया और घर पर सलाह–मशविरा करने के बाद दफ्तर के काम को छोड़ कर वापस मजदूर के काम में शामिल हुआ। सभी मजदूर बहुत खुश हुए।

इसी समय सोचा कि और भी पढ़ाई करनी चाहिए, प्राइवेट में इतिहास विषय लेकर एम.ए. करने की तैयारी की। काफी कुछ आगे बढ़ने के बाद भी परीक्षा देना संभव न हुआ। कारखाने में मेरी परीक्षा के कुछ समय पहले बड़े पैमाने पर असंतोष फैलने लगा। मालिक (वर्ग) पक्ष ने मजदूरों की मजदूरी घटा दी, काम का बोझ बढ़ा दिया, दूसरी तमाम सुविधाएं जो हासिल की थी, उन्हें भी घटा दिया। इन विषयों पर हर दिन पोस्टर लिखना, धरना देना शुरू हुआ। इस जुल्म के खिलाफ तरह–तरह के कार्यक्रम लिये जाते थे। हर दिन, देर रात घर लौटने लगा था, पढ़ाई–लिखाई के लिए वक्त नहीं दे पा रहा था।

मालिकों के जुल्म क्रमशः व्यापक और तीव्र होते गये। किसी तरह की बातचीत के बगैर ही मजदूरों को चार्जशीट देना, काम से बैठा देना और पैसे काटने की कार्रवाई मालिक पक्ष ने शुरू किया। ऐसे हालात देखते हुए यूनियन

के दफ्तर में चर्चाएं होने लगी और अब वृहत्तर स्तर के संघर्ष यानी हड़ताल पर जाने के सवाल पर बहस शुरू हो गयी।

यूनियन के अध्यक्ष इंद्रजीत गुप्त की लॉबी ने हड़ताल के प्रस्ताव का विरोध किया। दूसरी ओर कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्यों ने हड़ताल पर जाने के पक्ष में राय दी। हड़ताल की तैयारी शुरू हुई। शुरू–शुरू में मजदूरों के बीच हड़ताल के सवाल पर बहुत से डर और आशंकाएं सर उठा रही थी। उन के मन में शंकाएं और उहापोह की स्थिति बनी हुई थी। पर धीरे–धीरे मजदूरों से व्यापक स्तर पर चर्चा और बातचीत कर हड़ताल की कार्यसूची रखी गयी। तब धीरे–धीरे मजदूरों ने साहस दिखाया और कार्यसूची पर व्यापक बातचीत और चर्चा के बाद सभी मजदूरों को हम हड़ताल के पक्ष में ले आने में कामयाब हुए।

1963 के 17 दिसंबर से ऐतिहासिक हड़ताल की शुरूआत हुई, जो छः महीनों तक जारी रही। इस कारखाने के मालिक दिल्ली के श्रीराम समूह से थे, जो प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के करीबी थे। ऐतिहासिक इस कारण से कि केंद्र सरकार के प्रभाव से पश्चिम बंगाल के तमाम पूंजीपतियों ने एक होकर इस हड़ताल का विरोध किया और हर दिन इसके खिलाफ अखबारों में इश्तेहार छपवाते रहे। पश्चिम बंगाल सरकार ने भी हड़ताल को नाकाम करने के लिए भारत रक्षा कानून (DIR) का इस्तेमाल करते हुए इस हड़ताल को गैरकानूनी घोषित कर दिया। पुलिस ने धर–पकड़ शुरू की। इस तरह के प्रतिकूल हालात का सामना करते हुए भी मजदूरों ने पूरी हिम्मत जुटा कर हड़ताल को छह महीनों तक जारी रखा।

इसी हड़ताल को केंद्र में रखकर पहले एक महीने तक पोस्टर निकाले, गेट सभाएं की, धरना दिया, जुलूस निकाले। पर मालिक पक्ष ने इन पर कोई ध्यान नहीं दिया। सरकारी लेबर–ऑफिस द्वारा त्रिपक्षीय बैठकों का कई बार आयोजन किये जाने के बावजूद ऐसे किसी भी बैठक में मालिक पक्ष का कोई प्रतिनिधि शामिल ही नहीं हुआ। ऐसी हालत में यह स्पष्ट हो चुका था कि यह हड़ताल लंबी चलने वाली है। महीने भर बाद मजदूरों की आर्थिक हालत बिगड़ने लगी। हड़ताल के गैरकानूनी घोषित हो जाते ही कारखाने के गेट पर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया। मजदूर अब गेट पर नहीं जा पाते। ऊपर

इसी बीच 'चिंता' दस्तावेजों की राजनीतिक समझ के आधार पर दक्षिणी बंगाल के जिलों में पार्टी नेतृत्व की पेरशानियां बढ़ती गयी। नेतृत्व के खिलाफ कार्रवाई करने के मामले में हम आगे बढ़ते रहे। सीपीआई (एम) के राज्य इकाई के सचिव प्रमोद दासगुप्त ने पार्टी के साप्ताहिक मुखपत्र ''देश हितैशी'' में 'चिंता' दस्तावेज के पहलकदमियों को वाम दुस्साहसवादी तथा संकीर्णतावादी के तौर पर चिन्हित करते हुए उन पर घोर हमला चलाया। उन्होंने पार्टी सदस्यों से इन की निंदा करने और इन्हें अलग–थलग करने का आह्वान किया। साथ ही सांगठनिक कदम अथवा कार्रवाई के तौर पर कलकत्ता जिला समिति के सदस्य 'रहमान' (कामरेड कन्हाई चटर्जी का पार्टी में गोपनीय नाम) को पार्टी से निष्कासित किया। दूसरी ओर कामरेड अमूल्य सेन स्वयं ही विद्रोह कर पार्टी त्याग कर बाहर आ गये। ऐसी हालत में अब गुप्त रूप से राजनीति का प्रचार करने की जरूरत नहीं रह गयी। अब जरूरत थी 'चिंता' दस्तावेज के वक्तव्यों को सामने रखकर नेतृत्व के संशोधनवादी स्वरूप को व्यापक पार्टी सदस्यों तक पहुंचाना। इस काम के लिए खुले तौर पर मुखपत्र के प्रकाशन का फैसला लिया गया।

उस समय दक्षिण चौबीस परगना जिले के मोगराहाट में कई बुद्धिजीवी 'दक्षिण देश' नाम से एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करते थे। वे इस पत्रिका में वामपंथी दृष्टि से भारत और पश्चिम बंगाल के मजदूर और किसान आंदोलन की विभिन्न घटनाओं के बारे में लेख और रपट प्रकाशित किया करते थे। तेलंगाना आंदोलन, तेभागा आंदोलन तथा अन्य आंदोलनों का इतिहास भी छापते थे। मोगराहाट थाना इलाके में हमारे सांगठनिक काम के चलते इस पत्रिका के अंक हमारे हाथों तक पहुंच रहे थे। इस पत्रिका के संपादक थे स्थानीय कालेज के अध्यापक श्री पुलीन बिहारी सरदार। हमने इनसे संपर्क किया। पत्रिका के व्यापक प्रसार और राजनीतिक स्तर को बढ़ाने की गरज से इसके प्रकाशन की जिम्मेदारी हमें सौंपने का अनुरोध किया। उन्होंने दुबारा एक बार आकर पत्रिका के संपादक मंडल के साथ बैठक लेकर उन्हें इस प्रस्ताव से अवगत करने को कहा। इसके बाद संपादक मंडली के साथ कई बैठकें हुई। वहां सीपीआई (एम) के क्रांति विरोधी एवं अवसरवादी स्वरूप का खुलासा करने के बाद उनसे बातचीत 'चिंता' दस्तावेजों की राजनीति पर केंद्रित हुई। संपादक

उछालना भी शुरू कर दिया। ऐसी हालत में पार्टी में फूट अनिवार्य हो गया और परिणामस्वरूप तथाकथित चीनपंथी नेताओं ने 1964 के अंतिम हिस्से में दक्षिणपंथी संशोधनवादी अर्थात रूसपंथियों से अपने आप को अलग करने के लिए पार्टी कांग्रेस का आह्वान किया।

दूसरी ओर रूसपंथी नेताओं ने भी लगभग इसी समय पार्टी के बीच चीन के दलाल, संकीर्णतावादी और दुस्साहसवादी हिस्से को विच्छिन्न करने के लिए अलग कांग्रेस का आयोजन किया। फलस्वरूप अविभाजित सीपीआई वास्तविक तौर पर अक्षरशः विखंडित हो गयी।

रूसपंथियों ने पार्टी कांग्रेस में अपने हिस्से को ही सही और असली पार्टी होने का दावा किया और पार्टी के संविधान में भी बड़े पूंजीपति वर्ग को साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रवादी शक्ति के तौर पर मूल्यांकन करते हुए भारतीय राज्य को स्वतंत्र और जनवादी राज्य के तौर पर चित्रित किया।

दूसरी ओर तथाकथित चीनपंथी नेताओं ने स्वयं को क्रांतिकारी होने का दावा करते हुए सीपीआई के भीतर रह गये रूसपंथियों को संशोधनवादी और कांग्रेस के दलालों के तौर पर व्याख्यायित करते हुए उन से अपने आप को अलग दर्शाने लिए सी.पी.आई.–मार्क्सवादी नाम से नयी पार्टी का गठन होने का ऐलान किया और इसके लिए नया कार्यक्रम अपनाया। नये कार्यक्रम में उन्होंने कांग्रेस पार्टी को बुर्जुआ जमीदारों की पार्टी बताया और भारतीय राज्य के स्वभाव/चरित्र को बुर्जुआ–जमींदारों के राज्य के तौर पर चिन्हित करते हुए भारतीय क्रांति के स्तर को जन–गणतांत्रिक क्रांति के तौर पर घोषित किया।

हमें यह याद रखना होगा कि ऐतिहासिक तौर पर यह पार्टी एक समय कामरेड स्तालिन के नेतृत्वाधीन तीसरे अंतर्राष्ट्रीय के हिस्से के रूप में काम करती आयी है। फलस्वरूप पार्टी के गठन और विकास की प्रक्रिया के तौर पर अतीत में भारत की मजदूर जनता के बहुतेरे आंदोलनों को इसने नेतृत्व प्रदान किया। लिहाजा नयी पार्टी के गठन के समय इसकी इस परंपरा को अक्षुण्ण रूप से जारी रखने के लिए ही 'भारत की कम्युनिस्ट पार्टी' नाम रखना पड़ा। हालांकि उस समय की परिस्थितियों के मद्देनज़र यह पार्टी अब कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं करती। वह अधःपतित होकर असल

में संकीर्ण राष्ट्रवादी पार्टी में बदल चुकी थी। लिहाजा अब और उस पार्टी का नामकरण भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (Communist Party of India) न कर अब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (Indian Communist Party) रखना उचित होता।

सी.पी.आई. के विखंडित हो जाने के नतीजे के तौर पर अनिवार्य रूप से हमारी यूनियन के बीच भी विभाजन और मतभेद हो गया। यूनियन के अध्यक्ष इन्द्रजीत गुप्त और उनके अनुगामी लोग सीपीआई में शामिल हुए। दूसरी ओर हमारी कार्यकारिणी के दोनों महासचिवों के नेतृत्व में कार्यकारिणी का बड़ा हिस्सा सीपीआई–एम के पक्ष में रह गया। उस समय के लिहाज से हमारी राजनीतिक चेतना/समझ और परिपक्वता के अनुसार सीपीआई–एम पार्टी को ही सही पार्टी माना और माना कि यही लोग क्रांति को अंजाम देगी। 1964 में पार्टी के बंट जाने के बावजूद पार्टी की ट्रेड यूनियन – अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) में विभाजन अनिवार्य नहीं हुआ था। कई महीने बाद प. बंगाल के AITUC की राज्य इकाई का सम्मेलन शुरू हुआ, कलकत्ते के मुस्लिम इन्स्टिट्युट के सभागार में बहस इस स्तर पर जा पहुंची कि वह झगड़े में बदल गया और उनमें अधिकांश धड़े के सीपीआई–एम के समर्थक होने की वजह से इन्द्रजीत गुप्त के नेतृत्वाधीन AITUC के दूसरे सदस्यगण दिक्कत में पड़ गये। मारपीट तथा कुर्सियां उछालने की शुरूआत हो गई। मैंने भी कुर्सियां उछालने में हिस्सा लिया। उस समय इन्द्रजीत गुप्त और कई अन्य नेता पिटाई के डर से पिछवाड़े के रास्ते निकल भागे।

इस घटना के बाद फिर कभी इन्द्रजीत गुप्त यूनियन के दफ्तर में नहीं आये। इसके बाद से ही अखिल भारतीय स्तर पर मजदूर फ्रंट में भी फूट की प्रक्रिया शुरू हो गयी। अंततः सीपीआई–एम नेतृत्व ने मजदूर फ्रंट AITUC से अलग आकर अलग संगठन CITU का गठन किया।

पार्टी विभाजन के बाद नवगठित सीपीआई–एम पार्टी की हमें सदस्यता मिली। पार्टी में रूस तथा चीन पार्टियों की सैद्धांतिक–राजनीतिक दिशा यानी भारत में क्रांति किस राह से समाजवाद और सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करेगी, इस मुद्दे पर बहुत बहस–मुबाहिसा चला। शांतिपूर्ण संसदीय राह को तत्कालीन सीपीआई–एम के नेता संशोधनवादी करार देकर उसकी निंदा करते थे। जबानी तौर पर चीन की राह को सही कहते रहने के बावजूद नेतृत्व ने

के पक्ष में जनमत तैयार कर रहे हैं। इसी दौरान विक्षुब्ध छात्रों ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच ही 'पूंजीवादी राह के राहगीरों' के खिलाफ भी आवाज उठायी। शुरू में पार्टी के किसी भी नेता के नाम का उल्लेख न करने के बावजूद बीजिंग विश्वविद्यालय में प्रारंभ यह आंदोलन क्रमशः दूसरे विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में फैल गया। धीरे–धीरे अब यह आंदोलन केवल छात्रों तक ही सीमित न रहते हुए मजदूर वर्ग और जनता के दूसरे हिस्सों में भी फैल गया।

अंत में पता चला कि चीन जन गणतंत्र के प्रेसिडेंट तथा पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य लिउ–शाओ–ची खुद इस पूंजीवादी दिशा के मुख्य प्रवक्ता थे। यह भी पता चला कि रूस और चीन के बीच जब सैद्धांतिक बहस चल रही थी (1957–58), तभी से कामरेड माओ–त्से–तुंङ के नेतृत्व में जारी लंबी छलांग (ग्रेट लीप फॉरवर्ड) की दिशा पर हमला करते हुए एक 'गुप्त गुट' काम करता आ रहा था। ये लोग गुप्त रूप से रूस के साथ संबंध रखते आ रहे थे।

प्रेसिडेंट लिउ शाओ ची के नेतृत्व में इस गुट में पेंग–ते–हुआई (ये लंबी छलांग आंदोलन के घोर विरोधी थे) तथा अन्य लोग थे, जो बड़े पदों पर होते हुए भी पार्टी में पूंजीवादी दिशा की वकालत करते थे।

पं. बंगाल में दैनिक अखबारों में कभी–कभार सांस्कृतिक क्रांति के बारे में विकृत समाचार छपते। ''पूंजीवाद के राही'' तथा संशोधनवाद के खिलाफ विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों का आगाज हुआ, जो शहर में पोस्टर तथा परचे बांटते जिसके अंत में ''रेड गार्ड'' या ''वैनगार्ड'' लिखा होता।

हम उस समय सीपीआई (एम) के संशोधनवादी राजनीतिक दिशा पर तेज हमला चलाते हुए तरह–तरह के पोस्टर तथा प्रचार परचे बांटते थे। सांस्कृतिक क्रांति की खबरें हमें यहां संशोधनवादी पार्टी नेतृत्व के चरित्र के खिलाफ संघर्ष चलाने को और ज्यादा उत्साहित/प्रेरित करती। हम उन दिनों सीपीआई (एम) के नेतृत्व के खिलाफ विभिन्न नारे लिखकर कारखाने के गेट, बाजार, बैंक, पोस्ट ऑफिस, रेलवे स्टेशनों और अन्यत्र दीवारों पर चिपकाया करते। इन पर 'रेड गार्ड', 'वैनगार्ड' आदि का नाम संगठन की जगह लिख दिया करते।

बीच गुप्त प्रचार कार्य चलाया और उन्हें हमारी राजनीति के पक्ष में ले आये। यूनियन के सीपीआई (एम) पंथी मजदूर दोस्तों के साथ इस राजनीति को लेकर अक्सर बहस होती और वितंडा छिड़ जाता। कारखाने के भीतर कई समान सोच वाले मजदूर साथियों को लेकर एक गुप्त 'मजूदर कमेटी' खड़ी की। इसी बीच कामरेड कन्हाई चटर्जी तथा अमूल्यसेन ने अन्य राज्यों से संपर्क साधने का प्रयास किया। असम, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में कुछ संपर्क भी आये।

phu dh lo'gkjk lkaL—frd Øakfr dk izHkko rFkk ^nf{k.k ns'k* if=dk dh Hkwfedk

1966 वर्ष समूची दुनिया में एक राजनीतिक उथल–पुथल का समय था। फ्रांस के छात्रों का उत्ताल (तीव्र) विक्षोभ व यूरोप के दूसरे देशों में मजदूरों के विक्षोभ ने शासक वर्ग को किनारे धकेल दिया था। क्यूबा की सशस्त्र क्रांति की विजय के बाद बोलिविया, निकारागुआ, चिली, पेरू तथा वेनेजुएला आदि देशों में व्यापक अमेरिकी विरोधी आंदोलन, अफ्रीका के कांगो में वामपंथी नेता पैट्रिस लुमुम्बा के नेतृत्व में वामपंथी राजनीतिक आंदोलन का व्यापक प्रसार हुआ। बाद में अमेरिकी गुप्तचर विभाग सीआईए ने लुमुम्बा की हत्या कर दी। विश्व भर में वामपंथी बुद्धिजीवियों ने इसकी निंदा में जोरदार आवाज उठायी। भारत में वामपंथी बुद्धिजीवियों के साथ ही प. बंगाल के बुद्धिजीवी भी मजूदर जनता के साथ मिलकर इस हत्या की तीव्र निंदा करते हुए हो रहे विरोध प्रदर्शनों में शामिल हुए।

इस उत्ताल (आलोड़न भरे) दौर में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की खबरें आने लगी। यहां पीकिंग (बीजिंग) विश्वविद्यालय के छात्रों ने वि.वि. के अधिकारियों के एक हिस्से के खिलाफ तीव्र विक्षोभ प्रदर्शित करते हुए वि.वि. के कैंपस की दीवार पर हाथ से लिखे बड़े पोस्टरों से दीवारें पाट दीं। इन पोस्टरों का शीर्षक था : 'संशोधनवाद के मुख्यालय पर तोप दागो'। छात्रों का कहना था कि विश्वविद्यालय के कुछ शिक्षक चीन की समाजवादी शिक्षा व्यवस्था की निंदा करते हुए पूंजीवादी शिक्षा

तो कभी कहीं नहीं कहा और न लिखित रूप से किसी दस्तावेज में इस बात का उल्लेख किया कि भारतीय क्रांति में चीन की राह अपनानी होगी, यानी भारत की क्रांति का रास्ता चीनी क्रांति के जैसे–ही सशस्त्र संघर्ष के रास्ते से गुजर कर राजसत्ता पर कब्जा करने का होगा। वे पार्टी सदस्यों के लड़ाकू मिजाज़ और क्रांति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को पूंजी बनाकर संशोधनवादी खेमे से आम कार्यकर्ताओं को अपनी ओर खींचने के मकसद से यह दिखावा कर रहे थे कि वे ही एकमात्र खालिस सच्चा क्रांतिकारी पार्टी हैं, इसी मकसद से 7वीं कांग्रेस के दस्तावेज में उन्होंने क्रांति के स्तर को जन–गणतांत्रिक क्रांति के तौर पर उल्लिखित किया। उस समय पार्टी की ओर से ''जन–गण–तंत्र, हमारा है मंत्र'' तथा ''जनगणतांत्रिक क्रांति जिंदाबाद'' आदि नारे उछाले गए और उन्हें कार्यकर्ताओं के बीच लोकप्रिय बनाने की कोशिश की।

उस समय वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जारी अमेरिकी साम्राज्यवाद विरोधी सशस्त्र क्रांतिकारी संग्राम पर उस समय के अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन बाइनेज जॉनसन के नेतृत्व में अमेरिकी डाकुओं ने 'नापाम' बम बरसा कर उसे ध्वस्त करने की कोशिश की। B-52 बमवर्षक विमान से लगातार लाखों ऐसे जहरीले बम बेइंतहा वियतनाम के शहरों और गांवों पर बरसाने लगे। उस समय समूचे विश्व की साम्राज्यवाद विरोधी क्रांतिकारी जनता ने अमेरिकी साम्राज्यवाद की बर्बरता के खिलाफ आवाज बुलंद की। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीयवाद के आदर्शों के चलते वियतनाम के साम्राज्यवाद विरोधी संग्राम का नैतिक समर्थन तथा व्यावहारिक मदद–मुहैया करते हुए इस संग्राम को आगे ले जाने में प्रधान मददगार की भूमिका का पालन किया।

सी.पी.आई.–एम के नेतृत्व ने अपनी क्रांतिकारिता का प्रदर्शन करने की गरज से वियतनाम पर अमेरिकी हमले की निंदा कर तरह–तरह के कार्यक्रम आयोजित किये। सेमिनार, कन्वेंशन, मीटिंग, जुलूस, पोस्टरों से कलकत्ता शहर को पाट दिया।

उस समय कलकत्ते में हजारों–हजार लोगों का कॉलेज स्ट्रीट से श्याम बाजार तथा दक्षिण कलकत्ते के हाजरा पार्क से धर्मतला मोन्यूमेंट मैदान तक जुलूस निकाला जाता था। सारे रास्ते घेर कर गाड़ियों पर सवार और राह

चलते लोगों को रोककर हम नारे लगाते थे ''अमेरिकी कुत्ते वियतनाम छोड़ – अभी छोड़ – जल्दी छोड़।'' दूसरा नारा था ''अमेरिकी साम्राज्यवाद हो बर्बाद – हो बर्बाद।'' तीसरा जनप्रिय नारा था ''तोमार नाम, आमार नाम – वियतनाम, वियतनाम!'' ''जन गणतांत्रिक क्रांति जिंदाबाद!''

सी.पी.आई.–एम नेताओं की बातचीत से लगता था कि ये लोग चीनी क्रांति का अनुसरण करते हुए शायद क्रांति की तैयारी के तौर पर पार्टी में संशोधनवादी मतवाद से नफरत करना सिखाते हैं और क्रांतिकारी मानसिकता तैयार करने के लिए एक कार्यक्रम/कार्ययोजना के तहत ये तमाम कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।

नेतृत्व की इन तमाम बातों से अविभाजित पार्टी का एक बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ और खासकर प. बंगाल के लड़ाकू आदर्शवादी और ईमानदार कार्यकर्ताओं का अधिकांश हिस्सा सीपीआई–एम के नेतृत्व के साथ हो गया और उसके नेतृत्व को मान लिया। पार्टी के बंटवारे के फलस्वरूप रूसपंथी लोग (जो सी.पी.आई. के साथ रह गये) अल्पसंख्यक रह गये।

Økfrdkjh jktuhfr dk mnHko % lhihvkbZ ¼,e½ ds Hkhrj l)kfrd&jktuhfrd cgl 'kq:

यहां ऐतिहासिक तौर पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के सैद्धांतिक आधार संग्राम के रास्ते और उसके काम करने के तौर तरीकों को लेकर कुछ बातचीत कर लेना जरूरी है।

यह हम सभी जानते हैं कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी 1919 में स्वयं लेनिन द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय संगठन (Comintern) की सदस्य रही है। ब्रिटिश शासन के मातहत पार्टी को भूमिगत रह कर ही काम करना पड़ता था। और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठन की ओर से (बृहत्) ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPGB) को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की देखरेख और तत्वावधान की जिम्मेदारी सौंपी गयी। ब्रिटेन की पार्टी की तरफ से उस समय जार्ज एलिसन (जो खान मजदूर और पोलित ब्यूरो के सदस्य थे) तथा 27

की गोली से मारा गया। इस बर्बर हत्याकांड के खिलाफ आन्दोलन इतना ही तेज/उत्ताल हो उठा कि 21, 22, 23 सितम्बर लगातार तीन दिन तक हड़ताल तथा बन्द जारी रहा।

यूनियन की तरफ से हम मजदूरों को लेकर इस आन्दोलन में शामिल हुए, क्रान्तिकारी राजनीति के सम्पर्क में आने के बाद बहुत उत्साह तथा उमंग के साथ पहली बार इस आन्दोलन में अपनी भूमिका अदा कर रहे थे। अक्सर रोज ही जुलूस, पथसभा, पोस्टर साटना तथा लिफलेट बाँटना आदि कामों में व्यस्त रहता था। जुलूस में नारे लगाते–लगाते गला बैठ जाता था, फिर भी लगता था और भी खटना पड़ेगा।

इसी बीच कामरेड कन्हाई चटर्जी से हमारी घनिष्ठता बढ़ती चली गई। मेरे घर पर मीटिंग के बाद वे रात को वहीं टिक जाते। रात को खाना खाने के बाद, अगल–बगल लेटकर भी तरह–तरह की बहुत सी बातें करते। छोटा भाई भी क्रमशः इस राजनीति की ओर आकर्षित हुआ और वे उसके साथ भी काफी बातें करते। धीरे–धीरे मां, भाभी, भाई आदि के साथ भी घर के लोगों की तरह घुलमिल गये। हमारा समूचा परिवार भी इस राजनीति का गहरा समर्थक बनता गया। बाद में पता चला कि उन्होंने, अमूल्य सेन, त्रिपुरा में पार्टी के राज्य समिति के सदस्य कामरेड चंद्रशेखर दास तथा कुछ और साथियों ने मिल कर सीपीआई (एम) के भीतर ही एक 'गुप्त केंद्र' बनाया है और कामरेड अमूल्य सेन 'चिंता' दस्तावेज के प्रकाशन एवं वितरण के मामले में मुख्य भूमिका निभा रहे थे।

एक ओर 'चिंता' दस्तावेज को बीच में रख कर पार्टी के भीतर दक्षिणी बंगाल के हावड़ा, हुगली, कलकत्ता, बीरभूम, वर्धमान और चौबीस परगना जिलों के पार्टी सदस्य तथा समर्थकों के बीच नयी सोच का संचार शुरू हुआ। पार्टी के ट्रेड यूनियन और छात्र फ्रंट में भी इन दस्तावेजों की राजनीति को केंद्र में रखकर एक जैसी सोच वाले कामरेडों के बीच आपस में एकता बनने लगा और उनके बीच मतों का आदान–प्रदान शुरू हुआ। इन तमाम कामरेडों के साथ कामरेड कन्हाई चटर्जी तथा अमूल्य सेन घनिष्ठ संपर्क रखते थे। मैं तथा मजदूर मित्र अमल तफादार ने मिलकर हमारे कारखाने के यूनियन सदस्यों के

उनके विश्लेषण, सैद्धांतिक ज्ञान, दूरदृष्टि एवं व्यावहारिक आचरण ने हमें अभिभूत कर दिया।

बाद में हमलोग कामरेड कन्हाई चटर्जी से बीच–बीच में बैठकों में मिलते थे। बैठकें मजदूर कामरेडों के घर में, होमियोपैथी डाक्टर के घर या मेरे घर पर होती थी। सुबह से रात के 8–9 बजे तक बातचीत होती थी। जहाँ ''चिन्ता'' दस्तावेजों की राजनीतिक दिशाओं की व्याख्या करते थे। इसके अलावा भी, मानव समाज के उद्‌भव और विकास का इतिहास, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (वस्तुवाद), रूस–चीन क्रान्ति के इतिहास, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र (उन्होंने खुद एम.काम. पास किया था)। ट्रेड यूनियन आन्दोलन का लक्ष्य तथा उद्देश्य, अर्थवाद का खतरा और चुनाव का क्रान्ति–विरोधी स्वरूप आदि विषयों पर विस्तार से बातचीत होती। बैठकें कभी–कभी शाम को शुरू होकर दूसरे दिन सुबह तक चलती थी। इन तमाम चर्चाओं में मेरी राजनीतिक तथा सैद्धान्तिक समझ तो बढ़ी ही, साथ–साथ C.P.I. तथा CPI(M) के नेतृत्व के क्रान्ति–विरोधी तथा अवसरवादी चरित्र का खुलासा हुआ। मेरे आगे मानो एक नयी दिशा खुल गई। मैं बड़ी संख्या में मार्क्सवादी रचनावलियां पढ़ने लगा। साथ–साथ ट्रेड यूनियन नेतृत्व तथा पार्टी की सेल, कमेटी में तरह–तरह के सवाल उठाने लगा। नेतागण किसी भी सवाल का सही जबाब नहीं दे पाते और बगलें झाँकते थे। मेरे सामने उन लोगों की सैद्धान्तिक तथा राजनीतिक ज्ञान के नीचले स्तर (दिवालियापन) की हकीकत तथा सीमाबद्धता (सीमितताएं) पकड़ी गयी और व्यावहारिक दिशा से जीवन यात्रा की पद्धति सहित तरह–तरह के क्रान्ति–विरोधी आचरण सामने आ गये।

1966 में पश्चिम बंगाल में जरूरतमंद सामानों की मूल्य वृद्धि के खिलाफ तथा अनाज की मांग को लेकर व्यापक आन्दोलन शुरू हुआ। सीपीआई (एम) सहित दूसरी वामपंथी पार्टियां तथा उनके नेतृत्वाधीन विभिन्न जन संगठन इस आन्दोलन में शामिल हुए। इस आन्दोलन के खिलाफ प्रफुल्ल सेन की पुलिस ने बड़े पैमाने पर हमला शुरू किया। कृष्ण नगर, बारासात, कोननगर, बशीरहाट आदि जगहों पर पुलिस ने आँसू गैस छोड़ा, लाठी चलायी तथा गोली चलायी, बशीरहाट में 13–14 साल का बच्चा नूरुल इस्लाम पुलिस

वर्षीय फिलिप्स स्प्रैट (ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक छात्र) और ब्रेइन ब्रैडले (जो एक समय ब्रिटिश सेना के युवा सदस्य के तौर पर कुछ समय भारत में रहे) गुप्त रूप से भारत में आये। वे बॉम्बे और कलकत्ता के गोदी कामगारों (बंदरगाह के मजदूरों) के बीच गोपनीय रूप से काम करते रहे।

जार्ज एलिसन कुछ दिन बाद इंग्लैंड लौट गये। फिलिप्स स्प्रैट तथा ब्रेइन ब्रैडले पकड़े गये। ब्रैडले को भारत के ब्रिटिश अफसरों ने कई महीनों बाद वापस इंग्लैंड भेज दिया। पर छात्र नेता फिलिप्स स्प्रैट भारत में ही रह गये। स्प्रैट ने यहां मजदूर आंदोलन के साथ जुड़ने के बाद अपना अंग्रेजी पोशाक त्याग दिया और पाजामा–कुर्ता–चप्पल पहनने लगे। भारतीय मजदूरों के साथ खाना भी भारतीय ही खाने लगे थे। ये स्प्रैट जितने दिनों तक जेल में बंदी रहे, एक आदर्श पार्टी सदस्य के तौर पर ही बंदी जीवन काटा। मगर आश्चर्य की बात है कि जेल से छूटने के बाद उनमें परिवर्तन दिखाई दिया और बाद में तो वे मार्क्सवाद विरोधी हो गये। एक भारतीय नारी से उन्होंने विवाह किया और भारत में ही उन्होंने अपना अंतिम जीवन गुजारा। 1952 में उनकी मौत हुई।

हमें याद रखना होगा कि ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी भले ही तीसरे इंटरनेशनल (comintern) की महत्वपूर्ण सदस्य रही हो, पर फिर भी तत्कालीन दृष्टि से ब्रिटिश मजदूर दल द्वारा (लेबर पार्टी–मौजूदा शासक वर्गीय पार्टी) मार्क्सवाद को राजनीतिक नजरिये के तौर पर अपना लेने के कारण उसे भी कोमिन्टर्न की सदस्यता मिली। उस समय ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के गठन और विकास का जो आधार था, वह था ब्रिटिश समाज व्यवस्था की वास्तविकता में यानी बुर्जुआ जनवादी क्रांति के बाद एक स्वतंत्र बुर्जुआ जनवादी राष्ट्र में उसका होना। मजदूर नेताओं की चेतना में तथा राजनीति में सांस्कृतिक मानसिकता में बुर्जुआ लोकतांत्रिक मूल्यबोध था तथा उसके सुफल का भी वे उपभोग करते आये हैं। हालांकि मजदूरों की शोषण–मुक्ति के लिए उन्होंने मार्क्सवाद को सैद्धांतिक बुनियाद के तौर पर स्वीकार किया था तथा समाजवाद की स्थापना के लक्ष्य में रूसी क्रांति की रणनीति क्रांतिकारी जन उभार को ही मानते थे। कहना न होगा कि महान चीन की क्रांति की सफलता तक भी रूस की रणनीति को ही दुनियाभर के कम्युनिस्ट अपने लिए एकमात्र मॉडल मानते आये थे। इसी रणनीति की दिशा के तौर पर जब तक शहरों में

जन विद्रोह की स्थिति नहीं बनती और मजदूर वर्ग इस उभार का नेतृत्व करने के लिए सांगठनिक तौर पर तैयार नहीं होता, तब तक मजदूरों की राजनीतिक चेतना बढ़ाते रहने के लिए मजदूरों के आंदोलन का ही अर्थात मजदूरों की अपनी मांगों, मजदूरी वृद्धि, छंटनी, तथा दूसरे जुल्म के खिलाफ हड़ताल और जन आंदोलन को ही उसके रास्ते के तौर पर स्वीकार करते थे।

कहना न होगा कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी को उन्होंने इसी धारणा के तहत शिक्षित किया। इंग्लैड की समाजवादी क्रांति की पूर्व–शर्त के तौर पर मजदूर आंदोलन तथा ट्रेड यूनियन संघर्षों और संसदीय चुनावी संग्राम को ही महत्व दिया जाता था। फलतः अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी तथा बाद में सीपीआई और सी.पी.आई.(एम) के लक्ष्य और कार्य की दिशा (धारा) के तौर पर मजदूर–किसानों की राजनीतिक चेतना बढ़ाने के लिए पार्टी के गठन के बाद से ही मजदूरी वृद्धि, बोनस, जमीन पर कब्जा, फसल पर कब्जा (धान काट लेना) यानी (आर्थिक स्रोत) ''दिला देने'' की राजनीति करती आई है।

इन सभी नेताओं का विश्वास रहा है कि निजी मांगों को लेकर मजदूर–किसानों के आंदोलन करने भर से उनकी राजनीतिक चेतना खुद–ब–खुद पैदा होगी और क्रांति का समय आने पर यानी क्रांतिकारी जन उभार आने पर वे खुद ही क्रांति की लड़ाई में कूद पड़ेंगे। जब तक वैसी परिस्थिति नहीं बनती, तब तक स्वाधीन भारत में संविधान मानकर संसदीय चुनावों में हिस्सेदारी करते हुए अपनी जनता के बीच आधार बनाने का प्रयास जारी रखना होगा। कहने की जरूरत नहीं कि इस तरह के विचार और कार्यशैली लेनिनवाद के खिलाफ है ही, क्रांति के भी खिलाफ है।

1948 साल। उस समय के ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य तथा सिद्धांतकार रजनी पॉम दत्त (RPD) ने आज का भारत (India Today) नामक एक किताब में भारत के मजदूरों का खस्ताहाल और भारतीय स्वाधीनता संग्राम के स्वरूप को उभारा। उनके वक्तव्य का सारांश था कि अंग्रेजों ने कतई भारत को एक स्वतंत्र देश के तौर पर घोषित नहीं किया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद अंग्रेज शासित अन्य औपनिवेशिक मुल्कों को साथ लाकर उसने कॉमनवेल्थ संस्था खड़ी की। उसी के अंतर्गत कॉमनवेल्थ के सदस्य देश के तौर पर भारत को डॉमिनियन का दर्जा देकर कांग्रेस पार्टी के हाथों में सत्ता

दस्तावेज का प्रचार कर रहे हैं। इन तमाम दस्तावेजों की विषयवस्तु थी : भारत स्वाधीन नहीं है, भारत अमेरिकी साम्राज्यवाद के नये उपनिवेशवाद का शिकार है। भारत के राज्य का वर्ग चरित्र अर्ध उपनिवेशिक और अर्ध सामंती हैं। भारत के बड़े पूंजीपतियों ने साम्राज्यवाद के साथ बहुत पहले ही गठजोड़ कर लिया था और अब वे साम्राज्यवाद के दलाल में बदल गये हैं। भारतीय क्रांति का पड़ाव/स्तर साम्राज्यवाद विरोधी सामंतवाद विरोधी है और यहां की क्रांति के मर्म में कृषि क्रांति है। चीनी क्रांति की रणनीति – दीर्घकालीन जनयुद्ध ही भारतीय क्रांति की रणनीति है।

इन दस्तावेजों को पढ़कर काफी रोमांचित हुआ। पर मेरा सैद्धांतिक–राजनीतिक स्तर कम होने के चलते दस्तावेजों के सारे वक्तव्य मैं समझ नहीं पाया। इसीलिए जो व्यक्ति इन दस्तावेजों को गोपनीय ढंग से उपलब्ध कराता था, उसी को पकड़ कर कहा कि उन नेताओं से मेरी मुलाकात करा दो। बाद में 1966 के मार्च महीने में एक व्यक्ति के साथ परिचय हुआ। छोटे कद के दुबले–पतले, सफेद पैंट और हवाई शर्ट पहने हुए 34–35 वर्षीय सज्जन थे। नाम कन्हाई चटर्जी। दक्षिण कलकत्ता के एक हाईस्कूल में शिक्षक। दक्षिण कलकत्ते के गड़िया इलाके के एक हाईस्कूल–वरदाप्रसाद हाईस्कूल के मास्टर (शिक्षक) ।

पहले दिन ज्यादा बातचीत नहीं हुई। बाद की बैठक के लिए एक दिन तय हुआ। उस बैठक में और भी कई लोग थे। दो छात्र, तीन मजदूर, एक ट्रेड यूनियन कर्मी तथा एक होमियोपैथिक डॉक्टर। उस बैठक में उन्होंने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के आंदोलन के इतिहास पर लंबा वक्तव्य रखा। मौजूदा पार्टी नेतृत्व के अवसरवादी, संशोधनवादी स्वरूप को सामने रखा। उन्होंने लेनिन की रचनाएं ''राज्य और क्रांति'' तथा ''क्या करें'' किताबों से उद्धरण देकर पार्टी नेतृत्व की दक्षिणपंथी लाइन का विरोध किया। पार्टी नेतृत्व अगर डांगे के दक्षिणपंथी लाइन का विरोध कर रहा है तो इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि वह क्रांतिकारी लाइन पेश कर रहा है। अंर्तवस्तु या मर्मवस्तु के स्तर पर पार्टी नेतृत्व के दस्तावेजों के साथ डांगे की लाइन का कोई मौलिक अंतर नहीं है। लिहाजा इस पार्टी पर कोई भरोसा या आस्था (विश्वास) न रखिएगा।

खिलाफत न करते हुए तरह–तरह की भ्रामक व्याख्याएं करने का तरीका अपनाया। प्रश्न उठा : क्या भारत सच्चे अर्थों में (वाकई) स्वाधीन देश है? या नया उपनिवेशवाद का शिकार है? भारत के राज्य का स्वभाव क्या स्वाधीन तथा सार्वभौम राज्य का है? या यह नये उपनिवेश के तर्ज का आधा उपनिवेशिक और आधा सामंती राजसत्ता है? भारत की क्रांति की रणनीति क्या होगी? क्रांतिकारी जनविद्रोह (जन उभार) या भारत की समाज व्यवस्था के अनुरूप दीर्घकालीन जनयुद्ध का रास्ता होगा?

इन तमाम बहस के हिस्से के तौर पर पश्चिम बंगाल के हुगली तथा कलकत्ता जिला के सम्मेलनों में कुछ सदस्यों ने वैकल्पिक दस्तावेज पेश किये थे। कलकत्ता जिला कमेटी के सदस्य कामरेड कन्हाई चटर्जी, तथा परिमल दासगुप्त ने वैकल्पिक दस्तावेज पेश किया और उस पर मत विभाजन की मांग की।

परिमल दासगुप्त के दस्तावेज पर खास बातचीत/बहस नहीं हुई। पर कन्हाई चटर्जी के दस्तावेज पर बहस कराई गयी और इस पर हुए मतदान में कन्हाई चटर्जी के दस्तावेज के पक्ष में 11 मत डाले गये। यूं तो यह संख्या बहुत ही सामान्य थी, पर उस दस्तावेज को लेकर जो राजनीतिक बहस खड़ी हुई उसने सीपीआई (एम) के नेतृत्व को बड़ी मुश्किल में जरूर डाल दिया। और भविष्य की बहस के अशनि संकेत (आसमानी बिजली) उन्हें देखने को मिली। दूसरी ओर हुगली जिला के भूतपूर्व सचिव कामरेड अमूल्य सेन ने अधिकारिक दस्तावेज को संशोधनवादी करार दिया। 1951 का यह दस्तावेज जिसमें भारत की आजादी को (नकली) फर्जी कहा गया था, के समर्थन में उन्होंने जोरदार वक्तव्य रखा। इन तमाम घटनाओं तथा बहस ने पार्टी के भीतर की आबोहवा या माहौल को गर्म बना दिया था।

सम्मेलन के दौर खत्म होने के बाद 1965 के बीचोंबीच एक गुप्त दस्तावेज मेरे हाथ लगा। दस्तावेज का शीर्षक था ''चिंता''। न तो इसका कोई आवरण पृष्ठ था, न ही कोई नाम पता और न ही प्रेस लाइन मौजूद था। अगले कई महीनों में इस तरह के छः दस्तावेज मिले। पार्टी में इन दस्तावेजों को बहुत ही गोपनीय ढंग से वितरित किया जाता था। पता लगा कि पार्टी के बीच ही से कई विद्रोही कामरेडों ने एक गुप्त केंद्र स्थापित कर लिया है। वही लोग इस

हस्तांतरित की।

इस किताब के प्रकाशन के बाद सीपीआई के भीतर प्रचंड आलोड़न का संचार हुआ। कारण, भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के बारे में सीपीआई का नेतृत्व तब तक कोई सही मूल्यांकन नहीं कर पाया था। रजनी पॉम दत्त को पार्टी बहुत सम्मान देती थी और एक समय तक वे ही भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की सैद्धांतिक दिशा तय करते थे। इंग्लैड में पढ़ते समय पार्टी के नेता भूपेश गुप्त और ज्योति बसु को उन्होंने ही मार्क्सवादी के तौर पर प्रशिक्षित किया था। बाद में तो और बहुत से लोगों को उन्होंने सैद्धांतिक शिक्षा दी थी। फलस्वरूप भारत की ''स्वाधीनता'' के बारे में उनके मूल्यांकन को पार्टी ने खासा महत्व दिया। नतीजतन 1951 में पार्टी ने एक सम्मेलन में एक दस्तावेज अपनाया जिसमें कहा गया कि भारत की आजादी फर्जी हैं। सच्ची आजादी के लिए आंदोलन चलाना होगा। मगर दो साल के अंदर ही पार्टी अपने 1951 के दस्तावेज की समझ से 180^0 मुड़ गई।

1953 में मदुरई में संपन्न पार्टी की तीसरी कांग्रेस में भारत की आजादी को स्वीकृति दी गयी और संविधान मानकर संसदीय लोकतंत्र पर आस्था रखते हुए चुनावों के माध्यम से बहुमत हासिल कर बुर्जुआ राजसत्ता में प्रवेश करने (सत्ता पाने) की दिशा अपनाई।

इस मूल्यांकन के फलस्वरूप 1957 में नम्बूदरीपाद के नेतृत्व में पहले पहल कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार हमने बनते देखा। हालांकि कुछ ही महीनों बाद प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उस (निर्वाचित) सरकार को भंग कर दिया।

ऐतिहासिक तौर पर यहां इसकी चर्चा की प्रासंगिकता यही है, कि ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी की देखरेख के अंतर्गत रहते (दूसरे विश्व युद्ध के दौरान 1943 में तीसरे अंतर्राष्ट्रीय (Comintern) को भंग कर दिया गया था) और उसके बाद भी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम और/या उसके संघर्ष पथ के तौर पर बुर्जुआ राज्य सत्ता को ध्वस्त करते हुए सर्वहारा के नेतृत्व में लाल फौज गठित करने की फौजी दिशा विकसित करने, अपनाने की कोई भी कार्यसूची नहीं स्वीकारी थी। जन्म से ही केवल ट्रेड यूनियन तथा खुले कानूनी जन आंदोलन की कार्यसूची को ही रास्ते के तौर पर चुनकर वर्तमान

समाज व्यवस्था तथा संविधान के घेरे (दायरे) में कुछ ''दिला देने'' के लक्ष्य में अवसरवादी तथा सुधारवादी आंदोलन चलाती आयी है। देशी–विदेशी शोषक–शासकों के लिए जो ''स्वीकार्य'' है या जिन मांगों की ''उनके मान लेने की संभावना है'', उसी दायरे में आंदोलन के फंसाए रखते हुए उसे ही वर्ग संघर्ष की राजनीति कह कर चलाते आये हैं। वह पूरी तरह से क्रांति विरोधी, संशोधनवादी और सुधारवादी काम है।

लिहाजा जब हमलोगों ने देखा कि रूस और चीन के नाम पर सैद्धांतिक–राजनीतिक बहस में सीपीआई (एम) के नेतागण चीनी पार्टी की दिशा का समर्थन कर रहे हैं और वियतनाम के सशस्त्र संघर्ष के समर्थन में नारे लगा रहे हैं और लड़ाकू जन–आंदोलन चला रहे हैं, तब ऐसा लगा था कि वे सशस्त्र संग्राम की कार्यसूची अपनाएंगे और गुप्त रुप से सशस्त्र स्क्वाड तथा सशस्त्र फौजी संगठन खड़ा करेंगे। हम अपने नेताओं से मांग करते थे कि वे कब हमें सैनिक प्रशिक्षण दिलाएंगे? मगर जल्द ही यह भ्रम टूटा।

पार्टी कांग्रेस के बाद स्वीकृत नयी कार्यसूची जब पार्टी में सभी स्तरों पर चर्चा के लिए (राज्य कमेटी, जिला कमेटी और निचली कमेटियों में) भेजी गयी और चर्चा शुरू हुई तो इतना जोर–शोर से ढोल पीट कर जिस कार्यक्रम के दस्तावेज को स्वीकारा गया उसी में – सरसों में भूत छिपे होने के जैसा असलियत छिपी है। 7वीं पार्टी कांग्रेस के राजनीतिक दस्तावेज में डांगे के संशोधनवाद के विषय में बहुत सारी बातें कही गयी हैं। मगर समाजवादी संघर्ष या किस रास्ते से क्रांति संपन्न की जाएगी, इस विषय में दस्तावेज के 111 नम्बर बिंदु में स्पष्ट कहा गया है कि ''भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) शांतिपूर्ण तरीके से समाजवाद में प्रवेश की कोशिश करेगी।'' इस वक्तव्य ने सीपीआई (एम) नेताओं के सैद्धांतिक भटकाव तथा राजनीतिक धोखाधड़ी को पूरी तरह उजागर कर दिया। खुशचेव के शांतिपूर्ण तरीके से समाजवाद में पहुंचने की दिशा को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने संशोधनवादी दिशा के तौर पर पहचान कर उसकी निंदा की थी। सीपीआई (एम) के उन्हीं चीनपंथी नेताओं ने उनकी हाल ही में स्वीकृत कार्यसूची के दस्तावेज में समाजवाद में पहुंचने की दिशा के तौर पर उसी ''शांतिपूर्ण पथ'' को ही अपनाया था और इसी से तथाकथित चीनपंथी होने का दिखावा करते आये सीपीआई (एम)

नेताओं का मुखौटा उघड़ गया और झोले से बिल्ली निकल आयी।

यह बात अब स्पष्ट हो चुकी थी कि डांगे के नेतृत्व में सीपीआई को संशोधनवादी पार्टी के तौर पर उसकी निंदा करते हुए अपनी चीनपंथी छवि (भावमूर्ति) का इस्तेमाल करते हुए अविभक्त सीपीआई के अधिकांश पार्टी सदस्यों को सीपीआई (एम) में लाकर लामबंद करने में वह सफल हुई है। मगर 7वीं कांग्रेस के दस्तावेज के 111 नंबर बिंदु में उन्होंने जो कहा है, उससे उनके और सीपीआई के सांगठनिक रूप (खुले तथा कानूनी) तथा पद्धति में असल में कोई फर्क नहीं है। अब सवाल उठता है कि नयी पार्टी की अगर यही दिशा है, तो पार्टी को क्यों तोड़ा गया?

—f"k Økfr dh jktuhfr ds laidZ esa vkuk] lhihvkbZ ¼,e½ ls l)kafrd&jktuhfrd erHksn 'kq:% ^^fpark** nLrkost dh Hkwfedk

सीपीआई (एम) के नेतृत्व में संपन्न सातवीं कांग्रेस के दस्तावेजों को लेकर पार्टी के विभिन्न स्तरों में महज 111 नंबर बिंदु पर ही बहस सीमित नहीं रही और भी तर्क–वितर्क हुए। भारत की ''स्वाधीनता'' का असली स्वरूप, सार्वभौम तथा लोकतंत्र का चरित्र (स्वभाव), भारत के राज्य का स्वभाव आदि के बारे में भी बहस छिड़ गयी। 1963 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने ख्रुश्चेव के संशोधनवादी दिशा के स्वरूप का खुलासा करते हुए 9 (नौ) दस्तावेज प्रकाशित किए। महान बहस के नाम से विख्यात इन दस्तावेजों में से एक में चीन की पार्टी ने ''नया उपनिवेशवाद का फेरीवाला'' नामक एक महत्वपूर्ण निबंध प्रकाशित किया। इस दस्तावेज का विषय था दूसरे विश्वयुद्ध के बाद की खास परिस्थितियों में साम्राज्यवादियों ने मुल्क–दर–मुल्क उनके उपनिवेशिक शासन, शोषण और लूट तथा नियंत्रण कायम रखने के लिए जो स्वरूप अपनाया है, उस नये स्वरूप को बेनकाब करना/खुलासा करना। सीपीआई (एम) नेतृत्व के सामने वह सवाल रखा गया कि उक्त दस्तावेज के साथ सहमत हैं या नहीं। नेतृत्व ने उस समय उक्त दस्तावेज के वक्तव्य का सीधे–सीधे

Lkkukjiqj & Hkkxj dk fdlku la?k"kZ

पाठकों को जरूर याद होगा कि दक्षिण 24 परगना जिले के सोनारपुर थाना इलाके के डीही में व्यावहारिक अनुभव हासिल करने के लिए दो पेशेवर क्रांतिकारियों को हमने भेजा था। डीही और भांगर थाना के कुछ गावों में टिके रहकर वे काम करते रहे। विभिन्न तरह के प्रचार के नाम से उन्होंने कुछ सरकारी खास (गैर–मजरूआ जमीन) जिनपर जोतदारों का कब्जा था, की फसल काटकर किसानों के घर ले जाना, जोतदार से कब्जा छीनना, सूदखोर साहूकारों के खिलाफ संग्राम चलाना आदि सभी कार्रवाइयां की। जिसमें न केवल स्थानीय किसान ही हिस्सा ले रहे थे, बल्कि योजनाबद्ध तरीके से इन संघर्षों में शहरी छात्रों, मजदूरों को भी शामिल किया जाता। वे संघर्षों के अंत तक प्रचार के लिए पोस्टर लिखते, परचे बांट कर इस इलाके में प्रचार करते। इसी बीच महान नक्सलबाड़ी के संग्राम का प्रचार जुलूस, शहर और गांवों में, पथ सभा, पोस्टर, परचे आदि से धुंआधार प्रचार किया गया। नक्सलबाड़ी विद्रोह की खबरों ने स्थानीय लड़ाकू किसानों को बहुत उत्साहित किया। उन्होंने तय किया कि नक्सलबाड़ी की राजनीति की रोशनी में वे भी इस अंचल में स्थानीय स्तर पर क्रांतिकारी आंदोलन खड़ा करेंगे। इसकी तैयारी के तौर पर गोपनीय किसान कमेटी का गठन किया गया। रात–रात को मीटिंग चलती थी और स्क्वाड उभारने के उद्देश्य से प्रचलित पारंपारिक हथियारों के अलावा आग्नेयास्त्रों की व्यवस्था करने की भी कोशिश की जाने लगी।

इस समय उस इलाके में जालिम जोतदार, सीपीआई का सदस्य सतीश घोष एक प्रभावशाली व्यक्ति था। वह कई बड़ी–बड़ी भेड़ियों (मछली पालन के खेतों) का मालिक था। एक–सौ एकड़ से ज्यादा जमीन के अलावा भी काफी 'खास' (गैर–मजरूआ) जमीन पर कब्जा कर रखा था। सूद का ध ंधा, रेहन रखने और साहूकारी का कारोबार था। स्वाभाविक ही था कि किसानों के घोर नफरत और घृणा का पात्र था। उसकी एक बहुत बड़ी सशस्त्र गुंडा वाहिनी थी और स्थानीय थाने से भी उसके अच्छे संबंध थे। गुप्त रूप से उसके खिलाफ प्रचार का काम चलता रहा। उस समय उसका गिरोह/गुंडा ''फौज'' किसानों पर तरह–तरह के जुल्म ढाता और यातनाएं देता। किसानों

मंडली के लोग शुरू से ही वामपंथी सोच के थे। इस क्रांतिकारी राजनीति के साथ वे सहमत हुए तथा सीपीआई (एम) के खिलाफ खुलकर वक्तव्य रखने में वे 'दक्षिण देश' पत्रिका हमारे उत्तरदायित्व में छोड़ देने को भी राजी हो गये। पर उन्होंने कई शर्तें रखी, जैसे, नयी संपादक मंडली में भी संपादक के स्थान पर पुलीन बिहारी सरदार ही रहेंगे, उनके साथ और भी एक संपादक होंगे और पत्रिका का नाम 'दक्षिण देश' ही रहेगा। हम लोगों ने खुशी–खुशी यह प्रस्ताव मान लिया।

इसके बाद कॉलेज स्ट्रीट इलाके में पत्रिका का दफ्तर खोला गया, जहां से पाक्षिक (महीने में दो बार) पत्रिका प्रकाशित होने लगी। हालांकि कई महीने बाद सीपीआई (एम) के गुंडों ने हमला कर पत्रिका के दफ्तर में तोड़–फोड़ की और कार्यकर्ताओं के साथ भी मारपीट की। बाद में उसे वहां से हटा लिया गया। पत्रिका केवल पार्टी सदस्य और समर्थकों के बीच ही बेची नहीं जाती थी, बल्कि कारखानों के गेट, कॉलेजों के गेट, बाजारों और महत्वपूर्ण सड़कों पर घूम–घूम कर भी बेची जाती। इस पत्रिका में सीपीआई (एम) के नेतृत्व की क्रांति विरोधी संशोधनवादी दिशा का भंडाफोड़ करने के अलावा, एक के बाद एक निबंधों में भारत के राजनीतिक स्वरूप, आधा उपनिवेशवादी आधा सामंतवादी स्वरूप, नव उपनिवेशवादी चरित्र का विवरण तथा इसकी धुरी के तौर पर कृषि क्रांति, कृषि क्रांति क्या है और क्यों जरूरी है आदि विषयों पर लेख छपते थे। छंटनी, बेकारी, मूल्यवृद्धि और इन समस्याओं से निजात पाने का उपाय क्या है? चीनी क्रांति की रणनीति, दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा तथा भारतीय क्रांति के केंद्र में यह क्यों उचित है, इसकी व्याख्या की जाती। बाद में 'दक्षिण देश' पत्रिका की राजनीति को केंद्र में रखकर पाठक समूह बनाये गये। उनमें से अगुवा हिस्सों को लेकर कमेटी या केंद्र स्थापित किये गये। बाद में यही केंद्र ''दक्षिण देश ग्रुप'' के तौर पर जाना गया।

egku uDlyckMh fdlku vkUnksyu rFkk Hkkjr esa dE;qfuLV vkUnksyu esa u;h Økafrdkjh fn'kk dk vkxkt

1966 में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री प्रफुल्ल सेन के कुशासन

(दुःशासन) के खिलाफ वामपंथी दलों ने खाद्य आंदोलन सहित विभिन्न तरह के जन आंदोलन छेड़े। पहले ही कांग्रेस से टूटकर अजय मुखर्जी और सुशील धाड़ा के नेतृत्व में बांग्ला कांग्रेस पार्टी बनी थी। इस समय बांग्ला कांग्रेस भी वामपंथियों के साथ जन आंदोलन के शामिल हुई। 1967 की शुरूआत में प. बंगाल में विधानसभा के चुनाव हुए। उन चुनावों में कांग्रेस पार्टी की बुरी तरह हार हो गयी और वामपंथियों के नेतृत्व में पहली संयुक्त–फ्रंट सरकार बनी। अजय मुख्यमंत्री, ज्योति बसु उपमुख्यमंत्री व गृहमंत्री बने। सीपीआई (एम) के केंद्रीय नेता, अखिल भारतीय किसान सभा के नेता हरेकृष्ण कोणार भू–राजस्व मंत्री, भूमि विभाग के मंत्री बने।

1967 में विधानसभा चुनाव के सिलसिले में व्यापक राजनीतिक बहस चलाकर ''दक्षिण देश'' ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके अलावा पोस्टर, लिफलेट, नुक्कड़ सभाओं के जरिए चुनावी तंत्र के स्वरूप–स्वभाव को उजागर किया गया। निजी बातचीत में भी चुनावों के विरुद्ध जनमत तैयार किया जाता। पोस्टरों में लिखे जाते, ''चुनाव रास्ता नहीं है, कृषि विप्लव है जीने का रास्ता'', ''शासकवर्ग के चुनावी धोखाधड़ी का मुखौटा उतार दीजिए'' आदि नारे, परचों में कृषि क्रांति क्यों जीने का रास्ता है इसकी व्याख्या की जाती। इस समय हालांकि ''चुनावों का बहिष्कार करें'' का रणनीतिक नारा नहीं दिया गया था, क्योंकि इस नारे के बारे में बहुत अस्पष्टता और भ्रामकता फैली थी। हालांकि हम तो इस नारे के पक्ष में अवश्य थे। चूंकि यह नारा हमारे लिए रणकौशलगत नारा नहीं था। भारतीय क्रांति की रणनीति–दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा के अंतर्गत इस नारे को हम रणनीतिगत नारे के तौर पर देखते थे। ''दक्षिण देश'' के पाठक और समर्थकों ने हालांकि अक्षरशः उन चुनावों का बहिष्कार किया था।

कांग्रेसी कुशासन के खिलाफ दीर्घ संग्राम के बाद संयुक्त–फ्रंट सरकार के गठित हो जाने से करोड़ों मजदूर–किसान जनता में व्यापक उम्मीद और उत्साह का संचार हुआ। नयी बनी सरकार की ओर से घोषणा की गयी कि अब से और किसी जन आंदोलन में पुलिस नहीं भेजी जाएगी। जन–आंदोलन विकसित करने और लोकतंत्र की रक्षा करने हेतु पुलिस को हस्तक्षेप नहीं करने देते हुए उन्हें बैरकों में ही रखा जाएगा।

दिशा के मातहत (रचनात्मक) क्रांतिकारी जन–आंदोलन गठित करने के लक्ष्य से कोई सृजनशील कोशिश नहीं हुई। प्रचलित कानून तथा प्रशासनिक अधिकारियों के अधिकार/सत्ता को मान्यता दे कर बी.डी.ओ.(एस.डी.ओ.) जैसे अधिकारियों के दफ्तरों के समक्ष जाकर मांगें पेश करने तक ही आंदोलन को सीमित रखा जाता। उस दकियानूसीपन को तोड़ नयी विचारधारा के आधार पर जनता की क्रांतिकारी चेतना को उभार कर मौजूदा कानून और प्रशासनिक अधिकारियों को नकार कर दीर्घकालीन जनयुद्ध की राजनीति की रोशनी में नये तर्ज के जन आंदोलन तथा जन संगठन उभारने की कोशिश नहीं की जाती।

'दक्षिण देश' की ओर से हुगली जिले के एक और कलकत्ता जिला कमेटी के एक क्रमशः कामरेड दीपक सरकार और कामरेड अवनि राय प्रतिनिधित्व करते थे। मगर वितर्कित सवालों पर कामरेडों ने जो तर्क रखा उससे नेतृत्व की नापसंदी की प्रतिक्रिया हुई और कमेटी के पुनर्गठन के बहाने हमारे प्रतिनिधियों को हटाकर नयी कमेटियां गठित की गई। और इस तरह को–ऑर्डिनेशन कमेटी से हमारा रिश्ता खत्म हो गया।

उक्त लेख के अंत में हमने उल्लेख किया था कि पाठकों, कार्यकर्ताओं और हमदर्दों को याद दिलाना चाहिए कि अतीत के अनुभव हमें यही सिखाते हैं कि आदर्शवादी संघर्ष के बीच से ही क्रांतिकारी एकता मजबूत हुई है और हो रही है। अर्थवाद के खिलाफ संग्राम के जरिये ही क्रांतिकारियों की एकता और सुदृढ़ होगी।

इस संघर्ष को केंद्र में रखकर अनेक सवाल उठे हैं और उठते रहेंगे। तमाम सवालों का समाधान रातोंरात नहीं होगा। बातचीत चल रही है, चलती रहेगी। और इसी के बीच से हम सही सिद्धांत/फैसले पर पहुंच सकेंगे। बहस के मौजूदा स्तर पर आलोचनाओं के गैर दोस्ताना जवाब देने के बजाय हम जरूर दोस्ताना रूख अपनाने के पक्षपाती हैं। पर हमें अवश्य ही उदारवाद को खारिज करना होगा।

शिक्षित करने का यही अपरिहार्य तरीका है। ''विकृत राजनीतिक प्रचार आंदोलन तथा व्यापक राजनीतिक खुलासा (बे–नकाब करना) जनता को क्रांतिकारी कामकाज में शिक्षित करने की यही अपरिहार्य और मौलिक शर्त है।'' (क्या करें– लेनिन)

को–ऑडिनेशन कमेटी में वितर्क चलाते हुए हमने यह भी कहा था कि आज की विशेष भौतिक परिस्थितियों को समझना चाहिए। वर्तमान युग साम्राज्यवाद यानी पूंजीवाद के पतन का युग है। एशिया, अफ्रीका एवं लातीनी अमेरिकी देश हैं क्रांतिकारी झंझावाती (तूफानी) केंद्र। वर्तमान भारत में एक बेमिसाल क्रांतिकारी परिस्थिति मौजूद है। मजदूर–किसान आंदोलन में एक नयी ज्वार आयी है। जो क्रांतिकारी चेतना इस स्वतःस्फूर्त उभार को क्रांति की ओर मोड़ सकेगा, वही समाजवादी–जन–गणवादी चेतना की सृष्टि कर सकेगा। इसके साथ मजदूर वर्ग के नेतृत्व में उसकी तानाशाही क्रांतिकारी परिस्थिति में ऐसी चेतना का संचार करना ही वर्तमान दौर में क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण काम है।

यह इसलिए भी और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि अतीत में (अविभाजित पार्टी में) इस काम से बचा (कन्नी काटा) जाता रहा है और इसीलिए यह काम बचा रह गया है। फिर कहना पड़ रहा है कि जो मजदूर–किसान जनता में जाएंगे, वे सैद्धांतिक प्रचारक के रूप में, प्रचंड आंदोलन के सर्जक के रूप में, तथा संगठक के तौर पर जायेंगे। क्रांतिकारी सिद्धांत के बिना क्रांतिकारी आंदोलन नहीं होता, क्रांतिकारी संगठन नहीं बनता और संघर्ष के हर स्तर पर, हर मोड़ पर इसे जरूर याद रखना चाहिए।

को–ऑर्डिनेशन कमेटी के सामने और भी जो तमाम बहस के मुद्दे पेश किये थे, उसमें अहम मुद्दा था नेतृत्व की पद्धति क्या होगी। किस विषय में बातचीत हो और बातचीत के जरिये जनवादी तरीके से फैसले पर पहुंचें, इन की जगह पुराने तरीके से नौकरशाही ढंग से ऊपर से फैसले थोपे जाते। माओ की शिक्षा के अनुसार जैसा होना चाहिए कि प्रायोजित इलाके में एक तिहाई नेतृत्व को वास्तविक व प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने की पद्धति अपनाकर आगे बढना चाहिए। पर ऐसा न कर जन–आंदोलन व जन–संगठन के रूप के बतौर पुरानी संशोधनवादी धारा को ही पकड़ के रख रहे हैं। दीर्घकालीन जनयुद्ध की

चुनावों से पहले, खाद्य आंदोलन के दौरान मुख्यमंत्री प्रफुल्ल सेन ने जो व्यापक अत्याचार और दमन चलाया था, उसकी प्रतिक्रियास्वरूप संयुक्त फ्रंट सरकार ने उपरोक्त घोषणा की थी। इस घोषणा के बावजूद सीपीआई (एम) का नेतृत्व असल में कामरेड स्तालिन की एक महरूत्वपूर्ण शिक्षा की बात को दबा गये थे। जहां स्तालिन ने कहा था, ''बुर्जुआ जनवादी सरकारें जहां पुराना राज्यतंत्र कायम हैं, उस सरकार में अगर कम्युनिस्ट या समाजवादी हिस्सा लेते हैं, तो चाहे जितने भी ईमानदार, जनता के प्रति हमदर्द और ''भले आदमी'' क्यों न हो, असल में उन्हें साम्राज्यवादी–पूंजीवादी वर्ग के हित साधने के लिए ही काम करना पड़ेगा और जनता के हितों के खिलाफ खड़ा होना पड़ेगा।'' कामरेड स्तालिन की यह सीख कितनी सटीक है, इसे हमने नक्सलबाड़ी संग्राम के परिप्रेक्ष्य में देखा है और अब तक देख रहे हैं।

संयुक्त–फ्रंट सरकार के गठन के कई महीने बाद (संभवतः 25 मई को) पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी थाना क्षेत्र तथा उसी के साथ सटे खड़ीबाड़ी और फांसीदेवा पुलिस थाना इलाकों में सशस्त्र किसान संघर्ष का उभार हुआ। यहां अखिल भारतीय किसान सभा के नेता (और अब पं. बंगाल कृषि मंत्री) हरेकृष्ण कोणार के आदेशों से पुलिस ने आंदोलनकारियों पर गोलियां चलाई और दो बच्चों सहित 11 किसान महिलाओं की हत्या कर दी (यहां विस्तृत रूप से इस घटना के उल्लेख की जरूरत नहीं)। इस तरह संयुक्त–फ्रंट सरकार जनता की व्यापक आकांक्षाओं और आशाओं के खिलाफ जोतदार, जमींदार और प्रतिक्रियावादी ताकतों के हितों की रक्षक के तौर पर राज्यतंत्र के पहरेदार के रूप में आ खड़ी हुई। नक्सलबाड़ी के इस महान किसान विद्रोह ने सिर्फ प. बंगाल में ही नहीं, सारे भारत के शोषक–शासक वर्ग को ही हिलाकर रख दिया। इस आंदोलन के राजनीतिक–सैद्धांतिक नेता थे सीपीआई (एम) के दार्जिलिंग जिला कमेटी के (जितना मुझे याद है) कामरेड चारु मजुमदार। नक्सलबाड़ी आंदोलन के वही रूपकार थे और सांगठनिक क्षेत्र में मुख्य भूमिका थी कामरेड कानू सन्याल, कामरेड कोदम मल्लिक, खोकन मजुमदार, पंचानन सरकार आदि किसान नेताओं की। सीपीआई (एम) की संशोधनवादी दिशा के खिलाफ जो सैद्धांतिक और राजनीतिक संघर्ष चलाते आ

रहे थे, उत्तर बंग में उपरोक्त कामरेड ही उन में से प्रमुख थे।

यह याद रखना होगा कि महान नक्सलबाड़ी किसान उभार बंगाल तथा भारत में जारी अन्य किसान आंदोलनों की तरह प्रचलित कानूनों और प्रशासन का वर्चस्व मानकर जनता को कुछ ''दिला देने'' की लड़ाई नहीं थी। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि में क्रांतिकारी राजनीति के अंतर्गत शोषित–पीड़ित जनता की मुक्ति तथा राजसत्ता पर कब्जा करने का लक्ष्य दिखाने की प्रचेष्टा थी। यह आंदोलन साम्राज्यवाद, पूंजीवाद तथा सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ मुक्ति के पथ के तौर पर चुनाव के रास्ते नहीं, बल्कि यह दिखा रहा था कि चीन की क्रांति की तरह दीर्घकालीन जनयुद्ध का रास्ता ही मुक्ति का सही रास्ता है। आंदोलन के नेतृत्व ने हिम्मत के साथ वास्तविक प्रयोग के जरिये भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में चली आ रही अवसरवादी, संशोधनवादी दिशा में फंसे रहने की बाधादायी स्थिति को चट्टान की तरह तोड़ दिया था और कम्युनिस्ट आंदोलन एक नया इतिहास रचने में कामयाब रहा।

हालांकि यह मानना होगा कि चीनी क्रांति के रणनीति के इस्तेमाल के मामले में नक्सलबाड़ी पहला पथ प्रदर्शनकारी नहीं था। नक्सलबाड़ी के नेतृत्व के प्रति पूरी श्रद्धा और निष्ठा के बावजूद कह रहा हूं कि इसका इस्तेमाल पहले पहल भारत में तेलंगाना के महान किसान संग्राम (1945–51) के दौरान हुआ था। आंध्रप्रदेश की पार्टी के कार्यकर्ताओं ने इसी लाइन के आधार पर तेलंगाना के करीब 3,000 गांवों को मुक्त किया था, जनता की राजनीतिक सत्ता कायम की थी, और कई हजार सशस्त्र दलम (छापामार स्क्वाड्स) खड़े किये थे।

हालांकि उस समय सीपीआई नेतृत्व के विश्वासघात के चलते नेहरू सरकार ने बड़े पैमाने पर फौजी अभियान चला कर इस आंदोलन को कुचल दिया था। पार्टी के अवसरवादी नेतृत्व ने नेहरू सरकार के साथ समझौता करते हुए क्रांतिकारियों को आत्मसमर्पण करने को मजबूर किया और तमाम हथियार केंद्रीय सरकार की फौजों को सौंप दिये।

तेलंगाना के लड़ाकू नेतृत्व के साथ नक्सलबाड़ी के नेतृत्व का अंतर यह था कि तेलंगाना का नेतृत्व विश्वासघाती पार्टी केंद्रीय नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह नहीं कर पाया। उनकी इसी कमजोरी के चलते उन्होंने पार्टी की

दुश्मन के साथ नूराकुश्ती के अलावा कुछ भी नहीं हैं। (सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास – लेनिन)

महान कार्ल मार्क्स ने इस विषय की व्याख्या इस तरह की – ''मजदूरी प्रथा के भीतर जो दासता निहित हैं, उसकी बात न भी करें, तब भी मजदूर वर्ग के रोजमर्रे के संघर्षों की चोटी के परिणाम को अपने में अतिरंजित कर के देखना उचित नहीं है। उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि संघर्ष के परिणाम कारकों के खिलाफ नहीं हैं। उन्होंने उद्योग की गति धीमी किया है, उस गति की दिशा को नहीं बदल रहे हैं। वे बीमारी पर मरहम जरूर लगा रहे हैं, पर उसे खत्म नहीं कर रहे हैं। पूंजी (मूलधन) के लगातार हमले के चलते तथा बाजार के हेरफेर से जो लगातार छापामार युद्ध का जन्म हो रहा है, उसी में अपने आपको डुबोये रखना उचित नहीं है। (मजदूरी दाम मुनाफा – मार्क्स)

हमारी राय से (दक्षिण देश) कम्युनिस्ट सुधारों के लिए भी संघर्ष करते हैं। सुधार के लिए भी संघर्ष करते हैं। मगर समाजवाद के लिए सुधार को क्रांतिकारी संघर्ष के मातहत रखना चाहते हैं। वस्तुतः आर्थिक संग्राम, कम्युनिस्टों की दृष्टि में सभी संघर्ष, समाजवाद के लिए चल रहे संघर्ष का ही हिस्सा है। यहां कहना होगा कि ''अंतिम लक्ष्य तथा आर्थिक कर्तव्य की घोषणा करके (को–ऑर्डिनेशन कमेटी में जैसा कि कुछ लोगों ने किया) कुछ प्रस्ताव लेना भर काफी नहीं हैं या फिर ऐसे प्रस्तावों के समाचार दो–एक सामयिक अखबारों में छपवा लेना ही काफी नहीं है। जनता के आंदोलन जिसमें आर्थिक, सामयिक, आंशिक मांगे होंगी, उन्हीं में उलझे न रहते हुए जो सच्चा क्रांतिकारी आंदोलन कहा जा सकता हो, ऐसे मजदूर वर्ग की तानाशाही के लिए, समाजवाद के लिए क्रांतिकारी संघर्ष के पथ पर ताकि आगे बढ़ सके, इसके लिए तमाम कम्युनिस्टों के लिए यह एक महत्वपूर्ण काम है, मजदूरवर्ग तथा जनता को क्रांतिकारी आदर्श से प्रेरित करना, उन्हें उनकी वर्ग–स्थिति की चेतना तथा कर्तव्य की चेतना से प्रेरित करना।''

कामरेड लेनिन की राय में सर्वहारा और जनता को उनकी स्थिति की चेतना और कर्तव्य की चेतना में समाजवाद तथा लोकतंत्र की चेतना से प्रेरित कर मजदूर वर्ग तथा जनता को क्रांतिकारी चेतना से प्रेरित कर, उन्हें राजनीतिक आंदोलन में खींच लाने तथा जनता को क्रांतिकारी कामकाज में

अस्वीकार करते थे) मार्क्स–एंगेल्स ने अपने दोस्त ईब्लाक को लिखी चिट्ठी में कहा था – ''तरुण युवक जो कई बार आर्थिक पहलू पर जितना चाहिए उस से कहीं ज्यादा जोर देते हैं, जिसके लिए मैं और मार्क्स ही किसी हद तक जिम्मेदार हैं, हमारे विरोधी मत के लोग (जैसे बाकुनिन तथा अन्य) आर्थिक संघर्षों के महत्व को अस्वीकार करते थे, इसी कारण आर्थिक संघर्ष के विषयों को हमें महत्व देना पड़ा।'' –एंगेल्स

सवाल उठता है कि आर्थिक मांगों को लेकर संघर्ष की जरूरत को अस्वीकार नहीं किया जा रहा है, परंतु इसी को वर्गसंघर्ष और राजनीतिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करना अवसरवादी तथा सुधारवादी कार्य है। केवल इसी में संघर्ष को सीमित रखना, क्रांतिकारी राजनीति को जुबानी तौर पर मान लेने के बावजूद उसे व्यावहारिक क्षेत्र में शासक वर्ग के लिए स्वीकार्य बनाये जाने के चक्कर में फंसाए रखना संशोधनवादी काम है।

अर्थवादियों के साथ कम्युनिस्टों के विरोध की विषयवस्तु यह कतई नहीं कि अर्थवादी, आंशिक या सामयिक मांगों पर संघर्ष करते हैं और कम्युनिस्ट लोग ऐसे संघर्षों से अलग रहते हैं। कम्युनिस्ट भी आर्थिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। पर जैसा कि कामरेड लेनिन ने कहा – ''कम्युनिस्ट सिर्फ ऊंची शर्तों पर श्रमशक्ति बेचने भर के लिए मजदूर आंदोलन का नेतृत्व नहीं करते। जिस समाज व्यवस्था में मजदूर वर्ग धनी के पास आत्मविक्रय (खुद को बेचने) को मजबूर होते हैं, उस व्यवस्था की समाप्ति (विलोप) के लिए भी वे नेतृत्व देते हैं।'' ("क्या करें" – लेनिन)

और इसके लिए कामरेड लेनिन ने काफी जोर देकर कहा है कि ''कम्युनिस्ट किसी भी तरह के अर्थिक संघर्षों तक ही खुद को सीमित नहीं रखेंगे। केवल यही नहीं, यहां तक कि आर्थिक स्वरूप को बेनकाब (खुलासा) (Expose) करना भी उनके कामकाज का प्रधान हिस्सा नहीं हो सकता। धनवादी (पूंजीवादी) व्यवस्था को खत्म करने के लिए राजनीतिक विकास के काम में भी वे सक्रिय रूप से हिस्सेदारी करें। कम्युनिस्ट फिर भी आर्थिक मांगें हासिल करने के आंशिक संग्रामों में भी भूमिका निभाते हैं। मगर कम्युनिस्टों को अवश्य याद रखना होगा कि सरकार के साथ मांग के लिए लड़ाई या छोटी–मोटी मांगों की आंशिक पूर्ति, दुश्मन के साथ थोड़ी बहुत हाथापाई या

सांगठनिक श्रृंखला को तरजीह देते हुए आत्मसमर्पण करना स्वीकारा। जबकि नक्सलबाड़ी के लड़ाकू नेतृत्व ने हिम्मत के साथ विद्रोह कर इस संघर्ष का सृजन किया और संयुक्त–फ्रंट सरकार के विश्वासघाती चरित्र (स्वभाव) को बेनकाब करते हुए मुक्ति आंदोलन की सही दिशा दिखलायी।

^^nf{k.k ns'k** laxBu ds Lora= iz;kl ls if'pe caxky esa dke dh izkjfEHkd igy

'दक्षिण देश' पत्रिका को केन्द्रित कर जो राजनीतिक वातावरण विकसित हुआ उसे एक सांगठनिक रूप दिया गया और शहर में मौखिक प्रचार कार्य तक ही कार्यकर्ताओं को फंसाए न रखते हुए योजनाबद्ध तरीके से निजी प्रयास से मजदूर बस्तियों, छात्र फ्रंट एवं ग्रामीण इलाकों के कामों के साथ उन्हें जोड़ने का बीड़ा उठाया गया। 1967 में जो तमाम कार्यकर्ता मजदूरों और छात्रों के बीच काम कर रहे थे, उनमें से कोई भी पेशेवर क्रांतिकारी नहीं थे। हमारे सामने यह सवाल था कि क्या शहर ही में काम सीमित रहेगा या देहाती इलाके में भी काम शुरू करने की पहल होगी। उस समय हमारा गांवों से कोई संपर्क नहीं था। इसीलिए शहर में काम जारी रखने के साथ ही देहातों में संपर्क बनाने के लिए और वहां कृषि क्रांति की राजनीति के आधार पर संगठन गठित करने का जिम्मा एक मध्यमवर्गीय कार्यकर्ता को दिया गया।

उस समय के वास्तविक परिस्थिति के मद्देनजर केवल गैर–पेशेवर कार्यकर्ताओं के साथ ही काम शुरू किया गया। केवल शहर में बैठ राजनीतिक बहस–मुबाहिसा न करते रहे, आसानी से जो भी संपर्क देहाती इलाकों में मिल रहे थे, अनुभव हासिल करने के लिए उसे ही अपनाया गया। कलकत्ते के पास सोनारपुर थाना क्षेत्र के ''डिही'' गांव में आये संपर्क के जरिये कृषि क्रांति की राजनीति के आधार पर जनता को गांवों में संगठित करना, सीपीआई (एम) के अवसरवादी संशोधनवादी स्वरूप को उघाड़ना तथा नये तर्ज पर जन संगठन और जन आंदोलन (कृषक संगठन) बनाने के लक्ष्य से स्थानीय किसान कार्यकर्ताओं के (ये लोग सीपीआई (एम) के किसान संगठन से जुड़े थे) बीच काम शुरू हुआ। बाद के दिनों में ''डिही'' गांव की जनता की हमारी राजनीति

के प्रति आस्था और उनकी लड़ाकू मानसिकता को देख काम के विस्तार एवं निर्दिष्ट तौर पर सामंती वर्ग तथा दूसरे प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ संघर्ष की संभावनाओं को देख आंदोलन खड़ा करने की वास्तविक स्थिति को हथियाने की गरज से दो पेशेवर कार्यकर्ताओं को ''डिही'' के काम से जोड़ा गया। इनमें से एक कारखाने का मजदूर था और एक छात्र– मेरा छोटा भाई। यही दो लोग हमारे संगठन के सबसे पहले पेशेवर क्रांतिकारी थे जो ग्रामीण काम से जा जुड़े थे। मजदूर कामरेड (परेश दा) कारखाने के काम से इस्तीफा देकर संगठन के पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने। बाद में वे एकताबद्ध पार्टी माओवादी पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य बने (हाल ही में असम में गिरफ्तार हो गये)। उसी साल बर्धमान जिले के कांकसा थाने के जंगलमहल में मध्यमवर्गीय नौकरीपेशा कामरेड को पेशेवर संगठक के तौर पर भेजा गया। इसके अलावा हावड़ा, हुगली, चौबीस परगना जिलों में भी छात्र कामरेडों को पेशेवर कार्यकर्ताओं के तौर पर भेजा गया।

उन दिनों देहातों में संपर्क बनाने के लिए खास दो कदम उठाये गये थे। मैं खुद अपने कारखाने के मजदूरों में जो लोग आसपास के गावों से आते थे, उन से बात कर हर शनिवार छुट्टी के बाद उनके गांव स्थित मकान में जाया करता। वहां रविवार भी सारा दिन दूसरे किसानों से संपर्क और बातचीत में बिताता और फिर सोमवार को अलसुबह लौट आता।

शहरों में जो मजदूरों के बीच काम कर रहे थे, उन्हें मजदूर बस्तियों में रहने पर जोर दिया जाता था। उन्हीं बस्तियों में रहने के चलते दक्षिण कलकत्ता के विभिन्न कारखानों में संपर्क मिलते रहे। इन्हीं संपर्कों के आधार पर 'भारतीया' 'बेंगॉल लैंप', 'कैलकैटा केमिकल्स', 'न्यू अलेन बेरी', 'राय इंजिनियरिंग', 'न्यू इंडिया टूल्स' आदि कारखानों में यूनियन कार्यकलापों में अगुआ भूमिका लेकर तथा इन मजदूरों को कृषि क्रांति की राजनीति में खींच लाया गया और शहर के विभिन्न कामों से उन्हें जोड़ा गया।

नक्सलबाड़ी के किसान संग्राम ने पूरे पश्चिम बंगाल में तथा भारत के तमाम वामपंथी राजनीतिक कार्यकर्ताओं में एक विशाल उद्दीपन की सृष्टि की। सीपीआई (एम) की धोखेबाजी तथा शासकवर्ग के तौर पर उनका मजदूर, किसान व अन्य जनवादी ताकतों के खिलाफ साम्राज्यवाद–पूंजीवाद तथा सामंतवाद के हितरक्षकों की हैसियत से संयुक्त–फ्रंट सरकार द्वारा नियुक्त

बातें –स्तालिन)

'वर्ग संघर्ष' के सिद्धांत को उदारनीतिवाद और संकीर्णतावादी दृष्टिकोण को उघाड़ने के सिलसिले में लेनिन ने कहा, – ''इतना भर कहना काफी नहीं है कि वर्ग संघर्ष जब राजनीति के साथ संपर्क में आता है केवल तभी उसे सही मायनों में (संगतियुक्त) (Logical) और /तालमेलपूर्ण और हिरावल वर्ग का संग्राम माना जा सकता है।..... सिर्फ राजनीति से लैस ही नहीं बल्कि जब वह राजनीति के साथ–साथ सबसे मौलिक/बुनियादी चीज यानी राजसत्ता के ढांचे को भी शामिल करता है। उदारवादी लोग जब राजनीति के क्षेत्र में वर्ग संघर्ष को स्वीकारने को तैयार हैं, पर उन की एक ही शर्त है कि इसमें वे राजसत्ता के ढांचे के विषय को शामिल करना स्वीकार नहीं करेंगे।'' (वर्ग–संघर्ष में उदारवादी तथा मार्क्सवादी उपलब्धि के बारे में –लेनिन)

कामरेड लेनिन ने और भी कहा है – ''अक्सर ऐसा कहा जाता रहा है कि मार्क्सवाद की अंतर्वस्तु है वर्ग–संघर्ष। मगर यह सच नहीं है। इसी भूल से विभिन्न क्षेत्रों में अवसरवाद–सुलभ विकृति दिखाई देती हैं। बुर्जुआओं के लिए स्वीकार्य (ग्रहणीय) बनाने के लिए मार्क्सवाद को ऐसा मिथ्या रूप दिया जाता है। वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का मार्क्स ने आविष्कार नहीं किया। मार्क्स से पहले ही बुर्जुआ वर्ग ने इसका पता लगाया था और आम तौर पर कहा जाय तो यह सिद्धांत बुर्जुआज़ी के लिए ग्रहणीय है। जो सिर्फ वर्ग संघर्ष को स्वीकारता है, वह वास्तव में मार्क्सवादी नहीं हो पायेगा। बुर्जुआसुलभ तर्क और राजनीति के घेरे से वह बाहर नहीं निकल पाया है। वर्ग संघर्ष के सिद्धांत में मार्क्सवाद को सीमित कर देने का मतलब (तमाम अवसरवादी, अर्थवादी तो यही करते हैं) है, मार्क्सवाद की काट–छांट करना, मार्क्स को विकृत करना, बुर्जुआ के लिए स्वीकार्य किसी सिद्धांत में इसे बदल देना। वही मार्क्सवादी हैं, जो वर्ग संघर्ष को स्वीकारने से और आगे बढ़कर वर्ग के वर्चस्व को भी स्वीकार करे। एक मार्क्सवादी और एक छोटे या बड़े बुर्जुआ में यही गहरा फर्क है। मार्क्सवाद को कोई यथार्थ में स्वीकार कर सका है, अपना सका है या नहीं, इसे इसी पारस के पत्थर से जांचना होगा।'' (राज्य और क्रांति –लेनिन)

अर्थवादी संग्राम को महत्व देने के मामले में अराजकतावादी बाकुनिन के साथ (जो किसी भी आर्थिक संग्राम की जरूरत को ही सिरे से खारिज या

से उस समय को–ऑर्डिनेशन कमेटी के मुखपत्र ''देशब्रती'' में एक लेख छपा जिसका शीर्षक था– ''एक खतरनाक लाइन'', जहां दक्षिणदेश में प्रकाशित उस लेख की अमित्रतापूर्ण स्वरूप की आलोचना की गई थी। ''एक खतरनाक लाइन'' के जवाब में हमने 'दक्षिण देश' पत्रिका में (3 अगस्त 1968) ''अर्थनीतिवाद के खिलाफ और कुछ बातें'' शीर्षक से एक और निबंध प्रकाशित किया। इस निबंध में हमने कहा था – अर्थवाद के खिलाफ संघर्ष का सवाल फिलहाल काफी महत्व हासिल कर रहा है। 'दक्षिण देश' हमेशा से यही कहता आया है कि अर्थवाद के खिलाफ संग्राम, संशोधनवाद और अवसरवाद के खिलाफ जारी संघर्ष का ही अभिन्न अंग है। आर्थिक संघर्ष और अर्थवाद एक नहीं हैं। अर्थवाद के खिलाफ संघर्ष के बिना क्रांतिकारी सिद्धांत की स्थापना और उसका प्रचार संभव नहीं है। मजदूर वर्ग तथा जनता के विपुल हिस्से में आदर्श और राजनीतिक चेतना उज्जीवित करना (जागृत करना) संभव नहीं। उसे क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यकलापों में सक्रिय बनाना संभव नहीं है। जनता को क्रांति के पथ पर चला पाना संभव नहीं है और क्रांति के चालक के तौर पर पार्टी का गठन संभव नहीं है।

रूस में उस समय के अर्थवादियों के खिलाफ कामरेड लेनिन ने काफी जोरदार संघर्ष चलाया था। उसका तात्पर्य तथा उसका अनुशीलन (अमल), वर्तमान समय में इस पर गौर करना बहुत जरूरी है। स्वतःस्फूर्तता, सुधारवाद तथा अवसरवादी सिद्धांत, क्रांतिकारी राजनीति के साथ इनका अस्तित्व रहता आया है। इसे ठीक तरह से चिन्हित कर, उसके खिलाफ सैद्धांतिक संघर्ष न चला कर क्रांतिकारी राजनीति का विकास संभव नहीं, उसका विकास भी संभव नहीं है। अवसरवादियों को चिह्नित करने के मामले में लेनिन कहते हैं, ''एक अवसरवादी जो कोई सूत्र मान लेता है, उतनी ही तेजी से उसे त्याग भी देता है। कारण (उसमें) किसी निर्दिष्ट दृढ़ नीति की कमी, यही सुविधावाद है।'' ("क्या करें" से)।

बहुत कम शब्दों में स्वतःस्फूर्ततावादियों, अर्थवादियों और अवसरवादियों के स्वभाव का विश्लेषण करते हुए कामरेड स्तालिन ने कहा है, ''आन्दोलन ही सब कुछ हैं। चेतना महत्वपूर्ण नहीं। समाजवाद को ही बगल में छोड़ कर वे इसी लिए आंदोलन करते जा रहे हैं।'' (पार्टी के बीच मतभेदों के बारे मे कुछ

पहरेदार के तौर पर खड़ा होना, आदि बातें उसकी असलियत को बेनकाब करने वाला साबित हुई। सीपीआई (एम) के बहुत से नेता, कार्यकर्ता और समर्थकों का मोह भंग हुआ और वे विद्रोह कर पार्टी छोड़ बाहर निकल आये। इसके अलावा, सीपीआई, आरएसपी और एसयूसीआई आदि पार्टियों से भी अपनी–अपनी पार्टियों से विद्रोह कर कई कार्यकर्ता बाहर निकल आये। खासकर छात्र–युवाओं में आंलोदन का संचार हुआ। इस राजनीतिक वातावरण में सीपीआई (एम) का मुखौटा उतारने के लिए नाटककार उत्पल दत्त और प्राध यापक अमियभूषण चक्रवर्ती ने एक उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उत्पल दत्त ने अपने नये नाटकों, ''तीर'' और ''दिन बदलेर पाला'' के जरिये नक्सलबाड़ी के संग्राम को ऊंचा उठाकर पेश किया और सीपीआई (एम) के विश्वासघाती स्वरूप को उघाड़कर बे–पर्दा कर दिया।

'दक्षिण देश' ने शुरू से ही नक्सलबाड़ी के संग्राम को ऊंचा स्थान दिया। नक्सलबाड़ी की राजनीति को केंद्र में रखकर कई समूह बने, ये तमाम समूह अपनी–अपनी स्वतंत्रता बनाये रखते हुए, अलग अलग पत्रिकाएं प्रकाशित कर रहे थे। नक्सलबाड़ी के संग्राम का समर्थन करने के साथ–साथ वे इसकी राजनीति की अलग–अलग ढंग से व्याख्याएं करते रहे। पूरे भारत में क्रांतिकारी लोग हालांकि इस संग्राम के पक्ष में खड़े हो रहे थे, पर विभिन्न व्यक्ति और समूह और संगठन कृषि क्रांति की राजनीति, भारत के राज्य का स्वभाव तथा नया उपनिवेशवाद, अर्ध औपनिवेशिक, अर्ध सामंती अर्थ व्यवस्था की व्याख्याओं में तरह–तरह की भ्रांतिमूलक वक्तव्य रखने लगे, जिसके फलस्वरूप एक चूंचूं का मुरब्बा (जगाखिचुड़ी) नुमा जटिलता उभरी।

जहां पश्चिम बंगाल का यह हाल था, तो अन्य राज्यों में भी सीपीआई (एम) पार्टी में फूट हुई। खासकर आंध्र प्रदेश, तामिलनाडू, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और असम आदि राज्यों के तमाम विद्रोही कामरेड सीपीआई (एम) से बाहर आ गये और अलग संगठन बनाने की कोशिश में जुट गये। भले ही ये सभी नक्सलबाड़ी के सशस्त्र विद्रोह का समर्थन तो करते थे, पर इनमें कोई–कोई संसदीय चुनाव व्यवस्था का रणकौशल (दांवपेंच) के तौर पर इस्तेमाल करने की वकालत करने वाले भी थे। उनकी पत्र–पत्रिकाओं में वे तरह–तरह की भ्रामक व्याख्याएं करते रहे। सैद्धांतिक स्तर पर ऐसा मानने के बावजूद कि

आमतौर पर नक्सलबाड़ी के सशस्त्र संग्राम एवं चीन की राह ही भारत की क्रांति के लिए उचित है, इसके प्रयोग की राजनीति के सवाल पर अलग–अलग राय रखते थे। अतः सहमति का अभाव दिखता रहा। इसी के परिणामस्वरूप निकट भविष्य में एक नयी क्रांतिकारी पार्टी के गठन के काम का संग्राम, संगठन के विभिन्न रूप, नेतृत्व की पद्धति, काम की धारावाहिकता के सवाल पर एक मत पर पहुंचने में भारी जटिलता की सृष्टि हुई।

dk&vkfMu'ku deVh dk xBu vkj gekjk fordi

इसी दौरान उत्तर बंग के कामरेडों के साथ हमारा संपर्क हुआ। हम का. चारू मजुमदार के घर पर, सिलिगुड़ी जा कर उनसे मिले। निहायत ही सौहार्द्रपूर्ण परिवेश में विभिन्न विषयों पर हमारी उनसे बातचीत हुई। कामरेड कन्हाई चटर्जी ने उनके सामने कई प्रस्ताव रखे। का. कन्हाई चटर्जी ने कहा कि बहुत से लोग ''नक्सलबाड़ी जिंदाबाद'' ''माओ–त्से–तुङ विचारधारा जिंदाबाद'' के नारे तो लगा रहे हैं, पर वे इसकी अंतर्निहित राजनीति, सिद्धांत, लक्ष्य, संग्राम का पथ आदि के बारे में असंपूर्ण और उथला या ऊपरी ज्ञान ही रखते हैं। फलस्वरूप इस राजनीति को केंद्र में रखकर तरह–तरह की भ्रांतियां और जटिलताएं फैल रही है। बहुत अवसरवादी लोग भी इस राजनीति के पक्ष में आ खड़े हुए हैं और वे तरह–तरह के स्टैण्ड (Stand) या दृष्टिकोण ले रहे है। लिहाजा नक्सलबाड़ी किसान विद्रोह के बाद सीपीआई (एम) के खिलाफ विद्रोह कर क्रांतिकारी राजनीति के पक्ष में जो सुंदर वातावरण बना है उसका इस्तेमाल करते हुए आनेवाले दिनों में भारत की धरती पर एक क्रांतिकारी पार्टी के गठन के लिए इस उपयुक्त वातावरण को काम में लाने के लिए कई कदम उठाने की जरूरत है।

जैसे, (1) तमाम भिन्न मत तथा राजनीतिक भ्रम दूर करने के लिए एक राजनीतिक दस्तावेज तैयार करना जरूरी है, जिसकी रचना की जिम्मेवारी नक्सलबाड़ी के कामरेडों पर हो।

(2) इस दस्तावेज के आधार पर सही बातचीत के लिए पश्चिम बंगाल के विभिन्न समूहों की एक को–आर्डिनेशन कमेटी बनायी जाय और राजनीतिक

दस्तावेज के आधार पर बातचीत के जरिये सिद्धांत, राजनीति और संग्राम के पथ के विषयों पर अधिकांश में सहमति हासिल करने के बाद इस नयी पार्टी के गठन का काम शुरू किया जा सकता है।

कामरेड चारू मजुमदार ने हमारे प्रस्तावों से सहमति जताई और कहा कि जल्द ही को–ऑर्डिनेशन कमेटी का गठन किया जाएगा।

इस चर्चा के कई महीने बाद 1968 के जून महीने के बाद पश्चिम बंगाल राज्य स्तर पर नयी को–ऑर्डिनेशन कमेटी का गठन हुआ। इसके भी कई महीनों बाद अखिल भारतीय को–ऑर्डिनेशन कमेटी का गठन भी हुआ।

मगर जिस तरह से पश्चिम बंगाल राज्य में इसका गठन हुआ, हम उससे इत्तेफाक नहीं रखते थे। पश्चिम बंगाल में राज्य तथा जिला स्तरीय कमेटियों में कई अवसरवादियों को घुसपैठ करने का मौका मिला। ये तमाम जाने–माने अवसरवादियों के काम की धारा–पद्धति में नेतृत्व के तौर तरीकों एवं संघर्ष और संगठन के रूप के सवाल पर संशोधनवादी, स्वतःस्फूर्तवादी पद्धति का ही निर्वाह कर रहे थे। संशोधनवादी पार्टी के विरासत के चलते इस तमाम कूड़ा–करकट को विसर्जित कर कृषि क्रांति की राजनीति के आधार पर जनता में काम की नयी धारा, प्रचार की धारा और जनता के साथ एकजुट होने की प्रक्रिया और खुद को वर्गच्युत करने की कोई प्रक्रिया वे नहीं चलने देना चाहते थे। उनकी ये तमाम चिंताएं तथा कार्यकलापों के खिलाफ सवाल उठाने या आलोचना करने पर झट संशोधनवादी तरीके से लंगड़ी मार कर और किनारे कर देने का तरीका बरकरार रहा। खासकर वे पुरानी धारा के सुधारवादी अवसरवादी और अर्थवादी दिशा को ही जारी रख रहे थे। कृषि क्रांति की राजनीतिक दिशा के आधार पर क्रांतिकारी संग्राम उभारने के लिए नयी विचारधारा की रोशनी में आदर्शवादी चेतना तथा कर्तव्य की चेतना उभार कर आत्मत्यागी, ईमानदार तथा आदर्शवादी अग्रणी योद्धा तैयार करने के कार्य में यह बड़ी बाधा बन कर आ खड़ी हुई थी। इस तरह के हालात में नैतिक तथा कर्तव्य के तकाजे से इसके खिलाफ संग्राम करना 'दक्षिण देश' ने अपरिहार्य माना। इसी के फलस्वरूप 'दक्षिण देश' पत्रिका में (17 मई 1968) को एक महत्वपूर्ण लेख ''अर्थवाद के खिलाफ संघर्ष तेज कीजिए'' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। इस लेख के प्रकाशन के कुछ समय बाद ही असित सेन के नाम

कामरेड चंद्रशेखर दास ने की थी। वे सी.पी.आई. (एम) पार्टी के त्रिपुरा राज्य कमेटी के भूतपूर्व सदस्य रहे। कामरेड दास के अतीत जीवन में दिखाई पड़ता है कि 1938 में त्रिपुरा में अंग्रेजों की सत्ता के खिलाफ रियांग जन–जाति की जनता ने जो सशस्त्र विद्रोह किया, उस विद्रोह में उन्होंने सक्रिय रूप से हिस्सेदारी की थी। इस विद्रोह में उनकी हिस्सेदारी के चलते रियांग आदिवासियों के मन में उनके प्रति अपार श्रद्धा का सूत्रपात हुआ। त्रिपुरा में कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की प्रक्रिया में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान था। युवावस्था में वे कई बार गिरफ्तार होकर जेल भी गये। वहीं वे कम्युनिस्ट आदर्शों के प्रति प्रेरित हुए। सी.पी.आई.(एम) पार्टी में विद्रोह कर वे गुप्त रूप से 'चिंता' दस्तावेज के प्रकाशन में कामरेड अमूल्य सेन के साथ काम करते रहे।

अक्टूबर माह की उस बैठक के बाद वे अपने कार्यक्षेत्र दक्षिणी 24 परगना के भांगड़ थाना क्षेत्र के काठाल बेड़े गांव लौट गये। उस इलाके में संघर्ष और संगठन निर्माण के काम में जुड़े थे।

उस इलाके के सीपीआई के सदस्य अमर डॉक्टर एक प्रतिक्रियाशील व्यक्ति थे। उसके साथ स्थानीय जालिम जोतदार सतीश घोष का गहरा संबंध था। थाने के साथ भी उनका नियमित उठना–बैठना था। अमर डॉक्टर हमारे संगठन का केवल विरोध भर नहीं करता था बल्कि गुंडों से उन्हें पिटवाया भी था। झूठे मुकदमे में उन्हें फंसाया। 29 दिसंबर को अमर डाक्टर के नेतृत्व में एक गुण्डा दल ने काठाल बेड़े गांव पर हमला किया। स्थानीय किसानों ने उसका प्रतिरोध किया। किसान प्रतिरोध करते हुए गांव से कुछ दूरी पर चले गये। 65 वर्षीय कामरेड दास बीमार थे इसलिए वे किसानों के साथ सुरक्षित दूरी तक निकलकर नहीं जा पाये। वे अकेले पड़ गये। गुंडों ने पहले बम फेंक कर उन्हें घायल किया, फिर गोलियां मारी और अंत में उनके कान के बगल से बरछी घोंप कर बेरहमी से उनकी हत्या कर उनके शव को ठहरे पानी के दलदली मैदान (जलाभूमि) में फेंक दिया।

कामरेड दास की इस बर्बर हत्या से लोग व्यापक स्तर पर विक्षुब्ध हो उठे। बाद में शोक सभा की तथा जुलूस निकालकर अमर डॉक्टर के घर पर घेराव कर हमला किया। अमर डॉक्टर भाग खड़ा हुआ। एम.सी.सी. की

ने उसके खिलाफ प्रतिवाद करने और जुल्म के प्रतिकार की मांग करते हुए जोतदार के घर पर जुलूस की शक्ल में पहुंच कर आवाज उठायी। जोतदार ने उनकी एक नहीं सुनी उलटे कई अगुवा किसानों को बहुत पीटा। इससे गुस्साये किसानों ने जोतदार के घर पर हमला किया। जोतदार को पकड़कर एक पेड़ के साथ बांधकर रखा गया। बाद में 100–100 किसानों ने जोतदार के घर में प्रवेश कर जोतदार के धान, जो कोठे पर रखा हुआ था, वो कब्जा कर लिया। 150 मन धान किसानों के बीच बांट दिया गया। कर्जे के ऋणपत्र व रेहन के कागजात जला दिये गये। कपड़े लत्ते, बर्तन हांडी, रेहन रखे गये सामान जब्त कर लिये गए। आस–पास उथल–पुथल हो रहा था। अगले दिन समाचारपत्रों में खबर छपी जिसका शीर्षक था– ''क्या सोनारपुर किसान संघर्ष दूसरा नक्सलबाड़ी होने जा रहा है?''

इस समय की संयुक्त–फ्रंट सरकार ने व्यापक पुलिस उतार कर धड़–पकड़ शुरू की। मूल संगठक भूमिगत हो गये। कई किसान गिरफ्तार हुए। जोतदार के गुंडों ने प्रारंभ में तांडव मचाया। इलाके में पुलिस छावनी बैठा दी गयी। बाद में पुलिस के साथ संघर्ष में स्थानीय किसान नेता हाजरा सांपुई पुलिस की गोली से मारा गया।

ऐसी हालत में क्या करना चाहिए, हमने इसके लिए सलाह मांगने के इरादे से कामरेड चारू मजुमदार से मुलाकात की। उन्होंने आंदोलन का अभिनंदन किया । बाद में तय हुआ कि संगठक कामरेडगण इलाके में भूमिगत रूप से घूमते रहकर किसानों से संपर्क बनाये रखेंगे। साथ ही जुल्मपीड़ित परिवारों की सहायता करने का प्रस्ताव रखा गया। जिन सब किसानों के खिलाफ पुलिस केस थे, उन मुकदमों को देखने के लिए शहर की कमेटी को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गयी।

i'koj Økfrdkjh d rkj ij igyh ckj xko e tku dk vuHko

महान नक्सलबाड़ी किसान संग्राम के बाद सारे भारत में, खासकर पश्चिम बंगाल में क्रांतिकारी राजनीति का प्रसार और छात्र–युवाओं की अग्रणी

भूमिका ने खास योगदान किया। जरूरत हुई और एक पेशेवर क्रांतिकारी को गांव भेजने की। 'दक्षिण देश' की पहल से असम में इसी बीच काफी पेशेवर क्रांतिकारियों को भेजा गया। इनमें से अधिकतर छात्र–युवा और मध्यमवर्गीय परिवारों से आये थे। हमने तय किया कि इस काम में शहर में मजदूरों के बीच जिनका काम का अनुभव रहा है और संगठन बनाने के काम से जो जुड़े हुए हैं, अगुवा के तौर पर ऐसे लोगों को भेजा जाये। इस काम में उत्साहित करने के लिए ''सबसे बेहतरीन कम्युनिस्ट अभी तत्काल गांवों में जायें'' के शीर्षक से एक लेख छापा गया। इस लेख को लेकर तथा इसकी अंतर्वस्तु को लेकर संगठन में व्यापक चर्चा आयोजित की गयी। फलतः दो स्कूल शिक्षक, एक मध्यमवर्गीय कार्यकर्ता और तीन मजदूर कामरेडों ने देहातों में जाने के लिए आवेदन किये। मेरे कारखाने से भी दो मजदूर साथी इससे जुड़े। मैं तब शहर का कई उत्तरदायित्व सम्भाल रहा था। मैंने भी फैसला कर लिया कि नौकरी छोड़ कर गांव में पेशेवर क्रांतिकारी की हैसियत से जाऊंगा। प्रस्ताव मैंने कामरेड कन्हाई चटर्जी के समक्ष रखी। पहले वे दुविधाग्रस्त दिखे। एक तो शहर के काम में काफी दिक्कतें दिखाई दे रही थीं। उन्होंने कहा कि आपका एक भाई पेशेवर की हैसियत से असम में काम कर रहे हैं। आपने भी अगर नौकरी छोड़ दी तो परिवार पर दबाव आयेगा। यह ठीक होगा या नहीं, जरा सोचिये। मैंने दृढ़ता के साथ कहा, इसकी जिम्मेदारी आप मुझपर छोड़ दीजिए, मैं उन्हें समझाऊंगा। कामरेड कन्हाई चटर्जी (के.सी.) मेरे परिवार के बहुत लोगों को घनिष्ठ तौर पर जानते थे। माताजी कामरेड के.सी. को केशव भारती कह कर पुकारती थी। वे यह भी जानते थे कि मेरे परिवार का खर्च मेरी आमदनी से ही चलता था। इसके बाद भी मेरा फैसला जानकर उन्होंने मेरा अभिनंदन किया।

उस समय परिवार में मां, एक भाई, भाभी थे, छोटी बहन की दफ्तर से उधार लेकर शादी करवा दी थी। भाई अत्यल्प आय की एक नौकरी करते थे। इनकी आमदनी इतनी कम थी कि परिवार के लिए उसका कोई अर्थ नहीं था। मैंने तय किया कि मेरा फैसला दूसरे भाईयों को बताऊं और उनसे मां का उत्तरदायित्व स्वीकार करने का अनुरोध करूं। यह सब तय करने के बाद इसके चलते सभी बड़े भैया को एक दिन चिट्ठी भेजी। बड़े भैया रेलवे में कंट्रोलर

परिवेश में सुलझाने का अनुरोध किया गया।

सी.पी.आई.(एम.एल.) पार्टी के गठन के कई सप्ताह बाद उस पार्टी की ओर से ''राजनीतिक प्रस्ताव'' नामक एक दस्तावेज प्रकाशित किया गया। हमने उस प्रस्ताव के चार बिंदुओ में निहित मूल व्याख्याओं पर टिप्पणी करते हुए दक्षिण देश में एक निबंध प्रकाशित किया। सारी बिंदुएं याद नहीं रहे, जो दो याद रहे वे निम्न हैं :

1) पार्टी के इस दस्तवेज में कहा गया है कि जन–गणतांत्रिक क्रांति के स्तर पर प्रधान द्वंद्व हैं ''सामंतवाद के साथ किसान जनता का अंतर्विरोध। मगर यह गलत है, हमने चर्चा के जरिये दिखाया कि अर्ध सामंती – अर्ध उपनिवेशिक समाज व्यवस्था में सामंतवाद के साथ केवल किसान जनता का अंतर्विरोध ही नहीं, बल्कि किसानों के साथ साथ, मजदूर, छात्र, बुद्धिजीवी, देशभक्त बुर्जुआ (राष्ट्रीय बुर्जुआ) और वृहत्तर जनता का भी अंतर्विरोध है, लिहाजा यह दिखाना पड़ेगा कि सामंतवाद के साथ व्यापक जनता का अंतर्विरोध ही प्रधान अंतर्विरोध है।

2) पार्टी के इस प्रस्ताव में कहा गया था कि ''जन–गणतांत्रिक क्रांति के स्तर पर प्रधान अंतर्विरोध नहीं बदलता। हमने दिखलाया कि यह भी गलत था। हमने दिखाया कि क्रांति के इस स्तर पर भी प्रधान अंतर्विरोध में परिवर्तन होता है। माओ ने जैसे सिखाया है कि साम्राज्यवाद के प्रत्यक्ष आक्रमण के समय प्रधान अंतर्विरोध बदल जाता है। उस समय तब तक का प्रधान अंतर्विरोध दूसरे स्थान पर जा उतरता है। तब साम्राज्यवाद के साथ भारतीय राष्ट्र का अंतर्विरोध ही प्रधान अंतर्विरोध के तौर पर सामने आ जाएगा। बाद में पार्टी के प्रस्ताव में आई इन गलतियों को पार्टी ने सुधार लिया।

Ekkvkoknh dE;fuLV dsn dk lLFkkidk e ie[k urk dkejM pn'k[kj nkl ¼nkn½ dh ccj gR;k

20 अक्टूबर को 'केंद्र' की स्थापना बैठक (सम्मेलन) की अध्यक्षता

थे और पुरूलिया के आद्रा में रहते थे। मंझले भाई मालदह में सरकारी नौकरी में थे। तीसरे (संझला) भाई परिवार के साथ बारासात में थे। एक और भैया/भाभी मेरे ही साथ रह रहे थे। मेरी चिट्ठी पाकर उस तयशुदा दिन सभी आ मौजूद हुए। बहुत दिनों के बाद एक जगह पर होने से सभी को बहुत खुशी हुई। रात को खाने–पीने के बाद मैंने भाईयों के समक्ष अपना प्रस्ताव रखा। पहले कोई कुछ नहीं बोला। सभी अचंभित थे, मेरे इस निर्णय की किसी ने खिलाफत नहीं की। सिर्फ मंझले भैया ने कहा कि राजनीति करने के लिए घर–बार, नौकरी क्यों छोड़नी होगी? मैंने कुछ बातचीत की अंत में बड़े भैया ने कहा कि तुम्हें हम नहीं रोकेंगे। मां का उत्तरदायित्व मैं ले रहा हूं। मां आद्रा में मेरे साथ ही रहेगी। मां ने भी कोई विरोध नहीं किया। फिर भी रूलाई रोक न पायी। छोटे भाई के घर छोड़ते समय मां इतनी आहत नहीं हुई थी, चूंकि मैं था। अब वह बिल्कुल ही टूट गयी। मेरे मन में भी मां के लिए कष्ट होने लगा। मन में एक उथल–पुथल हो रहा था। फिर भी मां को बड़ी दिक्कत के साथ समझाया। मां ने कहा तुम जो ठीक समझोगे, मैं उसमें बाधा नहीं बनूंगी। तुम सफल हो यही मेरी कामना है। बाद में सुना था कि मां रोज लेटकर तकिया भिगोती थीं।

भाईयों के साथ बातचीत करते समय मैंने सोचा था कि काफी बहस होगी। मन ही मन मैं भी इसके लिए तैयार था। इतनी आसानी से सारा मामला निपट जाने पर मैं भी काफी चकित हुआ। इस विरोध न करने के पीछे संभवतः हमारे परिवार में एक परंपरा के तौर पर इस विषय को देखा जाना चाहिए। मेरे एक चाचा (पिताजी के मौसेरे भाई) दिनेश गुप्त अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारी संग्राम से जुड़े थे। विनय–बादल–दिनेश इन तीन लोगों ने 1939 में राइटर्स बिल्डिंग में हमला चलाकर अंग्रेज अफसर को मार डाला था। कोर्ट के फैसले में चाचा को फांसी की सजा हुई। चाचा हमारे परिवार के साथ गहरे जुड़े थे। जेल से मां को काफी चिट्ठियां लिखते थे। बड़े भैया के बंबई में रहते समय वे वहां के नौसेना विद्रोहियों के संपर्क में थे। फलतः मेरे कामकाज को उन लोगों ने इसी परंपरा से जोड़कर देखा था।

चाहे कुछ भी हो, मैंने अपने फैसले के मुताबिक तमाम तैयारियां शुरू कर दी। मेरी नौकरी छोड़ने के फैसले से दफ्तर में दो करीबी मित्र अवगत थे।

के साथ जब सहमत हो गये तो सवाल उठा कि इस केंद्र का नाम क्या रखा जाय? कई नाम सामने आये पर कोई भी नाम हमारे सिद्धांत और राजनीतिक लक्ष्य के साथ सामंजस्यपूर्ण नहीं बन पा रहा था। बाद में मैंने यह प्रस्ताव रखा कि माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र रखा जाय। उस समय सवाल उठा कि माओ–त्सेतुङ विचारधारा के बदले हम 'माओवाद' का इस्तेमाल कर सकते हैं या नहीं। कामरेड के.सी. ने कहा कि सोच में हमारी 'विचारधारा' और 'वाद' के बीच कोई चीन की दीवार नहीं है। दोनों एक ही सिद्धांत के आधार हैं। फलस्वरूप सर्वसम्मति से संगठन का नाम ''माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र'' के तौर पर ही स्वीकृत हुआ। इस तरह भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिस्थिति के बीच ''माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र'' की स्थापना हुई। 'केंद्र' ने घोषणा की कि हमारा एकता का प्रयास जारी रहेगा और वह सीपीआई (एम.एल.) के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखकर चलेगा।

एक पेशेवर छात्र कामरेड ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा – ''अगर हम पार्टी के तौर पर काम न कर सके तो मैं सी.पी.आई. (एम.एल.) पार्टी में ही शामिल होना चाहता हूं।'' इस सवाल पर कि क्यों अलग पार्टी नहीं, कुछ और बातचीत के बाद उससे कहा गया कि अगर आपको नई पार्टी सही पार्टी लगती है तो आप अवश्य उस पार्टी में शामिल हो सकते हैं। तब आप से एक ही अनुरोध है कि पार्टी में सैद्धांतिक सवालों को उठाइयेगा। तब भी वे पार्टी में शामिल होने के फैसले पर दृढ़ रहे। इसके बाद वे उन पर जो उत्तरदायित्व था, उसे समझा कर बैठक से चले गये। कई महीने बाद पता चला कि उस कामरेड ने ईमानदारी के साथ कुछ बहस वाले मुद्दे पार्टी में उठाये। पार्टी में क्रमशः अलग–थलग पड़ने लगे और फिर उन्होंने पार्टी छोड़ दी। बाद में हालांकि फिर एम.सी.सी. के साथ संपर्क किया पर वे अब पेशेवर के तौर पर काम करना नहीं चाहते थे।

''माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र'' के गठन के बाद इस केंद्र की ओर से एक घोषणापत्र प्रकाशित किया गया, जिसमें किन हालात में हम स्वतंत्र केंद्र गठित करने पर मजबूर हुए इसकी व्याख्या की गयी थी और फिर से एकता का आवेदन रखकर पार्टी के साथ बहस योग्य मुद्दों को मैत्रीपूर्ण

कारखाने के अधिकारी तथा यूनियन के नेतागण जानते थे। करीबी दोस्त दुःखी होकर कहते– ''इतनी अच्छी नौकरी तुम छोड़ क्यों रहे हो? नौकरी करते–करते भी तो राजनीति की जा सकती है।'' मेरे ये दोस्त गैर–राजनीतिक व्यक्ति थे। फलस्वरूप मैं उनकी मानसिकता समझता था। 1968 के 15 नवंबर को मैं अंतिम बार के लिए कारखाने से चुपचाप निकल आया। मेरी तनख्वाह, प्रॉविडेंट फंड और ग्रैच्युटी के पैसे यूं ही कारखाने में रह गये। इस समय मेरी मानसिकता थी – Hell I care the Service! (तुम्हारी नौकरी नरक में जाएं) उस समय रूपये पैसे के मामले में मुझे कोई मोह न था। हालांकि मेरी आय का एक बड़ा हिस्सा मैं संगठन को चंदे के तौर पर देता था।

घर छोड़ने से पहले ताकि पीछे की ओर लौट कर आने का कोई पेटीबुर्जुआ मानसिकता काम न करे इसलिए मैंने मेरे तमाम स्कूल कॉलेज के प्रमाणपत्रों को जला दिया। कहीं पुलिस चिन्हित न कर सके इसलिए तमाम पारिवारिक एवं व्यक्तिगत फोटो/छायाचित्रों को भी जला दिया।

मेरी गांव जाने की तारीख तय थी 20 नवंबर को। इससे पहले शहर में मेरे कामकाज के बारे में कलकत्ता शहर कमेटी वालों को समझा दिया। फलस्वरूप शहर छोड़ने में कोई दिक्कत नहीं हुई। तयशुदा दिन थोड़े बहुत सामान के साथ मैं कूरियर कामरेड के साथ रवाना हुआ। पीछे छूटते चले गये घर, परिवार, मित्र–दोस्त और शहरी जीवन की यादें। तब नया इन्सान बनने के लिए सब कुछ त्याग करने को मानसिक तौर पर तैयार था। क्योंकि नया समाज गढ़ने के लिए नया इन्सान होना जरूरी था।

एक विषय का उल्लेख यहां अप्रासंगिक नहीं होगा कि 1967–68 के उन अग्निगर्भित दिनों में बड़े पैमाने पर छात्र–युवाओं में जिस क्रांतिकारी आवेश की सृष्टि हुई थी, उसके पीछे जिस तरह संशोधनवाद के प्रति तीव्रघृणा, नक्सलबाड़ी संग्राम की प्रेरणा, अंतर्राष्ट्रीय घटनावली, उसी तरह उस समय प्रकाशित कई किताबें थी, जिन्होंने परोक्ष रूप से युवाओं को प्रभावित किया था। मुझे भी किया था। इन किताबों में प्रमुख थे, चे–गुएवारा की डायरी तथा सौरेन सेन द्वारा रचित ''विएतनाम'', 'ईख का स्वाद नमकीन' (क्यूबा की क्रांति पर), काङगो से वापसी (पेट्रिस लुमुम्बा की डायरी पर आधारित), निषिद्ध देशों की नींद टूट रही है (तिब्बत का मुक्ति प्रसंग), विएतनाम के लेखक आन दू रचित

1969 के 20 अक्टूबर को दक्षिण कलकत्ते के गड़िया के महामाया तालाब में मेरे कारखाने के मजदूर कामरेड बादल ढाली के घर पर यह सम्मेलन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन मे कामरेड के.सी. (कन्हाई चटर्जी), अमूल्य सेन, (मास्टर मोशाई), कामरेड चंद्रशेखर दास (दादू) सहित 31 कामरेड उपस्थित थे। कामरेड चंद्रशेखर दास ने उस सभा की अध्यक्षता की। सुबह 9 बजे से शुरू हुई बैठक में कामरेड के.सी. ने समग्र परिस्थिति की व्याख्या की और इन हालात में हमारा रुख क्या हो, इस पर सबकी राय जाननी चाही। असम के कामरेडों ने वहां को–ऑर्डिनेशन कमेटी किस तरह काम कर रही है, पुराने संशोधनवादी तरीके से ही अवसरवादी नेतृत्व काम किये जा रहा है और तमाम सैद्धांतिक एवं राजनीतिक सवालों से कन्नी काट रहा है, ऐसा कहा। असम राज्य को–ऑर्डिनेशन कमेटी में एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका नाम कला बाबू सिंह है और वे सूद के कारोबारी हैं। दूसरे कामरेडों ने भी इसी तरह के वक्तव्य रखे। को–ऑर्डिनेशन की विभिन्न स्तर की कमेटियों (जिला, राज्य आदि) को ही नवगठित पार्टी की जिला और राज्य कमेटियों के तौर पर घोषित किया गया। फलस्वरूप पार्टी की विभिन्न कमेटियों में ऐसे ही अवसरवादियों का कमोबेश हर जगह प्रवेश हो गया। ऐसी हालत में कुछ कामरेड उत्तेजित होकर मांग करने लगे कि हमें अब पलटकर जवाबी पार्टी की घोषणा कर देनी चाहिए।

इसी तरह के एक गर्म माहौल में कामरेड के.सी. ने सभी को शांत होने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, हम चाहें या न चाहें, भारत में एक क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना हो चुकी है। पार्टी वही है, इस यथार्थ को मान लेना पड़ेगा। भारत में एक पार्टी के नेतृत्व में ही क्रांति संपन्न होगी। दो या तीन पार्टियां बना लेने से क्रांति में विजय हासिल नहीं होने वाला है। लिहाजा हम मार्क्सवादी आदर्श मानकर कभी भी जवाबी पार्टी खड़ी नहीं कर सकते। हम एकता चाहते हैं और नयी बनी पार्टी के साथ आगामी दिनों में एकताबद्ध हो जाएंगे, इस प्रयास में हमें वर्तमान परिस्थिति में एकता का वातावरण और मानसिकता बनाये रखते हुए भी स्वतंत्र काम करने का निर्णय लेना होगा। पार्टी नहीं, हम एक स्वतंत्र केंद्र (Centre) के तौर पर काम करना चाहते हैं। दूसरे साथी इस राय

अचानक यह घोषणा कर दी गयी। इसके बाद कहा गया जो पार्टी में शामिल नहीं होंगे उनके साथ गैर दोस्ताना संबंध रहेगा। मैदान की इस सभा में ''दक्षिण देश'' पत्रिका में पहले प्रकाशित ''भारतीय क्रांति की रणनीतिक दिशा के परिप्रेक्ष्य में'' नामक दस्तावेज को पुस्तिका रूप में पुनः प्रकाशित कर मैदान में वितरित किया गया। इस सभा के बाद आये अंक में (यानी 15 दिन बाद) 'भारतीय क्रांति की रणकौशल की दिशा के परिप्रेक्ष्य में' प्रकाशित किया गया।

कुछ भी हो, महीने भर बाद देखा गया कि पार्टी गठन के सवाल पर अलग–अलग विचार और भिन्न रायों को दरकिनार कर बहुतेरे लोग पार्टी में शामिल होने लगे थे। हम लोगों ने ''दक्षिण देश'' की और से सीपीआई (एम.एल) के नेतृत्व को बताया कि वृहत्तर एकता के हित में हमारा समूह भी पार्टी में शामिल होना चाहता हैं, पर इसके पहले कुछ महत्वपूर्ण सैद्धांतिक, राजनीतिक और व्यावहारिक–सागंठनिक मुद्दों पर चर्चा करना जरूरी था। मगर लंबे अरसे तक उन्होंने इस पत्र का जवाब तो दिया ही नहीं, यहां तक की चिट्ठी की प्राप्ति की सूचना तक नहीं दी। हमने तब दुबारा बातचीत का अनुरोध करते हुए एक चिट्ठी भेजी। अब उनकी ओर से मौखिक तौर पर जवाब आया कि अब कोई बातचीत नहीं होगी। पहले अपना समूह विसर्जित कर पार्टी में शामिल होइये, उसके बाद ही बातचीत का सवाल आयेगा। उनका बर्ताव भी मित्रतापूर्ण नहीं था।

Ekkvkoknh dE;fuLV dsUnz ¼,elhlh½ dk vkfoHkkZo gksus dh ,frgkfld okLrfodrk

नवगठित पार्टी नेतृत्व के ऐसे व्यवहार ने हमें दुःखी और क्षुब्ध किया। उनके इस 'ग्रुप तोड़कर' तमाम महत्वपूर्ण बातचीत को दरकिनार कर पार्टी में शामिल होने को मजबूर करने का अर्थ था राजनीतिक तौर पर उनका समर्थन करना। इस तरह के एक महत्वपूर्ण और जटिल परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए, यह तय करने के लिए तमाम महत्वपूर्ण कामरेड और पेशेवर कार्यकर्ता के तौर पर जो असम, त्रिपुरा तथा पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों और शहर के काम से जुड़े थे, उन्हें लेकर एक खास सम्मेलन बुलाया।

'आँसू खून सपना', और एक जर्मन लेखक की लिखी 'अग्निगर्भ' आदि किताबें। इन किताबों की विषयवस्तु और शैली इतनी आकर्षक थी कि रात भर जागकर पढ़ने में दिक्कत नहीं होती। मैं अस्वीकार नहीं करूंगा कि उपरोक्त किताबें, तथा जीवनीपरक कुछ रचनाओं ने मेरी मानसिक स्थिति में कोई प्रेरणा का सृजन नहीं किया। संभवतः यह मेरे पेटीबुर्जुआ आवेग का ही परिणाम था।

मुझे बीरभूम जिले के रामपुरहाट गांव जाना था। उस समय योजना थी, बिहार के पाकुड़ जिले की सीमा में आदिवासियों के गांवों में काम करना। बीरभूम के रामपुरहाट, नलहाटी, मुरारई आदि थाने बिहार की सीमा से लगते हैं। इसके अलावा रामपुरहाट टाउन से 8 मील भीतर कई गांवों में मुस्लिम तथा माल (दलित) संप्रदाय की जनता के बीच भी संपर्क थे। पहले एक गांव में (कुतुबपुर) एक गरीब मुस्लिम परिवार में पनाह ली। इन तमाम गावों में कृषि काम के अलावा भी काफी ईख (गन्ने) की पैदावर होती थी। गांव के बहुत लोग गन्ने को उबालकर गुड़ बनाने के काम से जुड़े थे। गांव में एक मस्जिद थी। उसके प्रधान मौलवी का बेटा बीएससी का छात्र हमारी राजनीति का समर्थक था। इसी बुनियाद के सहारे बाद में गांव के अन्य मुस्लिम युवकों से पहचान हुई। उन लोगों ने मुझे तहेदिल से स्वीकार किया। गांव में जाकर कामरेड माओ की शिक्षा के अनुसार गांव का वर्ग विश्लेषण शुरू किया। कितने घर–परिवार हैं, जोतदार, धनी किसान, मध्यम किसान, गरीब किसान और भूमिहीन किसानों की संख्या कितनी है? क्या–क्या फसलें होती है? बटाईदारी का नियम क्या है? सूद की दर/नियम क्या है? किस–किस तरह के द्वंद्व हैं? हिंदू मुसलमानों में संबंध कैसे हैं? आदि। क्रमशः आसपास के गांवों में भी आना–जाना शुरू किया।

शहर का जीवन छोड़ गांव का जीवन कैसा है, इस सवाल पर कहा जा सकता है कि जमीन–आसमान का फर्क है। गांव यहां शांत और ठहराव लिए है। कोई परिचित चेहरा नहीं है। आम किसान लोग अक्सर बात नहीं करते। सभी अपने–अपने काम में व्यस्त रहते। मैं पहले भी देहातों में गया था। उस समय इतना खराब नहीं था। सुबह उठते ही मन खराब हो जाता क्योंकि कोई चाय या अखबार नहीं था। नाश्ते के नाम पर कुछ नहीं मिलता। सभी सुबह ''पंताभात'' ('बासी' भात, जिसमें पानी डालकर उसे रात भर रखा जाता

है) नमक–प्याज के साथ खाकर काम पर निकल जाते। मैं सुबह अधिकतर कुछ भी नहीं खाता था। दोपहर करीब दो बजे भात (चावल) खाता। साथ में दाल या सब्जी कुछ भी नहीं होती। यह जिंदगी मुझे कठिन लग रही थी। मन में तूफान उठ रहा था कि टिक कर रह तो पाऊंगा? साथ ही मन ही मन संघर्ष छेड़ रहा था। मुझे यह करना ही होगा। किसी भी हालत में पीछे हटना नहीं चाहिए। मैंने हालांकि मजदूरों के बीच काम किया है। मजदूरों की जीवनशैली से अभ्यस्त भी था। उस समय नौकरी करता था तो जीवन में निश्चितता (सुरक्षा) थी। रहने, खाने, कपड़े–लत्तों के बारे में कोई समस्या नहीं थी। मजदूर जनता में काम करते हुए भी मेरा सामाजिक परिवेश (जीवन) मध्यमवर्गीय रहा। परिवार, आत्मीय–स्वजन, कारखाने के बाहर के यार दोस्तों से संबंध सारा कुछ मध्यवर्गीय जैसा ही था। फलस्वरूप वर्गच्युत होने के लिए यह तमाम बातें त्यागनी होगी। सबसे बड़ी बात निश्चित जीवन से अनिश्चितता की राह पर चलने का यह अनुभव पहले कभी नहीं था।

कामरेड कन्हाई चटर्जी ने कहा था कम्युनिस्ट आदर्श में पेशेवर क्रांतिकारी बनने के लिए आपको मध्यमवर्गीय सोच–विचार, अभ्यास, आचार–व्यवहार में (जीवनशैली) आमूल परिवर्तन लाना होगा। गरीब जनता के साथ एकात्म होना होगा। यह आसान नहीं है। वर्गच्युत होने के लिए उस गरीब जनता के साथ रहना, खाना तथा काम करना होगा। परिवेश चाहे जितना भी प्रतिकूल क्यों न हो, गांव के लोगों को ही अपने परिवार की तरह मानना होगा। गांव के लोगों के पास खुद को पूरी तरह सौंप देना पड़ेगा। अलग से खुद के बारे में नहीं सोचिएगा। यह एक बड़ी परीक्षा है। अपने में आंतरिक तौर पर निम्न पूंजीवादी जीवनशैली और तौर–तरीकों के बारे में नफरत करना सीखना होगा और अपने में बदलाव की प्रक्रिया को लगातार चलाये जाते रहना होगा। अपने को न बदलकर, जनता के बारे में निम्न पूंजीवादी विचार और दृष्टिकोण न बदल कर, समाज में बदलाव नहीं लाया जा सकेगा। कामरेड के.सी. के इस मूल्यवान नसीहत को वास्तव में प्रयोग के जरिये जीवन के इस संधिक्षण/मोड़ में इस अग्नि–परीक्षा के लिए मन ही मन तैयार हुआ।

कई सप्ताह बाद कामरेड अमूल्य सेन आये। उनके नाम से पहले ही

उठा–उठा कर वापस पुलिस की ओर फेंकते रहे। मेरे साथ झंटू (पूर्णेन्दु मुखर्जी, जेलबंदी, केंद्रीय कमेटी के सदस्य) था। हम एक ही मोहल्ले में रहते थे। उसे देखा कमीज उतारकर पुलिस की तरफ दौड़ा जा रहा था। कई लोगों ने उसे रोका। इधर संघर्ष के फलस्वरूप तमाम मैदान लगभग खाली हो गया था। मंच पर से आयोजक कामरेड लगातार नारे लगा रहे थे। मैदान खाली देखकर पुलिस ने सीपीआई (एम) की जुलूस को दूसरी तरफ मोड़ दिया। करीब एक घंटे के बाद धीरे–धीरे स्थिति शांत हुई। बाद में दुबारा लोग मॉन्युमेंट मैदान में जमा होने लगे। आधे घंटे के बाद मंच से घोषणा हुई कि कामरेड कानू सान्याल आ चुके हैं। थोड़ी देर बाद सभा शुरू हुई। इसी बीच कई लोग मई दिवस के तात्पर्य की व्याख्या करने वाले भाषण देते रहे। कॉमरेड असित सेन ने को–ऑर्डिनेशन कमेटी की ओर से इस जनसभा की अध्यक्षता की। चारों ओर असंभव भीड़ जुटने लगी। कानू सान्याल के नाम से मैदान तो भरा ही, ऐसा कि मैदान को पार करते हुए रोड (पुराना बहुत बड़ा मार्ग) और ग्रैंड होटल के सामने फुटपाथ भी लोगों से भर गये। कानू सान्याल मैदान के मंच पर भाषण देने के लिए चढ़ने के साथ–साथ ही पूरे मैदान से आवाज उठी ''कानू सान्याल जिंदाबाद'', ''नक्सलबाड़ी जिंदाबाद''। कानू सान्याल ने सब का अभिनन्दन करने के बाद बोलना शुरू किया। कुछ देर बोलते रहने के बाद अचानक उन्होंने बीच ही में कहा कि ''आज एक महत्वपूर्ण घोषणा करने जा रहा हूं। बाद में उन्होंने घोषणा की कि पिछले सप्ताह भर पहले 22 अप्रैल को महान लेनिन के जन्मदिन के मौके पर नयी क्रांतिकारी पार्टी सीपीआई (एम–एल) का गठन हुआ है और आप इस नयी पार्टी का अभिनन्दन कीजिए और सभी समूहों से अपील है कि वे अपने ग्रुप तोड़कर (विसर्जित कर) इस क्रांतिकारी पार्टी में शामिल हों। जो इस पार्टी में नहीं आएंगे उनके साथ मित्रतापूर्ण संबंध नहीं रहेंगे।''

इस तरह की अचानक की गई घोषणा से मैदान में उपस्थित को–ऑर्डिनेशन कमेटी के अन्य घटकों के लोग चर्चा करने लगे कि किसी बातचीत के बगैर ही और को–ऑर्डिनेशन कमेटी में जब नयी पार्टी के गठन को लेकर राजनीतिक और सैद्धांतिक बहस जारी है और एक राजनीतिक दस्तावेज पेश करने का प्रस्ताव है, तब इन सभी बातों को असंपूर्ण छोड़कर,

जीवन में यह पहली बार आमने–सामने के इस तरह के मुकाबले में मैं बिलकुल भी नहीं घबड़ाया। इस संघर्ष में मैं मारा भी जा सकता था, चूंकि मैंने कभी भाला नहीं चलाया था। पर कभी मौत के डर से काम नहीं किया। क्योंकि क्रांति करने में मौत हो ही सकती है, यही मानसिकता मुझमें शुरू से ही थी। इस घटना के बाद गांव के किसानों का उत्साह बहुत बढ़ गया, क्योंकि उन्होंने पहले संगठित होकर और एकजुट होकर कभी किसी समस्या का मुकाबला नहीं किया था। नये–नये संपर्क आने लगे और राजनीति तथा संगठन का विस्तार होने लगा।

lh-ih-vkbZ- ¼e&,y½ ikVhZ dk xBu dh ?kks"k.kk

उन दिनों विभिन्न सूत्रों से खबर मिलती रही और बाद में 'देशब्रती' पत्रिका में भी इश्तेहार जारी हुआ था कि 1 मई 1969 को मॉन्युमेंट मैदान में मई दिवस के उपलक्ष्य में एक जनसभा का आयोजन किया गया है और उस सभा में नक्सलबाड़ी के प्रमुख नेता कामरेड कानू सन्याल उपस्थित रहेंगे। मैं उस समय रामपुरहाट गांव के काम के साथ जुड़ा था। लिहाजा मैंने तय किया कि एक स्थानीय साथी को साथ लेकर मैं सभा में शामिल होने कलकत्ता जाऊंगा।

1 मई 1969 दक्षिण कलकत्ते के हाजरा पार्क से एक जुलूस मैदान जाने की तैयारी में था। मैं और अन्य कई लोग जुलूस में शामिल हुए। जब जुलूस लगभग मैदान में प्रवेश करने वाली थी ठीक तभी विपरीत दिशा से सी. पी.आई. (एम) का एक जुलूस हमारे आगे रास्ता रोककर आ धमका। कोई भी अपनी–अपनी जगह से हटने को तैयार नहीं। दोनों तरफ से नारे लगाये जा रहे थे। इधर कामरेड कानू सान्याल के नाम से मैदान में बहुत ज्याद भीड़ इकट्ठा हुई थी। लोग सड़क के दोनों तरफ भीड़ लगा कर कानू सान्याल को देख पाने के लिए बेताब थे। इसी बीच अचानक बम फटने की आवाजें आने लगी। सीपीआई (एम) की जुलूस से हमारे जुलूस पर लगातार बम (हथगोले) फेंके जा रहे थे। हमारे कई लोग बुरी तरह घायल हुए। पुलिस ने आकर उल्टे हम लोगों पर आंसू गैस बरसाना शुरू किया। जो शेल नहीं फटी थी, हम उन्हें

परिचित था। मगर पहले कभी मुलाकात न हुई थी। लगभग 55 साल के श्यामवर्ण, दुबले–पतले लंबोतरे चेहरे के मालिक निहायत ही साधारण धोती–कुर्ता पहने उजले आंखोवाले एक प्रवीण क्रांतिकारी। बहुत ही शांत, मृदुभाषी कामरेड को तहेदिल से स्वीकारा।

दूसरे दिन वे मुझे साथ लेकर बिहार से सटे संथाल गांव गये। जाने के पथ पर एक और पेशेवर क्रांतिकारी कार्यकर्ता हमारे साथ शामिल हुए। लंबी यात्रा के बाद करीब तीन बजे हम तयशुदा गांव पहुंचे। पहले कभी संथाल गांव न देखा था। तस्वीर की तरह सजा संवरा, साफ सुथरा गांव। घर की दीवार पर नीले रंग से हाथ से बनायी गयी तरह–तरह की तस्वीरें। घर की महिला ने हमारे हाथ धोने के लिए पानी का लोटा भर दिया। इसके बाद एक बड़ी कटोरी (कटोरा) में भर कर हांड़िया और एक बड़े कटोरे में मूड़ी (मुरमुरे) और प्याज खाने/पीने को दिया। हमें हालांकि भूख लगी थी पर हंडिया की गंध (दुर्गंध) से लगभग उबकाई आने लगी। हमने हंड़िया छोड़ दिया और मूड़ी खाने लगे। अमूल्य सेन ने कहा हंडिया आपको पीना ही पड़ेगा क्योंकि आदिवासी संस्कृति में यही रिवाज है कि हंड़िया पेश कर आगंतुक के प्रति सम्मान दर्शाया जाता है। आप लोगों ने यदि नहीं पीया तो वे अपमानित महसूस करेंगे। अंत में एक छोटी कटोरी भर हंडिया उंड़ेलकर पीया। अमूल्य सेन ने भी थोड़ी सी पी। मैं यह सब कुछ अपने को बदलने के तकाजे से आंतरिक द्वंद्व के बीच कर रहा था।

शाम को गांव के लड़के–लड़कियों ने हमारे सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा। लड़के–लड़कियां एक दूसरे के कमर में हाथ डालकर कदम से कदम मिला कर नाच रहे थे और साथ ही गीत गा रहे थे। अमूल्य सेन ने पूछा, 'लड़कियां क्या गा रही हैं, समझ रहे हैं।' मैने कहा, 'कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूं।' 'ध्यान से सुनिये वे लोग बांग्ला में ही गा रहे हैं।' मैंने ध्यान से सुनना चाहा। वाकई वे लोग बांग्ला में ही गा रहे थे।

''कोथा थेके आली रे बाबू
कोथा तोर..... घर
मेलाय नियेजाबी

चूड़ी किने दिबी.....''

(कहां से आये हो बाबू
कहां है तुम्हारा घर
मेले में ले जाओगे.....
चूडियां खरीद दोगे.....)

दूसरे दिन अमूल्य सेन हम दोनों को गांव में ही छोड़कर चले गये। गांव के आदिवासियों की भाषा हम जरा भी समझ नहीं पा रहे थे। एक व्यक्ति आ कर एक हंडी में कुछ चावल दे गया और टूटी फूटी बांग्ला में कहा ''दूसरा कोई बरतन नहीं है। तु लोग रान्ना कर लो।'' (आप लोग रसोई बनालें। कोई बरतन नहीं सिर्फ वही हंडी है।) हमने हंडी में चावल उबाल लिए और कुछ ठंडा होने पर नमक मिलाकर हंडी से ही निकाल–निकाल कर निवाले भर–भर कर खाने लगे। सुबह से कुछ नहीं खाया था। दिन के समय इसी तरह खाया जाता था। रात को और चावल नहीं देते थे। वहां भुट्टा (मकई) का बड़ा खेत था, रात के भोजन के लिए वे लोग 15–20 मकई के भुट्टे तोड़ दे जाते थे। लोगों से बातचीत करने की कोशिश किया करता, पर कोई घास नहीं डालता। लगभग महीना भर इसी तरह रहने के बाद हम पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक फिर रामपुरहाट लौट आये। इन कुछ दिनों में आदिवासी जनता की जीवनशैली, उनका पूजा–पाठ, सांस्कृतिक उत्सव और संतान के जन्म के बाद सामाजिक क्रियाकलाप के बारे में कुछ अनुभव मिला। इतनी कठिन जिंदगी मैंने कभी नहीं गुजारी थी, पर भाग भी नहीं आया।

रामपुरहाट के गांव में आते–जाते रहने के फलस्वरूप कुछ लोगों से परिचित हो गया था। बहुतों के घरों के सामने दिन भर गुड़ उबालने का काम होता था। खेत के काम में या सब्जी के बगीचे में काम करते थे। उन लोगों ने मेरे खाने–रहने की व्यवस्था कर दी थी।

यहां जिन गांवों में मैं काम कर रहा था, उनमें अग्रणी गांव था कुतुबपुर। मूलतः मुसलमान और हिंदू माल संप्रदाय के लोग यहां रहते थे।

लड़कों से गप्प लड़ाते समय गांव में इसी के साथ–साथ राजनीति की बातें भी होती थी। एक क्लब बनाने की योजना बनी। खेतों में धान की रखवाली के लिए मस्जिद में हर किसी की बारी तय की जाती। इस बार क्लब की तरफ से प्रस्ताव किया गया कि क्लब के लड़के ही धान की रखवाली करेंगे। वहां नियम था कि हर बीघे में 5 किलो धान पहरेदारों को दी जायगी। क्लब के लड़कों को उस धान की बिक्री से जो पैसा मिलता था, उन पैसों से कलकत्ते से मार्क्सवादी साहित्य की किताबें खरीदी जाती। इसी बीच रामपुरहाट कॉलेज के छात्रों के बीच भी कुछ काम की शुरूआत हुई। उनमें मार्क्सवादी दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति की कक्षाएं ली जाती।

इसी बीच खबर आई कि बगल के गांव में हमारे समर्थक किसानों की बटाईदारी की जमीन पर कब्जा करने के इरादे से सीपीआई (एम) के लोग आ रहे हैं। सीपीआई (एम) उस दौरान उस इलाके की एकमात्र राजनीतिक पार्टी थी। हमने किसानों और क्लब के युवकों से सलाह–मशविरा करने के पश्चात इस हमले का मुकाबला करने का फैसला किया। जिस दिन की यह घटना थी, हम उसी दिन लोगों को संगठित कर पारंपरिक हथियारों से लैस होकर उक्त खेत पर पहुंचे। हर कोई हथियारबंद था। मेरे हाथों में भी एक बरछा था। सीपीआई (एम) के साथ आये लोग भी हथियारों से लैस थे। वे लाठियां, बल्लम (बरछी), हंसुए, टांगी, गंडासे आदि थामे खेत के सामने ही खड़े थे। दोनों ही पक्ष एक दूसरे को धमकी दे रहे थे। संघर्ष लगभग हर हालत में तय लग रहा था और संघर्ष होने पर दोनों पक्ष से कुछ लोग अवश्य मारे जाते या घायल होते। हमारी जमायत और प्रतिरोध की तेवरें देखकर सीपीआई (एम) के लोग कुछ ठिठक से गये थे। उन्होंने नहीं सोचा था कि ऐसे प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा। बाद में उनके नेता जगदीश मास्टर ने मुझे अलग से बुलाकर कहा कि संघर्ष होने पर दोनों पक्ष के लिए नुकसान ही है। दोनों ओर गरीब किसान ही हैं। मामला बातचीत के जरिये मिटा लिया जाय। मैं राजी हो गया। बाद में एक दिन तय कर दोनों पक्षों को बैठा कर मामले का निपटारा बातचीत के जरिये किया गया। हमारी ज्यादातर शर्तें भी उन्होंने मान ली और जमीन की बंटाईदारी पूर्ववत् जारी रही।

जा पहुंचते और चाय बिस्किट खा–पीकर बातचीत करते। बाहर आने पर किसानों के सामने लंबे–चौड़े भाषण झाड़ते और बीडीओ के आश्वासनों की बातें सुनाकर किसानों को शांत कर जुलूस लेकर लौट जाया करते। सीपीआई (एम) के दिखावे के रूटीन आंदोलन का यह नमूना था, जहां इस बात पर जोर रहता कि किसानों की उनपर आस्था बनी रहे तथा किसान संगठन भी कायम रहे। धीरे–धीरे उस किसान संगठन में हमारी राजनीति का प्रभाव बढ़ने लगा। कृषि क्रांति की राजनीति में दीक्षित कुछ किसान कार्यकर्ता उस संगठन के नेतृत्व के स्थान पर जा पहुंचे। स्थानीय सीपीआई (एम) के नेताओं को इसका पता नहीं चला। फिर अगली बार जब सीपीआई (एम) के नेताओं ने बीडीओ के पास डिप्युटेशन का कार्यक्रम बनाया तो इस बार कृषि क्रांति की राजनीति में शिक्षित हमारे किसान और कार्यकर्ता भी इस जुलूस में शामिल हुए। रिवाज के मुताबिक जब जुलूस बीडीओ के दफ्तर पहुंचा तो सीपीआई (एम) के नेताओं ने कहा कि आप लोग बाहर इंतजार कीजिए। हम कुछ लोग आपकी मांगों पर बीडीओ से बातचीत करेंगे। इससे किसान जनता की भीड़ में शामिल हमारे कार्यकर्ताओं ने इसका विरोध करते हुए कहा कि आप लोग तो हर बार ही बीडीओ से बातचीत करते हैं। पर हमें हर बार ही खाली हाथ लौट जाना पड़ता है। असली ठोस काम कुछ भी नहीं होता। इस बार आप लोग अकेले नहीं, हम सामान्य किसान भी आप लोगों के साथ बीडीओ से चर्चा करने चलेंगे। कमेटी के नेता लोग इसका विरोध करते रहे। वे किसी भी हालत में आम किसानों को साथ लेकर बीडीओ से मिलने को राजी न थे। फलस्वरूप चीख पुकार मच गई। अंत में उन्हें झुकना पड़ा और आठ–दस किसानों को लेकर बीडीओ दफ्तर में प्रविष्ट हुए। बीडीओ पहले इतने लोगों के साथ बातचीत करने को तैयार नहीं हुआ। उसका कहना था कि वह केवल चंद प्रतिनिधियों से ही बात करेगा। इस पर किसान लोग दफ्तर के भीतर ही तरह–तरह की मांगों से संबंधित नारे लगाने लगे। सीपीआई (एम) के नेता मुश्किल में फंस गये। बीडीओ से उन्होंने अनुरोध किया कि इनकी बात भी वह सुने। मजबूरन अब बीडीओ ने उनकी बातें सुनने के बाद कहा कि इन तमाम मांगों को मानना संभव नहीं। उनके हाथ–पांव बंधे हैं। वे कुछ भी नहीं कर पायेंगे। उस पर किसानों ने कहा आपकी नौकरी हमारी समस्याओं का समाधान करने और हमारे लिए

स्थापना के महज दो महीने के भीतर उसके एक संस्थापक नेता की मर्मस्पर्शी हत्या से संगठन में गहरा शोक छा गया और उनके प्रति गहरी संवेदना जताई।

nwljs jkT;ksa esa ,e-lh-lh- lxBu dk foLrkj

माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र के गठन के बाद जो प्रमुख सवाल उठा, वह था संगठन के विस्तार और कृषि क्रांति की राजनीति के मातहत दीर्घकालीन जनयुद्ध की रोशनी में फौज तथा आधार इलाके (मुक्तांचल) स्थापित करने की पहल। इस मामले में अहम पहला सवाल यह था कि क्या भारत में सभी जगह मुक्तांचल और फौज बन सकता है? या विषम (अ–समान) विकास की बात को ध्यान में रखकर इलाका चुनकर वहीं पहले छापामार इलाके और छापामार आधार के निर्माण की पहल करनी होगी?

इलाका विस्तार का विषय बहुत पहले से ही हमारी योजना में था और इसी के साथ उन तमाम इलाकों में फौज और आधार क्षेत्र स्थापित करने के उद्देश्य से सबसे उम्दा कामरेडों को (उस समय के मान से) भेजा गया। 1968 से असम राज्य हमारी योजना के इलाके की दृष्टि से केंद्र में था। असम राज्य की स्थिति भौगोलिक दृष्टि से बहुत महत्व की है। हमने जो इलाका चिह्नित किया था, वह दक्षिण असम का करीमगंज जिला था। इसकी स्थिति दक्षिण में मिजोरम, पूर्व में मणिपुर–नागालैंड, पश्चिम में बांग्लादेश का श्रीहट्ट (सिल्हट) जिला। मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर की क्रांतिकारी जनता आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए भारत सरकार के खिलाफ हथियारबंद लड़ाई चलाती आ रही थी। भारत की राजसत्ता के साथ हर दिन उनकी भिड़ंत हो रही थी। हमारा उद्देश्य था हमारी स्वतंत्र पहल के जरिए फौज तथा आधार इलाका स्थापित करने के साथ–साथ इन तमाम राज्यों की जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार की लड़ाई का समर्थन करते हुए इन राज्यों की जनता से संबंध जोड़ना, ताकि भविष्य में भारत की राजसत्ता के खिलाफ युद्ध में पारस्परिक सहयोग और मिलकर लड़ने के प्रयास किये जाएं।

इस लक्ष्य को वास्तविक रूप देने के लिए 1968 से ही असम में पेशेवर

कार्यकर्ता भेजना शुरू हुआ। इस काम में कामरेड जोगेश्वर दास हमारी हर तरह से मदद करते रहे। उस प्रवीण आयु में दूर के इलाकों में संपर्क लाने हेतु उन्होंने कड़ा परिश्रम किया। उनका घर करीमगंज टाउन में था। वे असम राज्य सीपीआई (एम) पार्टी के राज्य कमेटी के सदस्य थे। कामरेड कन्हाई चटर्जी के साथ बातचीत के बाद उन्होंने सीपीआई (एम) पार्टी छोड़ दी।

1970 तक कुल 13 छात्र–युवा–मजदूर–बुद्धिजीवी कामरेडों को पेशेवर के तौर पर इस इलाके में भेजा गया। वे स्थानीय परिस्थितियों के साथ घुलमिल कर विभिन्न मेहनती पेशों से जुड़े। जनता के साथ एकजुट होने के जरिये वे काम को आगे ले जा रहे थे। इस काम में जब तेजी आ रही थी, ठीक उसी समय स्थानीय सी पी आई (एम–एल) के दुस्साहसवादी कार्रवाइयों के कारण सारा किया कराया मुश्किल में जा फंसा।

सी पी आई (एम–एल) पार्टी के उस समय के कार्यक्रम, 'सफाया' कार्यक्रम का जमीनी स्तर पर प्रयोग करने के लिए कई जगह 'सफाया' अभियान चलाये गये। हमारे साथ इस मामले में कोई संपर्क या बातचीत करने की कोशिश नहीं की। फलतः सारी परिस्थितियां तेजी से बदली और प्रशासन बुरी तरह सक्रिय हो उठा। भारत सरकार के लिए असम राज्य निहायत ही संवेदनशील इलाका था। क्योंकि चीनी सीमा युद्ध के बाद से इस इलाके में प्रशासन तथा जासूसी कार्यकलापों का गहरा जाल बिछाया गया था। उत्तर में चीन और बगल के राज्यों – मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर में भारत की फौजी टुकड़ियों के साथ लगातार संघर्ष जारी था। फलस्वरूप उसमें कहीं नक्सल लोग पांव न जमा लें, इस मामले में प्रशासन निहायत ही सतर्क था। 'सफाया' अभियान के बाद पूरे राज्य में पुलिस जासूसों की सक्रियता बढ़ी। बहुतों को पुलिस ने गिरफ्तार किया, उनके पास से हथियार बरामद किये गये। इस कारण हमारे संगठन के भी कई लोग गिरफ्तार हो गये। हालात ऐसे दौर में पहुंच गये कि जनता डर गयी और हम लोगों को ('बहिरागतों' को) और पनाह देना नहीं चाहा। फलतः केवल दो लोगों को वहां रहने देकर बांकी सभी को वहां से पीछे बुला लिया गया। स्वाभाविक तौर पर हमारी प्रधान योजना वाले इलाके में हमारे काम को धक्का लगा।

हमारा दूसरा प्रयोजित इलाका था बिहार। चूंकि योजना के प्रधान

दौरान जब एक गांव में शाम ढले एक घर पर पेशेवर युवा कार्यकर्ता सरल भट्टाचार्य, सुधीर गांगुली तथा विद्या रात के भोजन के लिए इकट्ठा हुए तो पुलिस ने उन्हें घेर लिया और उसी रात को उन्हें ताड़ के पेडों से बांध कर गोलियां चला कर उनकी हत्या कर दी। वह रात थी 21 नवंबर 1973 की। एमसीसी के एक संस्थापक नेता कामरेड चंद्रशेखर दास की हत्या के बाद देहाती काम के साथ जुड़े एम.सी.सी. के तीन पेशेवर कार्यकर्ता पहली बार शहीद हुए। सारे संगठन ने उनके देशप्रेम और आत्मत्याग के महान प्रदर्शन को नमन किया।

dkdlk&vkmlxke dk l?k"k

1968 के अंतिम चरण में वर्धमान जिले के कांकसा, आउसग्राम, बुदबुद थाने के अंतर्गत जंगलमहल इलाके में काम शुरु किया गया। यह इलाका दुर्गापुर शहर से 12 मील भीतर जंगल आच्छादित आदिवासी इलाका था। तमाम जोतदारों के शोषण और अत्याचार के अलावा जंगल विभाग तथा पुलिस का भी तरह–तरह का जुल्म जारी था। कलकत्ते से एक मध्यमवर्गीय कर्मचारी को पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर इस इलाके में काम शुरू करने को भेजा गया।

इलाके में तब सीपीआई (एम) का किसान संगठन काम कर रहा था। दायित्वप्राप्त कामरेड इस इलाके के गांवों में बने रहकर कृषि क्रांति की राजनीति, नक्सलबाड़ी आंदोलन का प्रचार करने के साथ–साथ सीपीआई (एम) पार्टी के अवसरवादी तथा क्रांति विरोधी चरित्र को बेनकाब करते रहे।

इस काम के फलस्वरूप सीपीआई (एम) के किसान संगठन में दरार पड़ गयी और उनमें से बहुत सारे सदस्य हमारे किसान संगठन गठित करने के काम में आ जुड़े। मगर चालू तर्ज के किसान संगठन गठित करने की बजाय नये तर्ज का क्रांतिकारी किसान संगठन गढ़ने के विषय में परीक्षा जारी रही।

सीपीआई (एम) का किसान संगठन हर वर्ष उस इलाके में भूमिहीन किसानों को काम की मांग उठा कर बीडीओ के दफ्तर में आवेदन–प्रतिवेदन दिया करता। कुछ नेता लोग बीडीओ के कमरे में प्रतिनिधिमंडल के नाम पर

मारपीट कर कई को घायल कर दिया। वे लोग मेरा नाम भी जानते थे और उन्हें यह भी मालूम था कि यह कार्रवाई मेरे ही नेतृत्व में हुई थी। लिहाजा वे मुझे ढूंढने लगे। मुझे लगभग पकड़ भी लिया था। अचानक हमारा एक युवक उन लोगों के हाथ लग गया। उसे वे पीटते रहे, मैंने मौके की नजाकत समझ एक छलांग लगाई और उनकी पहुंच से कुछ दूर पहुंच गया। विशाल धान के ही खेत। चारों ओर धान के लहलहाते खेत। पानी और कीचड़ के बीच से मैं आगे बढ़ रहा था, किस तरफ जा रहा था, मुझे समझ में नहीं आ रहा था। दूर से लठैत दलालों की आवाजें सुनाई दे रही थी। गालियां बकते हुए कह रहे थे, ''साला भाग गया है।''

नवंबर का महीना था। हवा में ठंडक का पुट। मैं घुटनों तक कीचड़ पानी से गुजरता आगे की ओर बढ़ रहा था। इस तरह रात भर धान के खेतों में भटकते रहने के बाद अचानक मेढ़ पर एक पगडंडी मिल गयी, इसी रास्ते मैं आगे बढ़ने लगा। कुछ दूरी पर बड़ा रास्ता भी मिला। उस समय पौ फट रहा था। कुर्ता–लुंगी सब भीग गया था। इसी तरह करीब आठ मील चल कर एक अन्य गांव में आश्रय लिया।

उस दिन मैं फिर मौत के मुंह से बच गया था। अगर उनके हाथ लग गया होता तो जरूर मेरी हत्या कर देते। बाद में सुना था कि जोतदार का ऐसा ही निर्देष था।

उधर दक्षिण चौबीस परगना जिले के मोगराहाट थाने के इलाके में हमारे काम में विकास होने लगा। इस इलाके में कलकत्ते के एक स्कूल मास्टर को पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर भेज कर कामकाज की जिम्मेदारी सौंपी गयी। कई गावों में अच्छा संगठन बन खड़ा हुआ। कई गावों में युवकों को साथ लाकर अगुवा लोगों की हथियारबंद टुकडियां बनी, रात को पहरा देने की पद्धति शुरू की गयी। जोतदार के जुल्म के खिलाफ कई कार्यक्रम लिए गये। बीच बीच में पुलिस गश्त लगाती रहती। स्थानीय 16–17 साल का युवक पेशेवर कार्यकर्ता के तौर पर संगठन में शामिल हुआ। पश्चिम बंगाल में उस समय पुलिस तथा सीआरपीएफ के हमले, गिरफ्तारियां, खून (हत्याएं) आम हो चुकी थी। ऐसी अवस्था में मोगराहाट में पुलिस की सरगर्मियां बढ़ गयी थीं। मोगराहाट के ओसी अक्सर रात के वक्त गावों पर हमले कर रहा था। इसी

इलाके असम में विकास संभव नहीं था, लिहाजा बिहार राज्य को ही प्रमुखता देकर वहां फौज तथा आधार क्षेत्र निर्माण के लिए एक समग्र योजना बनायी गयी।

बिहार के गया जिले में पहले संपर्क के आधार पर यहां काम शुरू हुआ। सामंत प्रभुओं और जोतदारों का गढ़ यह राज्य क्रांतिकारी आंदोलन उभारने के लिए आदर्श राज्य था। भौगोलिक परिस्थितियों में भी दक्षिणी बिहार में फौज तथा छापामार इलाके गढ़ने के मामले में अनुकूल स्थितियां मौजूद थी। गया जिले के इस इलाके में उस समय फॉरवर्ड ब्लॉक का संगठन काम कर रहा था। इस इलाके में बालमुकुंद राही इस का नेतृत्व कर रहे थे। कामरेड के. सी. ने राही से संपर्क किया और फॉरवर्ड ब्लॉक के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ भी कई दौरों की बैठकें की। किसी–किसी सवाल पर भले ही राही सहमत हुए पर संसदीय चुनावों के बहिष्कार और सामंतवाद विरोधी सशस्त्र संग्राम शुरू करने के मामले में उनकी घोर आपत्ति थी। जबकि उनके सहयोगी क्रांतिकारी राजनीति का समर्थन करते हुए सशस्त्र संग्राम के बारे में बेहद उत्साहित थे। बाद में उन्होंने राही से बहस की तथा उनकी नौकरशाहाना काम की शैली एवं महज सुधारवादी कामकाज का विरोध करते रहे और हमसे संपर्क किया। गया के चाल्हो पहाड़ के नीचे के गांव में इन तमाम कामरेडों की मदद और सहयोग से कृषि क्रांति की राजनीति को आधार बनाकर, सामंतवाद विरोधी कार्यसूची लेकर उस पर काम शुरू हुआ।

1972 में कलकत्ते से एक मजदूर कामरेड को पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर मूल जिम्मेदारी देकर वहां भेजा गया। बिहार के चाल्हो पहाड़ और इसके आस–पास के गांवों को बिहार एमसीसी का जच्चाघर माना जाता है। बाद में संगठन बगल के जिलों औरंगाबाद, पलामू और चतरा में फैल गया। इसी समय यानी 1970 से ही बिहार के हजारीबाग, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह सहित पूरे छोटा नागपुर इलाके में (अब झारखंड) प्राकृतिक तौर पर पहाड़–जंगल से भरे आदिवासियों के बीच काम की शुरूआत हुई। इस इलाके में ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता कामरेड पी. बी. को भेजा गया (फिलहाल वे पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य हैं)। उनके योग्य नेतृत्व में दक्षिण बिहार के इलाके में विस्तार से शुरू कर बहुतेरे छोटे बड़े संघर्षों के जरिये सशस्त्र छापामार टुकड़ियां,

अलग–अलग जन संगठन, नारी मुक्ति संघ और सांस्कृतिक संगठन आदि स्थापित हुए।

इसी समय (1972–73 में) कामरेड कन्हाई चटर्जी ने जिन मुद्दों पर महत्व देकर बातचीत की थी, वे थीं, कृषि क्रांति की राजनीति के आधार पर दीर्घकालीन जनयुद्ध के लक्ष्य से फौज तथा आधार इलाके खड़ी करने के उद्देश्य से पार्टी, जनसंगठन तथा सामरिक संगठन के रूप तथा पद्धति क्या होगी।

विषय यूं थे .....

1. फौज और आधार इलाके खड़ी करने के लिए प्रायोजित इलाके में पेशेवर संगठक कार्यकर्ताओं को नियुक्त करना।
2. दीर्घकालीन जनयुद्ध के लक्ष्य की नयी धारा में जन अदालत तथा संगठन के रूप तय करना।
3. कामरेड माओ द्वारा प्रतिपादित नेतृत्व की पद्धतियों का सही–सही इस्तेमाल करना।
4. ग्रामीण इलाकों के आधार पर वैकल्पिक राजनीतिक सत्ता की स्थापना के जरिये सत्ता छीनने के लिए सत्ता के वैकल्पिक सांगठनिक रूप तय करना।
5. क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा बनाने के लक्ष्य और उसकी संरचनात्मक रूप और सांगठनिक रूप और प्रक्रिया और पद्धति तय करना।
6. जिन तमाम राज्यों अथवा इलाकों में संग्राम तथा संगठन निर्माण का काम हाथ में लिया जायेगा, वहां स्थानीय भूमिपुत्रों को नेता के तौर पर उभारने का काम हाथ में लेना।
7. पार्टी के नेतृत्वकारी कमेटियों में सिर्फ पेशेवर कार्यकर्ताओं को ही स्थान देकर उनका गठन करना।
8. पार्टी सांगठनिक रूप या ढांचा होगा, केंद्रीय कमेटी, स्पेशल एरिया कमेटी, जोनल कमेटी, एरिया कमेटी तथा सबसे निचले स्तर पर पार्टी 'सेल'।

अगुवा हिस्सों को लेकर संगठन बनाना तथा स्थानीय जालिम जोतदारों के शोषण जुल्म के खिलाफ स्थिति के अनुसार संघर्ष के विभिन्न कार्यक्रम लिया जाने लगा।

केनिंग टाउन से 'फेरी' नाव से मातला नदी पार कर उस पार के भांगनेवाली होकर चड़ाविद्या, कलाहाजरा, चूनोखाली, मालोंचो, कांठालबेड़े आदि गांव में काम बढ़ने लगा था। ये सभी जोतदारों के बड़े गांव थे। इस समय चड़ाविद्या गांव में संघर्ष के कई कार्यक्रम लिए गये। उस गांव का जोतदार गोपाल नसकर जालिम, सूदखोर, बंधक रखकर पैसे कर्ज देने वाला, किसानों की जमीन छीन लेना और झूठे मुकदमों में फंसाना आदि बुरे कर्म किया करता। उसके खिलाफ किसानों में तीव्र नफरत की भावना थी। पहले वहां सीपीआई (एम) का एक ढीला–ढाला किसान संगठन था। बाद में इसी संगठन के कार्यकार्ता हमारी राजनीति के पक्ष में चले आये। हमने तय किया कि अब के फसल काटने के मौसम में जोतदार के आठ बीघा जमीन से धान काटा जायेगा। उसकी तैयारी के तौर पर पारंपरिक हथियारों से लैस स्वेच्छासेवी वाहिनी तथा स्क्वाड बनाया गया। हमसे प्रभावित अन्य गांवो के किसानों को भी इस काम में शामिल करने की कोशिश की गयी। फसल काटने के दिन उन्हें आने के लिए कहा गया। वह दिन था 20 नवंबर 1972, हम सत्तर लागों ने रात नौ बजे के बाद उस खेत से धान काटना शुरू किया। जोतदार का आदमी कुटिया बनाकर उस खेत में धान का पहरा दिया करता। तय किया गया कि उसे बांध कर रखा जाएगा। पर वह बहुत ज्यादा रोने लगा। किसानों ने उसे भगा दिया। इस गलती की भारी कीमत चुकानी पड़ी। लगभग घंटा भर धान काटने के बाद हमने देखा कि काफी लोग उस खेत की ओर बढ़े आ रहे हैं। हमने सोचा कि जिन्हें मदद के लिए आने को कहा गया था, वे आ रहे हैं, पर वे थे जोतदार की वाहिनी वाले। जमीन के उसी पहरेदार ने जिसे भगा दिया गया था, जोतदार को खबर कर दी थी। जोतदार ने उसके लठैत समूह को हम पर हमला करने को भेज दिया था। हाथों में लाठी, बल्लम, टांगी, हंसुआ आदि हथियार थे। उन्होंने खेत के पास पहुंचते ही ''मारो सालों को, खत्म कर दो'' कह, चिल्लाते हुए हम पर अचानक हमला कर दिया। हमारे साथ आये लोगों ने धान काटना रोक प्रतिरोध करने की कोशिश की, उन्होंने

अपरिचित व्यक्ति को आश्रय नहीं देना चाहता। पर इलाका छोड़ कर जाना नहीं चलेगा। हर तरह के लागलपेट और लौटने की इच्छाओं से उबरकर किसी तरह शहर कमेटी से संपर्क कर पैसों का जुगाड़ किया। इलाके में फेरीवाले की तरह परिचित होने के लिए बच्चों के लिए बांसुरियां, कुमाओं (!)की घूमनी (चकरी), गुब्बारे और कई तरह के मरहम आदि खरीदकर इनकी फेरी करना शुरू किया। इसमें सुविधा यह हुई कि रात को खाना मिले या न मिले किसानों के 'दावा' में (घर के बाहर आंगन में बनी कुटिया में) रात गुजारने की अनुमति मिल जाती थी। हाट बाजार में फेरी के दौरान गरीब किसानों से संपर्क या परिचय हो जाता था। इस तरह क्रांतिकारी जीवन के एक कठिन दौर से गुजरते हुए मुझे निम्न पूंजीवादी मानसिकता और जीवन पद्धति में एक बड़ा परिवर्तन लाने का मौका मिला। यह समय मेरी अग्नि परीक्षा का था।

बाद में जब किसानों से घनिष्ठ परिचय हो गया और राजनीतिक बातचीत के जरिये उनका कुछ विश्वास हासिल कर पाया, तब उनके घरों पर ही दो–तीन दिन रहने का मौका मिलने लगा। कामरेड के.सी. ने जैसा हम लोगों को सिखाया था कि किसानों के साथ एकात्म होने और उनकी आस्था हासिल करने के लिए उनके साथ रहना, खाना और काम करना पड़ेगा। इसी के मुताबिक भोर ही उठकर 'पांता भात' खाकर किसानों के साथ खेत में काम करने चला जाता। इस काम में सब्जी–बगीचा लगाना, क्यारियां बनाना, फावड़ा चलाना, कुल्हाड़ी चलाना, पेड़ काटना, तालाब से पानी लाना आदि करना पड़ता। इसी तरह खेती के मौसम में घुटनों तक कीचड़ भर पानी में खड़ा होकर धान बोया जाता। फसल कटाई के समय धान काटकर गट्ठर लाद कर सर पर ढो कर किसान के घर तक पहुंचाना आदि काम करना पड़ता। शाम के बाद किसानों को घरों से बुलाकर उनकी जिंदगी के दुःख दर्द के कारणों और उनके समाधान के तौर पर कृषि क्रांति के कार्यक्रम पर बातचीत करता था। इस तरह उन तमाम इलाकों के गरीब युवाओं से घनिष्ठता बढ़ा कर उनको राजनीतिक तौर पर शिक्षित करने की कोशिश करता था।

जिन सब गांवों में संपर्क बने, वे सभी सीपीएम प्रभावित और उनके किसान संगठन वाले इलाके से थे। यहां किसान कार्यकर्ताओं से राजनीति की चर्चा के जरिये उन्हें सीपीआई (एम) के प्रभाव से बाहर ला सका था। उनमें से

पश्चिम बंगाल और अखिल भारतीय क्षेत्र में नक्सलबाड़ी की राजनीति पर या भारतीय राज्य के वर्ग–चरित्र/स्वभाव के बारे में क्रांतिकारी खेमे में तरह–तरह की सैद्धांतिक चर्चा एवं बातचीत चलते रहने एवं लेख–निबंधों के प्रकाशित होते रहने के बावजूद भ्रम की स्थिति बनी हुई थी। कृषि क्रांति का जनगणतांत्रिक क्रांति की अंतर्वस्तु के तौर पर मान कर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के दौर से कम्युनिस्ट आंदोलन में जो सुधारवादी, अवसरवादी राजनीति चली आ रही है, उसका विरोध करने के साथ–साथ माओ–त्सेतुङ विचारधारा के आधार पर तथा चीनी क्रांति की रणनीति व कार्यनीति के अधीन क्रांतिकारी पार्टी, जनसंगठन, फौज एवं आधार इलाका बनाने का काम किस तरह शुरू किया जाएगा, इन पर भी स्पष्टता नहीं थी।

उस समय पश्चिम बंगाल सहित अखिल भारतीय क्षेत्र में सीपीआई (एम–एल) पार्टी अनेक हिस्सों में बंट गयी थी। विभिन्न जटिलताएं विभ्रांति, गुटबाजी की मानसिकता, पेटी–बुर्जुआ (निम्न पूंजीपति वर्गीय) संकीर्णता, अवसरवाद, सटीक रणनीति एवं कार्यनीति के अधीन इलाकावार काम करने के मामले में अनिच्छा आदि विषय इन तमाम ग्रुपों में सिर उठा रहे थे।

इसी दौरान कामरेड कन्हाई चटर्जी ने सीपीआई (एम–एल) की गलत लाइन के बारे में हमें सतर्क करने के साथ–साथ एम.सी.सी. के अंदर भी जो तरह तरह की भ्रांतियां और कमजोरियां हैं, उन्हें चिन्हित किया और उपरोक्त विषयों की प्राथमिक रूपरेखा पर बातचीत करके संगठन को सटीक दिशा–निर्देश दिया। वे हैं:

1. कृषि क्रांति की राजनीति के अंतर्गत सामंतवाद विरोधी कार्यक्रमों के माध्यम से जो इलाके प्राकृतिक रूप से (पहाड़–जंगलों से आच्छादित) अनुकूल हैं, वहां की जनता पर तीव्र शोषण, जुल्म और वंचना है और इसके साथ–साथ सामाजिक तौर पर पिछड़े हुए होने के साथ ही जिनकी आत्मसम्मान और मर्यादा तथा अधिकारों को पैरों तले रौंदा जा रहा है, ऐसे तमाम इलाकों में जनता से एकजुट बने रहते हुए उनके साथ एकात्म होने के जरिये संग्राम तथा संगठन खड़ा करना और यह लक्ष्य उन तमाम इलाकों में तत्कालीन परिस्थितियों के मुताबिक श्रेष्ठ पेशेवर संगठक कार्यकर्ताओं को नियुक्त करना।

यह लक्ष्य प्रायोजित इलाके के तौर पर तत्कालीन संयुक्त बिहार राज्य के समूचे दक्षिण बिहार (अब झारखंड) इलाके में और बिहार से सटे पश्चिम बंगाल के जंगल तथा पिछड़े इलाके पश्चिम मेदिनीपुर (बेलपहाड़ी सिल्दा थाना), बांकुड़ा एवं पुरूलिया जिलों को लेकर स्पेशल एरिया कमेटी (एस.ए.सी.) के गठन का फैसला हुआ। इन तमाम इलाकों को छापामार युद्ध शुरू करने के लिए आदर्श मानकर पार्टी नेतृत्व ने उच्चतम कमेटी–सेंट्रल कमेटी के बाद ही इसे महत्व दिया। इस स्पेशल एरिया कमेटी के इलाके में पार्टी के सांगठनिक ढांचे में अन्य कमेटियों को इस तरह से सजाया गया :– रीजनल कमेटी, जोनल कमेटी, सब जोनल कमेटी, एरिया कमेटी और सबसे निचले स्तर पर पार्टी सेल। कमेटी की सदस्य संख्या चाहे जितनी भी हो उन्हें विषम संख्या में रखना था।

2. दूसरा प्रश्न है कि जन आंदोलन और जन संगठन की संशोधनवादी दिशा (शासक वर्ग के कानून तथा प्रशासनिक अधिकारियों के अधिकार/सत्ता के अधीन) के साथ कथनी और करनी में फर्क रखकर दीर्घकालीन जनयुद्ध खड़ा करने के लिए इलाकावार सत्ता छीनने (स्थापित करने) की दिशा के अंतर्गत जन आंदोलन और जन संगठन का रूप क्या होगा। माओ–त्सेतुङ ने जैसा सिखाया है कि जब युद्ध प्रारंभ नहीं हुआ है, तब जन संगठनों का काम है जनयुद्ध की तैयारी करना। जब युद्ध छिड़ जाय तब उसमें सीधे–सीधे सहयोग देना। प्रश्न है, पुराने कामकाज के तरीके से, सुधारवादी जन आंदोलन के जरिये, क्या हम लक्ष्य तक पहुंच सकेंगे? अथवा इलाके के आधार पर जनता की जनसत्ता स्थापित करने के लिए इसका सांगठनिक रूप क्या होगा। पिछले कई वर्षों से सामंतवाद विरोधी कार्यक्रम को अमल करने के प्रयास में हमने देखा है कि शासक वर्ग के प्रत्यक्ष हमले से जन संगठनों को बचाए रखने के लिए उनका रूप गुप्त होगा। देहाती इलाके में दूसरे जन संगठन के रूप वहां की परिस्थिति और जनता के सोच–विचार के स्तर के मुताबिक खुला या अर्ध गोपनीय स्वरूप के हो सकते हैं। फौज तथा आधार क्षेत्र स्थापित करने के मकसद से इलाकावार सत्ता छीनने के लिए स्थानीय जनसत्ता के कार्य के मुताबिक उसके सांगठनिक रूप होंगे ''क्रांतिकारी किसान कमेटी''

शिवदास घोष के नेतृत्व में एसयूसीआई पार्टी ने पुलिस की निंदा करते हुए एक परचा प्रकाशित किया।

if'pe cxky e nlj fty dk dke

पश्चिम बंगाल में उस समय काम के इलाके के तौर पर दक्षिण चौबीस परगना और वर्धमान जिले के कांकसा, आउसग्राम थाने के इलाके में नये तर्ज के जन आंदोलन तथा छापामार इलाके उभारने के लक्ष्य से कार्यकर्ताओं को नियुक्त किया गया।

दक्षिण चौबीस परगना में, वासंती, संदेशखाली, गोशाबा आदि थाना इलाकों में काम की योजना थी। भौगोलिक नजरिये से ये तमाम थानों के इलाके छोटी–बड़ी नदियों, छोटे–मोटे नाले और विख्यात सुंदरवन में हैं, जिसकी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश से लगती है। छापामार इलाके के तौर पर इस इलाके को विकसित करने की संभावना है। इस इलाके में कुख्यात सामंत प्रभुओं–जोतदारों के शोषण जुल्म तथा अत्याचार तीव्र है। इस इलाके में 1946 से 51 तक ऐतिहासिक तेभागा आंदोलन हुआ था। इस इलाके में बराबर ही एसयूसीआई, सीपीआई (एम) और आरएसपी के प्रभाव में लगातार सामंतविरोधी जन आंदोलन होता आया है।

इस इलाके के महत्व के मुताबिक इस इलाके में कई छात्र–युवा कामरेडों को योजनाबद्ध ढंग से नियुक्त किया गया। इस समय मुझे भी वीरभूम से उठाकर इस इलाके में काम की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इस इलाके के काम ने ही मेरे क्रांतिकारी जीवन में बड़ा बदलाव ला दिया।

गरीब तथा भूमिहीन किसान जनता के साथ अक्षरशः एकात्म होने या वर्गच्युत होने का काम यहीं शुरू हुआ। पहले इन इलाकों में हमारा कोई संपर्क नहीं था। दो–एक किसान परिवार में एकाध वक्त या रात भर से ज्यादा टिकने की स्थिति नहीं थी। एक बेला या रात गुजारने के बाद आगे कहां जाऊंगा, ठीक न था। उस समय लगभग खाली जेब हालत में सुबह भूखे ही और निराश्रय होकर भी वहीं टिका रहना पड़ा। नंगे पांव, सिर्फ लुंगी और कुर्ता या गमछा लपेटे संपर्क तलाशने के लिए दिनभर गांव दर गांव भटकना पड़ा। कोई

इसकी व्याख्या करने की जरूरत नहीं, क्योंकि इस विषय पर विभिन्न गुटों ने अपनी–अपनी व्याख्याएं और आलोचनाएं की है और लेखों के रूप में प्रकाशित भी की है। उस समय पार्टी के बाहर रहते हुए निरीक्षण के जरिये जितना समझा हूं, उसके आधार पर कह सकता हूं कि क्रांतिकारी तौर–तरीकों के अनुशीलन की प्रक्रिया खत्म होने से पहले ही पेट्टीबुर्जुआ उतावलापन के कारण झटपट पार्टी खड़ी करने की प्रक्रिया में ही पार्टी की फूट के बीज रह गये थे, जिसने बाद में अनुकूल अवसर पाकर सर उठाया। पता चलता है कि बिहार के सत्यनारायण सिंह, उत्तर प्रदेश के शिव कुमार मिश्र, दक्षिण भारत के कोई–कोई और पश्चिम बंगाल के कुछ प्रभावशाली क्रांतिकारियों ने इस फूट की शुरूआत की ।

जो भी हो, ऐसी जटिल परिस्थिति में कामरेड सी.एम. गिरफ्तार हो गये। सुना हूं कि सी.एम. के एक विश्वस्त साथी दीपक ने ही सी.एम. के गोपनीय अड्डे का पता पुलिस को बताया था। बीमार शरीर वाले सी.एम. को लालबाजार पुलिस मुख्यालय में दीर्घ समय तक बैठाये रखकर पूछताछ की जाती रही और उनकी जीवनरक्षक दवाएं भी नहीं दी गयी। फलतः वे यह जुल्म बर्दाश्त नहीं कर सके।

पुलिस ने तत्काल तमाम थानों में जरूरी सूचना भेजी ''सतर्क रहिए सतर्क रहिए..... चारु मजुमदार की मृत्यु हो गई है, ... हमको अवश्य ही आक्रामक होना पड़ेगा।'' पुलिस को आशंका थी कि क्रांतिकारी पुलिस पर बदले की कार्रवाई कर सकते हैं। इस तरह से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के एक उज्ज्वल नक्षत्र को हमलोगों ने खो दिया। उनकी मृत्यु थाई पर्वत की तरह भारी है। उनकी भूल–त्रुटि जो भी रही हो, वे सच्चे अर्थों में देशप्रेमी और मन–प्राण से शत–प्रतिशत क्रांतिकारी थे। ऐसे वक्त उनकी गिरफ्तारी और शहादत ने सी.पी.आई. (एम–एल) की फूट को और तीव्रगति दी और यह पार्टी पश्चिम बंगाल तथा अखिल भारतीय स्तर पर भी बंट कर बिखरती चली गयी। इसके चलते समग्र रूप से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को अपूरणीय क्षति हुई। कामरेड सी.एम. की मृत्यु के बहत्तर घंटे के अंदर इस हत्या की तीव्र निंदा करते हुए हमने परचे बाँटे, जिसे कामरेड कन्हाई चटर्जी ने खुद लिखा था। उस समय एम–एल पार्टी की ओर से कोई परचा नहीं आया। कुछ दिन बाद

बनाना। इस गुप्त जन संगठन का आधार होगा, गरीब–भूमिहीन किसान वर्ग की जनता और उसका राजनीतिक नारा होगा – ''सही किसानों को जमीन और किसान कमेटी के हाथों में सत्ता।''

3. उपरोक्त मकसद हासिल करने के लिए पार्टी नेतृत्व को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। यहां नेतृत्व की पद्धति का सवाल महत्व का हो जाता है। माओ की शिक्षा के अनुसार नेतृत्वकारी कमेटी में काम का उत्तरदायित्व और काम का इलाका तय करने के बाद हर नेता को व्यावहारिक (जमीनी) अनुभव हासिल करने के लिए तयशुदा इलाके के एक तिहाई हिस्से में उन्हें स्वयं जनता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़कर सामंतवाद विरोधी संघर्षों में नेतृत्व प्रदान करना होगा और इस तरह अर्जित अनुभव से बाकी दो तिहाई इलाके के काम में वे परोक्ष नेतृत्व देंगे। नेतृत्व को उसके काम के तौर–तरीकों के हिसाब से उसके अंतर्गत कमेटियों में काम कर रहे कार्यकर्ताओं से गहरा संबंध न रखते हुए ऊपर की कमेटी के नेता की हैसियत से बीच–बीच में कमेटी के साथ बैठकें लेने और अपने काम के प्रत्यक्ष अनुभव से शिक्षा न देकर केवल मनोगत धारणाओं अथवा अप्रत्यक्ष (परोक्ष) अनुभव से समस्याओं से सतही और आधे–अधूरे समाधान देना तथा नौकरशाही तरीके से कमेटी संचालन त्यागना होगा।
4. इलाके की नेतृत्वकारी कमेटियों में संगठक के तौर पर स्थानीय कार्यकर्ताओं को विकसित करने के लिए उनको सिद्धान्त, राजनीति, संगठन तथा क्रांतिकारी काम के तौर–तरीके में शिक्षित कर नेतृत्वकारी कमेटी में लाना होगा, ताकि स्थानीय जनता का विश्वास तथा आस्था हासिल की जाय और वे देख सकें कि केवल भिन्न भाषा–भाषी बाहर के लोग ही नहीं उनके घर की सन्तान भी पार्टी के नेतृत्व में हैं। नेतृत्वकारी कमेटियों में वर्ग के विन्यास के सवाल गरीब तथा भूमिहीन किसान तथा आदिवासी जन–जातियों की प्रधानता तथा सक्रिय भूमिका को निश्चित करना।
5. पार्टी के तमाम नेतृत्वकारी कमेटियों में क्रम से– केन्द्रीय कमेटी, राज्य कमेटी, रीजनल कमेटी, जोनल कमेटी, सब जोनल कमेटी और एरिया कमेटी के लोग महज पेशेवर क्रान्तिकारियों को लेकर बनाना होगा। एरिया कमेटी के सभी पेशेवर न हो पाने पर भी उसके सचिव को अवश्य

ही पेशेवर होना होगा। गुप्त क्रांन्तिकारी पार्टी की सांगठनिक संरचना में अवश्य ही तमाम परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए दृढ़संकल्प वाले मानसिक, शारीरिक तथा गुप्त काम की पद्धति में पारदर्शी/कुशल होना होगा। पेशेवर क्रान्तिकारी के अलावा इस काम में ढ़िलाई, उदारता तथा स्वतःस्फूर्तता का शिकार होने की संभावना रहती है, जो दुश्मन के एक चोट से चकनाचूर हो सकते हैं।

6. मजदूर वर्ग के नेतृत्व में और मजूदर–किसान एकता के आधार पर साम्राज्यवाद तथा सामन्तवाद–विरोधी क्रांन्तिकारी संयुक्त मोर्चा खड़ी करना है – यह आम सिद्धान्त है। कौन लोग इस संयुक्त मोर्चे में एकताबद्ध हो सकते हैं और किसके खिलाफ, इस सवाल पर जो कहा गया, वह है –

    क) अमेरिकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध

    ख) सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के खिलाफ

    ग) नौकरशाही दलाल पूँजी तथा दलाल बड़े पूँजी के विरुद्ध

    घ) सामन्तवाद के खिलाफ

यह मोर्चा क्या एक प्रचार मंच के तौर पर बनाया जायेगा या साम्राज्यवाद–सामन्तवाद विरोधी युद्ध खड़ी करके उसे आगे ले जाने के लिए मजूदर, किसान, निम्नपूँजीपति तथा देशभक्त बुर्जुआ का एक क्रांतिकारी मंच के तौर पर खड़ा करना होगा? इस मंच के खड़ा करने का समय कब होगा? क्या फौज तथा आधार इलाका खड़ा होने बाद? अथवा साम्राज्यवाद तथा सामन्तवाद विरोधी कृषि क्रांन्तिकारी राजनीति के आधार पर इलाकेवार सत्ता पर कब्जा के लक्ष्य से फौज तथा आधार इलाका खड़ा करने के काम में शुरू से ही संग्रामी इलाके में यह मोर्चा बनाना होगा। यह मोर्चा खड़ा करने के लिए उपरोक्त प्रक्रिया, पद्धति अपनाये जाने के साथ ही अखिल भारतीय आधार पर चार पहाड़ों के विरुद्ध जिन्हें एकजुट किया जा सके, उन्हें साथ लेकर एक बड़े खुले मंच पर एकजुट करने का प्रयास चलाते रहना होगा।

उपरोक्त बिंदुओं पर बातचीत में कामरेड के.सी. एक रूपरेखा सामने

रखने में सक्षम होने पर भी बाद में और भी अनुभवों के आधार पर उन्होंने इन विषयों को और भी सुस्पष्ट तथा विकसित किया। दीर्घकालीन जनयुद्ध की रोशनी में पार्टी गठन तथा फौज और आधार इलाका बनाने के लक्ष्य में नये तरह के जन आन्दोलन तथा संगठन के जो रूप उन्होंने दिये, उसे ही एम.सी. सी. की खासियत के तौर पर देखा जा सकता है।

lh-ih-vkbZ- ¼,e&,y½ ikVhZ e fc[kjko dh ifØ;k 'k: vkj uDlyckMh vkUnkyu d lLFkkid dkejM pk: etenkj dh ekr

जिस समय की बात हो रही है, उस समय यह पूरे क्रान्तिकारी खेमे के लिए एक संकटपूर्ण (Critical) समय था। तत्कालीन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सिद्धार्थ राय के नेतृत्व में एक ओर कॉँग्रेसी गुण्डे, पुलिस, सीआरपीएफ दमन अभियान चलाकर सैकड़ों युवा क्रान्तिकारियों की खुलेआम गोली मारकर हत्या कर रहे थे, अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियां हो रही थी, दूसरी ओर सी.पी.एम. की गुण्डावाहिनी ने भी क्रान्तिकारियों पर हमले, उनकी हत्या, घर–बार जला देना, उन्हें पकड़वा देना, इलाके से उखाड़ देना आदि के जरिए एक भयावह वातावरण कायम किया। पुलिस की मदद से सी.पी.एम. तथा कॉँग्रेसी गुण्डों ने दक्षिणेश्वर, डायमंड हार्बर, सिंथि, उत्तरपाड़ा आदि इलाकों में युवा क्रांतिकारियों का जो नरसंहार किया, उसका जख्म आज भी ताजा है।

सीपीआई (एम–एल) पार्टी में उस समय तरह–तरह की बहसें तथा टूटन के संकेत दिखाई पड़े। पार्टी की प्रधान कार्यसूची के तौर पर 'सफाया अभियान', स्कूल–कॉलेजों पर हमला, मूर्ति तोड़ना आदि के बारे में कई सवाल उठे तथा बहस शुरू हुई। इसके अलावा अखिल भारतीय संगठन ए.आइ.सी.सी. सी.आर. में जो सैद्धान्तिक, राजनीतिक तथा संगठन संबंधी सवालों का निपटारा होने से पहले ही पार्टी गठित किया गया, उसके फलस्वरूप यह वितर्क बाद में पार्टी में तीव्र रूप से उभरा और इसके साथ सफाया का कार्यक्रम जुड़ गया तथा दूसरी सांगठनिक समस्याएं भी उभरी। किस कारण से यह टूटन आयी

केंद्रीय कमेटी के पास उसके एक स्तर ऊपर की कमेटी की अनुमति लेकर आवेदन कर सकेंगे। ऊपर की कमेटी यानी जिस कमेटी के द्वारा जो पत्र भेजा गया है, उस व्यक्ति या कमेटी के पत्र को दबाकर या नजरअंदाज नहीं कर सकेंगे।

3. अल्पमत बहुमत के अधीन– पार्टी कमेटी व्यवस्था में कमेटी में अल्पमत बहुमत के मातहत रहेगा। जनवादी केंद्रीयता के नियम के मुताबिक कमेटी में निर्णय लेते समय बहुमत की राय को ही कमेटी की राय के तौर पर स्वीकारना पड़ेगा। कमेटी का कोई व्यक्ति/सदस्य उस बहुमत की राय से यदि सहमत न भी हो, तब भी केंद्रीयता के नियम के मुताबिक बहुमत की राय को ही पार्टी की राय के तौर पर स्वीकारना होगा। इसी के मुताबिक प्रचार तथा काम करना पड़ेगा। जनवादी केंद्रीयता के नियम के मुताबिक कमेटी के सभी सदस्य अपनी–अपनी राय रख सकेंगे। यही जनवाद है। और चर्चा के आधार पर जब बहुसंख्यक सदस्य सहमत होते या किसी फैसले पर पहुंच जाते हैं, उस समय वही केंद्रीयता होती है। इस केंद्रीयता के मत को ही अल्पमत या बहुमत सदस्यों को कमेटी के फैसले के तौर पर मान लेना होगा। कमेटी व्यवस्था का संचालन के दौरान मैंने देखा है कि उच्चतर कमेटी के कोई–कोई नेता उनके द्वारा संचालित कमेटी में उनके जैसा कोई–कोई का अल्पमत की राय का बराबर का हैं, तब वे केंद्रीयता के नियम लांघकर अपने कार्यक्षेत्र में अपने मातहत कमेटी में या सदस्यों के सामने कमेटी के बहुमत की राय को रखने के साथ–साथ अपनी खुद की राय को भी (जो अल्पमत की राय है) महत्व देते हैं। केंद्रीयता के नियम के मुताबिक वे ऐसा कभी नहीं कर सकते।

ऊपर की कमेटी में उसके भिन्न मत के विषयों को निचले स्तर की कमेटी में नहीं रखा जा सकता। वह अपना मत अगली कमेटी बैठक में रख सकते हैं या कमेटी की अनुमति लेकर अपने ऊपर की कमेटी को बता सकते हैं। मगर उनका मत कभी भी केंद्रीयता के मत का विरोध करते हुए नीचे नहीं ले जा सकते हैं। क्योंकि वहां उनका

काम का इंतजाम करने के लिए है। आपके इस दफ्तर का खर्च आपकी तनख्वाह जन साधारण के टैक्स के पैसों से आता है, आपमें अगर कुछ करने की क्षमता नहीं है तो इस दफ्तर को रख कर क्या लाभ? और आप भी तो हमारी तरह असहाय हैं। तो दफ्तर में ताला लगा कर हमारे साथ जुलूस में चलिए। सीपीआई (एम) के नेताओं ने किसानों को समझाने की कोशिश की, पर किसानों ने उनसे भी बहस छेड़ उन्हें असहाय बना दिया। इसके बाद बाहर के किसान भी हो हल्ला मचाते हुए बीडीओ के दफ्तर में घुस आये। उन्होंने बीडीओ को कुर्सी से उठा कर बाहर लाया और दफ्तर को ताला लगा दिया।

यह घटना बिल्कुल अभूतपूर्व था, उत्पीड़ित किसानों की पहल के द्वार इसने खोल दिये। सारे इलाके में इसका प्रभाव पड़ा और नये तर्ज के जन–आंदोलन का आगाज़ हुआ। जहां प्रचलित कानून तथा प्रशासनिक वर्चस्व को अस्वीकार कर किसान अपनी क्रांतिकारी ताकत का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इसके बाद नये तर्ज के किसान संगठन उठ खड़े हुए। राजनीतिक तौर पर चेतनायुक्त और संग्राम में अगुआ कार्यकर्ताओं को लेकर दुश्मन की नजर बचाकर काम करने में सक्षम और जरूरत पड़ने पर भूमिगत होने को तैयार लोगों को लेकर ही इसकी बुनियादी कमेटी का गठन किया गया। क्रांतिकारी किसान कमेटी के नाम से यह संगठन किसान जनता की वैकल्पिक सत्ता के संगठन के रूप में उभरा। इस कमेटी के मूल लक्ष्य को नारों के रूप में बताया गया : ''सही किसानों के हाथ में जमीन और किसान कमेटी के हाथों में राजनीतिक सत्ता''।

इस पर क्रांतिकारी किसान कमेटी के नेतृत्व में सामंतवाद विरोधी तथा वन विभाग के तरह–तरह के जुल्मों के खिलाफ आंदोलन उभरा। इलाके की प्रतिक्रियावादी ताकतें और पुलिस सक्रिय हो उठी। स्थानीय युवकों को लेकर स्वेच्छासेवी वाहिनी गठित की गयी। प्रचलित/पारंपरिक हथियारों से सज्जित कई स्क्वाड गठित किये गये। स्थानीय किसान नेता रावण मुर्मू का नाम चारों और फैल गया। पुलिस उसे बुरी तरह तलाश रही थी। इस हालत में संघर्ष और पार्टी संगठन का और विकास हुआ। इसके साथ ही इलाका विस्तार के इरादे से हुगली जिले के एक छात्र (कामरेड कुलकुल–हुगली मोहसिन कालेज

के बीएससी तीसरे वर्ष के छात्र) को पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर कांकसा में भेजा गया।

उनके काबिल नेतृत्व में पार्टी का ढांचा, सिद्धांत और राजनीति में कार्यकर्ताओं का स्तर भी बढ़ा और इलाके का विस्तार भी हुआ। छापामार टुकड़ियों को आग्नेयास्त्रों से लैस करने के लिए स्थानीय जोतदारों और वन विभाग की बंदूकों को जब्त करने का कार्यक्रम लिया गया। कुल ग्यारह बंदूकें जब्त कर छापामार टुकड़ियों के स्तर को उन्नत किया गया। छिपे रूप से रहना तथा चौबीसों घंटे पहरे/निगरानी रखने की पद्धति अपनायी गई। वन दफ्तर के कर्मियों की बंदूकें छीन कर उन्हें भगा दिया गया और जंगलों को आम जनता की देखरेख तले ले आया गया। इन तमाम कार्यक्रमों में किसान जैसे–जैसे अगुआ की भूमिका लेते रहे, उसी तरह पुलिस गश्त, दमन नीति एवं गिरफ्तारियां बढ़ती रही।

विस्तृत इलाके में संघर्ष के फैल जाने के बावजूद समस्या थी कि जंगल से घिरे इलाकों (गावों) के अलावा समतल (मैदानी) इलाके में संगठन का विस्तार करना और दुर्गापुर शहर में पार्टी बनाना। इलाका के विस्तार के बावजूद दुश्मन के हमले के समय पीछे हटने की जगह की कमी के चलते संघर्ष को ऊंचे पादान पर ले जाने में समस्या आ रही थी। 1974 के अंत तक इस इलाके के संघर्ष पर तरह–तरह का दमन–उत्पीड़न होने के बावजूद इस इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन की अग्रगति बनी रही। हम लोगों की कमजोरी थी कि संगठन की तरफ से इसके प्रचार के अभाव के कारण कांकसा के उन्नत स्तर पर पहुंचे इस संघर्ष के बारे में क्रांतिकारी खेमे में कोई जानकारी या धारणा नहीं थी। बाद में क्रांतिकारी खेमे से कुछ लोगों ने हमारी इस कमजोरी की रचनात्मक आलोचना भी की थी।

1975 के आपातकाल के मौके का फायदा उठाकर शासक वर्ग ने इस संघर्ष को कुचलने की कोशिश की और इसमें सफल भी हुआ। बड़ी संख्या में (जनमत के मुताबिक करीब 4 हजार) अर्द्धसैनिक बल उतार कर बुरी तरह कॉम्बिंग ऑपरेशन चलाये गये। दुर्गापुर शहर से जंगलमहल तक नयी सड़क बनायी गयी। सारे इलाके में कई पुलिस कैंप स्थापित किए गये। गांव–गांव में व्यापक तलाशी, मारपीट और घर गिरा देना एवं गिरफ्तारियों का दौर शुरू हुआ और चलता रहा। अखबार या रेडियो में इसका समाचार नहीं आया।

समस्या जरूर है। क्योंकि सर्वहारा वर्गीय सिद्धांत को आदर्श मान कर ये सदस्य यदि सचमुच वर्गच्युत न हो सके और जीवन–यात्रा से शुरू कर, आचार–व्यवहार में विचार एवं कार्य के तौर तरीकों में सर्वहारा नीति को लेकर न चल सकें, तो अनिवार्यतः पार्टी तरह–तरह के नुकसान का सामना करेगा।

पार्टी कमेटी व्यवस्था में जो तमाम गलतियां, समस्याएं तथा अंतर्विरोध दिखाई देते हैं, उसका मूल कारण सैद्धांतिक समस्या में निहित है। पार्टी खड़ी करने का अर्थ यहां मूल रूप से सैद्धांतिक तथा राजनीतिक आधार पर अग्रणियों को समेटना या संगठित करना होगा। सिद्धांत में अगुआ, भारत की श्रेष्ठ संतान ही पार्टी में सदस्यता पाने के योग्य हैं। वे चाहे किसी भी वर्ग से क्यों न आये हों, वे अगर देशप्रेम के आदर्श को ही दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आदर्श के तौर पर माने, उसकी नजर में मातृभूमि ही सब से प्रिय हो, महान कर्तव्य के तौर पर जनता की सेवा करने को मानते हों, ऐश्वर्य के तौर पर रुपया–पैसा, गाड़ी, मकान आदि के बदले ईमानदारी, त्याग, कष्ट सहिष्णुता और जनता के हित को महत्व देते हैं, तो वे इस पार्टी के सदस्य होने के पात्र हैं।

tuoknh dsanh;rk ds fu;e eku dj ikVhZ ds dke dks lapkfyr djuk gh ikVhZ deVh O;oLFkk gS

1. व्यति संगठन के अधीन – कमेटी व्यवस्था में यदि किसी कामरेड के सामने व्यक्तिगत या पार्टीगत समस्या दिखलाई दे तो सर्वहारा वर्ग के सिद्धांत के मुताबिक व्यक्तिगत समस्या को पार्टी के आदर्श के अधीन रख कर काम करेंगे। पार्टी काम में नुकसान या आदर्शगत छवि की अनदेखी करके वे कभी भी व्यक्तिगत समस्या को वरीयता नहीं दे सकते।
2. नीचे की कमेटी ऊंचे स्तर की कमेटी के अधीन – आमतौर पर निचले स्तर की कमेटी ठीक उससे ऊपर के स्तर की कमेटी की सलाह के अनुसार काम करेगी। अगर निचली कमेटी या कोई व्यक्तिगत सदस्य का ऊपरी कमेटी के साथ कोई अंतर्विरोध होता है तो वह कमेटी या व्यक्ति/सदस्य उसकी समस्या सुलझाने के लिए उच्चतर कमेटी या

करना युद्ध के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। पार्टी सच ही इन विषयों को नजरअंदाज नहीं कर सकती है।

ट्रेड यूनियन फ्रंट का काम करते हुए देखा है कि मजदूर वर्ग क्रांतिकारी होने पर भी उनमें वर्ग विन्यास (विभाजन) है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। कारपोरेट हाउस के मालिक के अधीन उद्योगों में या बड़े–बड़े कारखानों में कार्य करने वाले मजदूरों की आमदनी आम तौर पर अच्छी होतइयन आंदोलन में ये सब लेनिन द्वारा वर्णित ''बाबू मजदूर'' हैं। यही लोग कारखानों में यूनियन (के नेता हैं) और उनका संचालन करते हैं और मूल भूमिका निभाते हैं व समझौता–परस्त और मालिकों के दलाल के तौर पर काम करते हैं। ये लोग क्रांति विरोधी हैं। दूसरा हिस्सा मंझोले आकार का है। गाँव में कुछ खेत या दूकान वगैरह हैं। कारखाने की आमदनी से वे गाँव में जमीन खरीदते हैं या व्यवसाय में पैसा लगाते हैं। संघर्ष के मैदान में ये सब ढुलमुल ताकत हैं। क्रांति की सीधे–सीधे खिलाफत न करने पर भी वे मौकापरस्त और अवसरवादी हैं। केवल थोड़े से मजूदर हैं, जो लोग सही मायने में सर्वहारा वर्ग के हैं। वे लोग गांव से उजड़ कर शहर में मजदूर के तौर पर काम करने के लिए आते हैं। काम रहने पर खाना जुट जाता है, न रहने पर बिना खाये रहना पड़ता है। शहर में छोटी झोपड़ी में परिवार लेकर किसी तरह दिन गुजारते हैं। मजदूर वर्ग का यह हिस्सा ही लड़ाकू और संग्राम के मैदान में मजबूत रहता है। मजदूर वर्ग में यह वर्ग विभाजन सारे देश भर में कमोबेश है। फलस्वरूप सर्वहारा वर्ग की पार्टी में मजदूर रक्त का प्रवाह या योगदान पूंजीवादी देशों की तुलना में लगभग नगण्य है। चीन के क्रांति के मामले में भी वर्ग विन्यास की यह समस्या थी। परिणामतः पार्टी कभी दक्षिणपंथी तो कभी वामपंथी अतिवाद के भटकावों से जूझती रही। इसके चलते पार्टी को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। पार्टी के शुरूआती दौर में उस समय चेन–टू–शियु की दक्षिणपंथी अवसरवादी लाइन ने जिस तरह नुकसान पहुंचाया, उसी तरह 1927–28 में वांगमिंग तथा च्यू चिउ पाई के वाम अतिवाद के कारण माओ द्वारा जैसा वर्णन मिलता है, गांवों में 90 प्रतिशत और शहर में 100 प्रतिशत काम बर्बाद हो गया।

हमारे जैसे देशों में पार्टी में अवश्य ही निम्न पूंजीपति बुद्धिजीवी और किसान वर्गों से आये सदस्य अधिक होंगे। वह कोई अपराध तो नहीं –

आपातकाल का फायदा उठाकर तमाम खबरों को दबा दिया गया। इलाके में पीछे हटने के लिए जमीन न रहने (पिछवाड़ा) के चलते हम घिर गये। इस हालत में और गिरफ्तारियों से बचने और सांगठनिक ताकत बचाकर रखने के लिए मूल–संगठक कार्यकर्ताओं को वहां से हटा लिया गया। आपतकाल खत्म होने के बाद इलाके में सीपीआई (एम) फिर लौट आया। बाद में संतोष राणा के नेतृत्व में सीपीआई (एम–एल) ग्रुप ने सी पी आई (एम) से हाथ मिलाकर उस इलाके में सुधारवादी काम चलाया। संगठन के अग्रणी कार्यकर्ताओं के जेल में रहने के चलते संगठन के पुनर्गठन का काम हाथ में नहीं लिया जा सका। इसी बीच एक मार्मिक घटना हुई। मूल संगठक कामरेड कुलकुल जंगल महल के आसपास ही छिपकर रह रहे थे। इसी दौरान वे जापेनीज़ एनसेफलाइटिस रोग से ग्रस्त हुए और किसी इलाज के अभाव में महज चौबीस घंटे की अवधि में ही अंतिम सांस ली। स्थानीय कार्यकर्ता इस बीमारी की अहमियत नहीं समझ पाये। फलस्वरूप समय से पहले ही हमने संगठन की एक श्रेष्ठ संतान को खोया। यह नुकसान केवल एमसीसी या कांकसा के संग्राम का नहीं बल्कि समूचे क्रांतिकारी खेमे और क्रांतिकारी आंदोलन के लिए ही बड़ा नुकसान था। क्योंकि, मैं दृढ़ तौर पर विश्वास से कह सकता हूं कि ये कामरेड अगर जिंदा रहते तो वे इस एकताबद्ध पार्टी की पोलित ब्यूरो के सदस्य बनते।

कांकसा के संग्राम ने हमें बहुत अनुभव प्रदान किये और भारतीय क्रांति के सामने उपस्थित समस्याओं को भी उभारा, जिनका समाधान करने का अवसर हमें बिहार तथा दूसरे इलाकों के संघर्ष क्षेत्रों में मिला।

puko cfg"dkj d ckj e gekjk utfj;k

भारत के राज्य का चरित्र नव–औपनिवेशिक तर्ज पर अर्धसामंती–अर्धऔपनिवेशिक है। भारत की संसदीय व्यवस्था साम्राज्यवादियों के परोक्ष शासन–शोषण एवं लूट का मूल स्तंभ है। फर्जी आज़ादी और लोकतंत्र की आड़ में भारत की तमाम संसदीय पार्टियां तथा केंद्र और राज्यों की सरकारें साम्राज्यवाद, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद, उसके दलाल बड़े पूंजीपति तथा सामंत प्रभुओं का सेवादास हैं।

भारत की संसदीय व्यवस्था भारत के नव–जनवादी सत्ता के निर्माण

में मुख्य बाधा है। संसदीय व्यवस्था क्रांति का पथ नहीं, क्रांति की तरफ पदक्षेप भी नहीं। हमें पता हैं कि निर्वाचन में हिस्सेदारी अथवा इसके बहिष्कार को कामरेड लेनिन ने कार्यनीति मानी है। रूस की क्रांति में सार्वत्रिक जन विद्रोह (उभार) की कार्यनीति के मातहत क्रांति में भाटे (उतार) के समय परिस्थिति के मुताबिक जरूरी होने पर चुनाव में हिस्सा लेकर मेहनती जनता में राजनीतिक चेतना विकसित करना (बढ़ाना), शासक वर्ग के वर्ग चरित्र को मजदूरों के सामने बे–नकाब करना और संगठन को अनुशासनबद्ध करना।

रूसी क्रांति के परिप्रेक्ष्य में कामरेड लेनिन की यह स्थापना क्या भारतीय क्रांति के क्षेत्र में भी लागू होता है? रूस देश के राज्य का चरित्र, क्रांति की अवस्था (स्तर) और भारत के राज्य का चरित्र एवं क्रांति का स्तर दीर्घकालीन जनयुद्ध की रणनीति व कार्यनीति में कोई मेल नहीं। रूस कभी पराधीन नहीं था। बल्कि ज़ारशाही खुद ही सामंतवादी–साम्राज्यवादी था। उस समय तक कोई विश्वयुद्ध नहीं हुआ था। साम्राज्यवाद अपने विश्वव्यापी हमलावर रूख के साथ उपस्थित नहीं हुआ (1907–08)। रूस के राज्य का चरित्र वहां की क्रांति की दशा (स्तर) और कार्यनीति की दृष्टि से लेनिनवादी कार्यनीति बिल्कुल सही था। मगर दूसरे विश्वयुद्ध के बाद साम्राज्यवादियों ने विभिन्न मुल्कों में उनके उपनिवेशवाद के कौशल को लेकर तथाकथित स्वाधीनता की घोषणा का पुराने उपनिवेशवादी शासन–शोषण और लूट को बरकरार रखने के लिए धूर्त नया उपनिवेशवादी कौशल अपनाकर तथाकथित स्वाधीनता की घोषणाओं से पुराने उपनिवेशों को उन्हीं के द्वारा शिक्षित तथा उन्हीं के द्वारा चुने हुए दलालों के हाथों में सत्ता हस्तांतरित किया, जो विश्व परिस्थिति में एक नयी परिघटना थी। सत्ता हस्तांतरित करके ही वे निश्चिंत नहीं रहे, बल्कि उनके हितों की रक्षा करनेवाले संविधान तथा संसदीय व्यवस्था भी कायम की। महान चीनी क्रांति का अनुसरण करते हुए एशिया, अफ्रिका और लातीनी अमेरिकी देशों में क्रांति के बीज न अंकुरित हो जायें, इसी बात को ध्यान में रखकर जनता के हित विरोधी नव–उपनिवेशवादी हथियारों को मजबूत करने के लिए फर्जी संविधान, संसद तथा स्वतंत्र तथा सार्वभौमिक मर्यादा प्रदान करने का बहाना किया गया और जितने दिन वे इस व्यवस्था को

देहाती इलाके के काम को प्रधान महत्व देते हुए मेहनतकशों के बीच काम की कुछ अवहेलना हुई है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा कुछ वास्तविक समस्याएं भी थी।

कलकत्ता, हावड़ा, हुगली, उत्तर चौबीस परगना जिलों में जो विशाल औद्योगिक क्षेत्र हैं, उन सभी जगह कारखानों में ट्रेड यूनियनें, सीटू तथा दूसरे प्रतिक्रियावादियों के हाथों में हैं। इन सब धुरंधर तथा बदमाश नेताओं के प्रभाव तथा गुण्डा गिरोहों का मुकाबला करते हुए जवाबी संगठन खड़ी करना और उनकी होड़ में काम करना बहुत ही कठिन है। नये कार्यकर्ता ट्रेड यूनियन के काम में उतने कुशल नहीं हैं। पुराने तमाम जो ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता हैं, उनकी विभिन्न कमजोरियां हैं। फलस्वरूप मजदूर वर्ग में काम की नाकामी यानी कृषि क्रांतिकारी राजनीति में शिक्षित कर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में तैनात करने में नाकामी हमारे संगठन में ही नहीं, कमोबेश सभी क्रांतिकारी ग्रुपों में ही है।

आम तौर पर मजूदर मोर्चे में विभिन्न कमजोरियां काम के संबंध में हैं, यह स्वीकार करना ही पड़ेगा। इस विषय पर विस्तृत बातचीत के लिए यहां स्थान नहीं है। पर, जो मामला मजदूर फ्रंट में कामकाज की कमजोरी का है वह महत्वपूर्ण हैं। क्रांतिकारी पार्टी द्वारा युद्ध संचालन के दृष्टिकोण से मुख्य इंडस्ट्रीज – जिसका जिक्र कामरेड लेनिन ने किया था – मौलिक उद्योगों – जैसे, प्रतिरक्षा उद्योग, रेलवे, बंदरगाह, संचार व्यवस्था, परिवहन आदि उद्योग के बारे में हमारी दृष्टि में स्पष्टता होने के बावजूद काबिल कार्यकर्ताओं के अभाव से इन उद्योगों में काम शुरू करना संभव नहीं हुआ है।

इसके अलावा भी विभिन्न पेशागत बुद्धिजीवियों में, जैसे– डाक्टर, वकील, पत्रकार तथा सरकारी कर्मचारियों के बीच काम का प्रयास किये जाने के बावजूद वह जितना अपेक्षित था, उतना सफल नहीं हुआ।

और भी जिन विषयों को दृष्टि में लाया गया, उनमें पार्टी की ओर से कोई पहल संभव नहीं हुआ। जैसा कि कामरेड लेनिन ने कहा है कि राज्यतंत्र के हृदय के समान मूल अड्डों में जहां सेना, पुलिस, अर्द्ध–सैनिक बलों, गुप्तचर विभाग तथा दूसरे दमनकारी संस्थाओं में भी क्रांतिकारियों का काम होना चाहिए। दुश्मन को चोट पहुंचाने की क्षमता को कमजोर, नाकाम या विभाजित

4) समूची पार्टी केंद्रीय कमेटी के अधीन।

ये सूत्र सिर्फ पार्टी कमेटी व्यवस्था के संचालन के लिए ही नहीं हमारी पार्टी के नेतृत्व में कार्यरत दूसरे जन–संगठनों के क्षेत्र में भी यही नियम लागू होते हैं। कामरेड लेनिन ने और भी कहा है, पार्टी कमेटी व्यवस्था की वास्तविक जीवनशक्ति है, आलोचना और आत्म–आलोचना और 'लोहे जैसा मजबूत' फौलादी अनुशासन। पार्टी कमेटी से शुरू कर निचले स्तरों की कमेटियां इस नीति और काम के तौर–तरीकों को ठीक ढंग से लागू करने में विफल हो रही हैं। इस विफलता का कारण उसके प्रयोग में खोजने में नहीं चलेगा। प्रयोग (Practice / व्यवहार) उसके काम का रूप है। यह काम किस विचार से किया जा रहा है, समस्या के समाधान के लिए उसके सिद्धांत में खोजना पड़ेगा, किसी भी कारण के बिना कोई नतीजा नहीं हो सकता (cause and effect), वर्ग में बंटे समाज में हर इन्सान के काम में उसका वर्ग दृष्टिकोण प्रतिफलित होता है। भारत जैसे अर्ध–औपनिवेशिक, अर्ध–सामंती समाज में जन साधारण का बड़ा हिस्सा ही पेटी बुर्जुआ है। लिहाजा इन तमाम देशों में पार्टी के सदस्यों का बड़ा सा हिस्सा भी इसी पेटी बुर्जुआ वर्ग से आता है। जन साधारण का अधिकांश हिस्सा, किसान जनता पेटी बुर्जुआ वर्ग का है, भूमिहीन किसान लोग भी अर्ध सर्वहारा हैं। लिहाजा पार्टी सदस्यों का बड़ा हिस्सा पेटी बुर्जुआ सिद्धांतों का शिकार / उससे ग्रासित है। पार्टी कमेटी व्यवस्था में उनके काम की त्रुटियों का स्रोत यही पेटी बुर्जुआ विचारधारा है। नेतृत्वकारी कमेटियों में भी इससे भिन्न स्थिति नहीं है। लिहाजा पार्टी में लगातार पेटीबुर्जुआ विचारध ाारा के खिलाफ सर्वहारा नजरिये से संघर्ष न चलाने पर पार्टी का वर्गीय आध ाार कमजोर पड़ जायेगा और क्रांति पराजित होगी।

हालांकि हमारे तरह के देश में सर्वहारा वर्ग की भौतिक उपस्थिति पूंजीवादी देशों की तुलना में कम रहेगा, पर फिर भी पार्टी कमेटी व्यवस्था और फौज में वर्गीय तालमेल बनाये रखने के लिए पार्टी को अवश्य ही श्रमजीवी जनता से अधिक से अधिक पेशेवर कार्यकर्ता ले आने के लिए अथक प्रयास चलाते रहना होगा।

हमारी समस्या है कि मजदूर वर्ग तथा अन्य मेहनतकशों के बीच काम करने के लिए जितनी जरूरत है, उतने काबिल कार्यकर्ता नहीं दे पाये हैं।

अपने हितों के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे (और कर पा रहे हैं), उतने दिन वे इस फर्जी संसदीय व्यवस्था और लोकतंत्र का जयगान करते रहेंगे।

महान चीनी क्रांति के सवाल पर कामरेड माओ ने कहा था कि अर्ध औपनिवेशिक, अर्ध सामंती चीन में इस्तेमाल करने के लिए कोई संसद नहीं है। कामरेड माओ की इस टिप्पणी से ही समझना होगा कि रूस के राज्य का चरित्र एवं कार्यनीति के मुताबिक क्रांति के हित में तात्कालिक रूप से संसद का इस्तेमाल (ड्यूमा) की तरह क्रांति के हित में किये जाने पर भी चीन के राज्य के चरित्र के मुताबिक यह संभव नहीं था। सवाल है कि रूस की राज्य सत्ता के चरित्र और 'उभार' के कार्यनीति के मुताबिक अस्थायी तौर पर संसद का इस्तेमाल भले ही किया जा सका हो, पर अर्ध–उपनिवेशी, अर्ध–सामंती भारत में दीर्घकालीन जनयुद्ध के लक्ष्य से ही वर्तमान (जो अमल में है) कानून और प्रशासनिक व्यवस्था को अस्वीकार कर इलाकाई आधार पर सत्ता दखल एवं फौज और आधार इलाका बनाने के लिए युद्ध की तैयारी व युद्ध छेड़ने का मूल काम होगा। वहां संसदीय लोकतंत्र में हिस्सेदारी के लिए दीर्घकालीन लोकयुद्ध की राजनीति को अस्वीकार करते हुए गांधीवादी अहिंसा को मर्यादा देकर साम्राज्यवाद और उसके तलुआचाटू लोगों की सेवा करने का शपथ लेने का अर्थ क्रांति को नकारना ही है।

कामरेड लेनिन की शिक्षा के मुताबिक चुनाव में हिस्सेदारी या उसका बहिष्कार कार्यनीति का सवाल है। इसे दिमाग में रख कर ही, यह विषय भारत की क्रांति के रणनीति व कार्यनीति के अनुसार लगभग रणनीति के समकक्ष है, ऐसा हम मानते हैं। इसीलिए संग्राम तथा संगठन निर्माण के पहले दिन से ही क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार तथा उसके व्यावहारिक दृष्टिकोण से चुनाव बहिष्कार का नारा जनता के सामने रखकर उसके वैकल्पिक व्यवस्था लाने के लिए जनयुद्ध की राजनीति में लोगों को शिक्षित करना होगा। चुनाव के बारे में हमारे इस दृष्टिकोण की विषद चर्चा और व्याख्या 1969 में प्रथम प्रकाशित 'भारतीय क्रांति की रणनीति एवं कार्यनीति' नामक दस्तावेज में की गयी है।

,e-lh-lh- d urRo e fcgkj dk lxke rFkk lxBu d foLrkj d lkFk u;h&u;h thr gkfly djuk

अविभाजित बिहार के संग्राम, संगठन का निर्माण और फौज एवं आधार इलाका बनाने के उद्देश्य से परिकल्पित इलाके के तौर पर ''स्पेशल एरिया कमेटी'' (SAC) के अंतर्गत चुने हुए इलाके को प्रधान महत्व देकर काम शरू किया गया।

1970 के शेषार्ध में इस सैक इलाके में काम करने के लिए कोलकाता से अग्रणी कामरेड किसान (पीबी) को और 1972 में इस सैक इलाके में काम शुरू करने के लिए कोलकता से अग्रणी (अगुआ) मजदूर कामरेड भरत को उत्तरदायित्व देकर भेजा गया। कामरेड किसान हजारीबाग तथा गिरिहीह जिलों के उत्पीड़ित आदिवासी जनता के बीच जमीन पकड़े (पैर जमा कर) संगठन के कार्य को बखूबी आगे बढ़ा रहे थे। स्थानीय भूमिपुत्रों (आदिवासियों) में से कई लोगों को सैद्धांतिक, राजनीतिक रूप से शिक्षित कर कुछ अगुआ तत्वों को लेकर पार्टी कमेटी बना डाला।

इलाके में विभिन्न सामंतवाद विरोधी कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने जनता के बीच अपने आप को नेता के तौर पर स्थापित कर लिया। इसी समय (1974) वे कई स्थानीय कामरेडों के साथ गिरफ्तार हो गये। पुलिस ने उनकी बे–तरह पिटाई की जिसके फलस्वरूप उनका एक घुटना टूट गया और हजारीबाग जेल में डंडाबेड़ी पहनाकर सेल में डाल दिया गया। लगभग 1971 में कामरेड नारायण सान्याल (बाद में सी पी आई (एम–एल) पी.यू. के प्रधान संगठक) भी कई साथियों के साथ गिरफ्तार होकर हजारीबाग जेल में बंदी बने हुए थे। हजारीबाग जेल में कामरेड किसान (एम.सी.सी.) तथा कामरेड नारायण सन्याल (सी पी आई (एम एल) पी.यू.) के बीच लगभग रोज ही मैत्रीपूर्ण बहस होती थी। बाद में आपातकाल (इमर्जेंसी) हट जाने के बाद तमाम राजनीतिक बंदियों को मुक्त कर दिया गया।

दूसरी ओर गया इलाके के मूल उत्तरदायित्व स्वीकार कर काम कर रहे कामरेड भरत ने स्थानीय जालिम सामंती प्रभुओं के खिलाफ विभिन्न प्रतिरोध ा के कार्यक्रमों के जरिये इलाके के शोषित–उत्पीड़ित जनता को एकजुट

अन्य संगठनों में काम कर सकें, इस तरह से शिक्षित–प्रशिक्षित किया जाता। संग्राम के जरिये अनुभव हासिल कर संग्राम के केंद्र पारसनाथ पहाड़ से पश्चिम सिंहभूम के सारंडा इलाके में ले आया गया। सात सौ छोटे बड़े पहाड़ों तथा घने जंगलों से घिरे सारंडा इलाके में बहुत ही उन्नत दर्जे के छापामार कार्रवाईयां चलाई गयी, जिनका विवरण यहां दे पाना संभव नहीं। बाद में संगठन के सिद्धांत के मुताबिक उत्तर बिहार में भी कामकाज बढ़ाया गया। पूर्वी व पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, दरभंगा और साथ–साथ पूर्वी बिहार के जमुई, मुंगेर आदि जिलों में संगठन का विस्तार हुआ।

ikVhZ deVh 0;oLFkk % tu&lxBu dk leUo; lk/kuk

कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग की अग्रणी वाहिनी (अगुआ दस्ता) और क्रांति का नेतृत्व देने वाला संगठन है। कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा इसके नेतृत्व में अन्य जन संगठन भी होते हैं। जन संगठन जिस तरह फ्रॉन्टल संगठनों के तौर पर काम करते हैं, ठीक उसी तरह पार्टी के सीधे प्रत्यक्ष नेतृत्व के अंतर्गत जन फौज भी एक जन–संगठन ही है। पर वह सशस्त्र जन–संगठन है। पार्टी इन जन संगठनों को इनमें मौजूद फ्रैक्शन कमेटी के मार्फत नेतृत्व देती है। लिहाजा किसी भी जन–संगठन को पार्टी के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज होने की लड़ाई से संपूर्ण रूप से आज़ाद (स्वतंत्र) या अलग–थलग नहीं समझा जा सकता। परोक्ष रूप से ये जन–संगठन खासकर ट्रेड यूनियन, छात्र–युवा फ्रंट, महिला, बुद्धिजीवी फ्रंट, सांस्कृतिक फ्रंट आदि पार्टी के मूल राजनीतिक लक्ष्य को आगे ले जाने के महत्वपूर्ण हथियार हैं। जनता के ज्यादातर हिस्से को क्रांति के मूल लक्ष्य की दिशा में आगे ले जाने के लिए ये मोर्चे जाल बिछाने का काम करते हैं।

पार्टी कमेटी व्यवस्था संचालन के क्षेत्र में कामरेड लेनिन ने चार मूल नीति की बातें कही हैं। वे हैं :–

1) व्यक्ति संगठन के अधीन होगा
2) निचली कमेटियों उच्चतर कमेटियों के अधीन
3) अल्पमत बहुमत के अधीन

में पहल की। गिरिडीह, हजारीबाग, रांची, कोडरमा, बोकारो आदि जिलों में इस तरह के कार्यक्रम लेने के फलस्वरूप जन आधार में इजाफा हुआ।

क्रांतिकारी किसान कमेटियां खड़ी करने के साथ–साथ पार्टी संगठन एवं उसके नेतृत्व में छापामार टुकड़ियां बनायी गयी। इसी तरह नारी मुक्ति संघ व क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठन भी बनाए गये। आदिवासी परिवारों ने अपने संगठन के प्रति आस्था रखकर नारी तथा छोटे बच्चों को संगठन की जिम्मेदारी में सौंप दिया। इस मामले में यहां के प्रवीण आदिवासी कामरेड भक्ति दा का विशेष योगदान है। जिस तरह ''हेमिलन के बंसी वाले'' की कहानी में था, उनकी छवि और लोकप्रियता ऐसी थी कि जब वे किसी गांव में जाते तो उस गांव के बच्चे उनके चारों ओर इकट्ठा हो जाते, वे उनके साथ गप्प लड़ाते, उन्हें नहलाते, खाना खिलाते, गाने सुनाते। इन सब बातों के कारण आदिवासी बच्चों के बीच वे बेहद लोकप्रिय हो उठे। इसी वजह से आदिवासी महिलाएं भी इसी तरह आगे बढ़ आयीं। तथाकथित अशिक्षित इस आदिवासी प्रवीण क्रांतिकारी कामरेड का महान योगदान है।

बाद में कामरेड किसान ने निहायत ही कुशलता के साथ मार्क्सवादी दर्शन, (राजनीतिक) अर्थशास्त्र, समाजविज्ञान, राजनीति तथा सांगठनिक तौर–तरीकों पर व्यापक क्लास तथा बातचीत/चर्चा के माध्यम से पार्टी कमेटियों का स्तर उन्नत किया। छापामार टुकड़ियों के संघर्ष की योजना तथा सामरिक ट्रेनिंग उन्नत साजो–सामान, हथियार से सजाकर सामरिक संगठन के तौर पर सेक्शन–प्लाटून, कंपनी स्तर तक उन्नत और विकसित कर, राज्य की ताकतों पर बड़े तथा उन्नत स्तर के हमले करने के जरिये फौज तथा छापामार आधार इलाके बनाने में वास्तविक बुनियाद डाली। इसी के साथ, जन–संगठनों का राजनीतिक स्तर ऊपर उठाना, नारी मुक्ति संघ तथा क्रांतिकारी सांस्कृतिक संघ जैसे जन संगठनों को ''सींच संवार कर'' उन्हें विकसित किया। छापामार टुकड़ियों में निरक्षर आदिवासी लड़के लड़कियों को शिक्षित करने के लिए व्यापक पहल की गयी। आदिवासी ''अलचिकी'' भाषा में वे पढ़–लिख सकें, इसके लिए किताबें जुटाई गयी। बाद में केंद्रिय मुखपत्र आदिवासी भाषा में ''आरा झंडा'' नाम से छापा जाता था। बालक–बालिकाओं को सांस्कृतिक संगठन के साथ जोड़ कर उन्हें भावी छापामार टुकड़ियों में तथा

किया। कई स्थानीय किसान तथा ग्रामीण बुद्धिजीवियों को जोड़ते हुए बहुतेरे प्रतिकूल हालात का मुकाबला करते हुए पार्टी की बुनियादी इकाई खड़ी की। कामरेड के.सी. शुरू से ही समय देकर विचारधारा, सिद्धांत और क्रांतिकारी राजनीति में इलाके के अगुआ कर्मियों को शिक्षित करते हुए जरूरत के मुताबिक जन संगठन के रूप और उसके कार्यक्रम उन्होंने तय कर दिये। जनता की सोच, चेतना और संग्राम के मिजाज़ के मुताबिक क्रांतिकारी किसान कमेटियों के नेतृत्व में कुख्यात तथा जालिम सामंत प्रभुओं के जमीन पर कब्जा करना, धान काट लेना, सूदखोरी और बंधक (रेहन) का कारोबार बंद कर देना, वाजिब मजदूरी के लिए तथा तरह–तरह के सामाजिक जुल्मों के विरूद्ध तथा जोतदारों के लठैतों–गुंडा गिरोहों के खिलाफ प्रतिरोध संग्राम खड़ा करने के फलस्वरूप पिछड़ी तथा पीड़ित जनता में व्यापक जन जागरण का संचार हुआ। अत्याचारित गरीब तथा भूमिहीन किसान जन–साधारण को लंबे संघर्ष के जरिये मुक्ति का स्वाद चखने का अवसर मिला।

उस समय के कार्यक्रम का मूल लक्ष्य था बड़े–बड़े कुख्यात सामंतों के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सामरिक वर्चस्व को ध्वस्त करना तथा क्रांतिकारी किसान कमेटी के नेतृत्व में प्रतिरोध संघर्ष खड़ा करके पिछड़े तथा उत्पीड़ित किसान जनता की पहलकदमी को उन्मुक्त कर देना। हजारों–हजार किसानों के जुलूस, पोस्टर–परचे सहित रात के वक्त हथियारबंद मशाल जुलूसों ने जमींदारों को आतंकित कर दिया। सामंत प्रभुओं के घरों का घेराव करना, उनके स्थिर–चल संपत्तियों को जब्त करना, बंदूकें जब्त करना, उनके गुण्डा गिरोह के सदस्यों को खत्म करना (सामरिक शक्ति), जालिम सामंती प्रभुओं को जन अदालतों में उनके अपराधों के मुताबिक मृत्युदंड सहित तमाम तरह की सजाएं दी जाती थी। कई वर्षों के दौरान यह जन जागरण गया पार होकर, औरंगाबाद, पलामू, चतरा, जहानाबाद आदि जिलों में फैल गया, जिससे बहुत से सामंत गांव छोड़ कर भाग गये। उनकी हजारों–हजार एकड़ जमीन जब्त की गयी।

जोतदार की कृषि के औजार, गाय भैंस आदि पशु, सोना चांदी के आभूषण तथा कीमती पोशाक आदि जब्त किये गये। कृषि संबंधी ऋणपत्र तथा झूठे मुकदमों के कागजात जला दिये गये। स्वाभाविक तौर पर किसानों के इस

जन–जागरण और उभार ने प्रशासन को चिंतित और सक्रिय बना दिया। उन्होंने धड़–पकड़ शुरू की। इसी के साथ तथाकथित ऊंची जाति (राजपूत–भूमिहार–ब्राह्मण आदि) के सामंत प्रभुओं ने जात–पात की लड़ाई तथा अपने वर्चस्व टिकाये रखने के इरादे से जाति धर्म के आधार पर (निजी) सेनाओं (तरह–तरह की निजी सेनाओं) का निर्माण किया। उनके द्वारा गठित सेना समूह, जैसे सनलाइट सेना, कुंवर सेना, ब्रह्मर्षि सेना, रणवीर सेना, लोरिक सेना आदि बर्बर सेनाओं के खिलाफ खूनी संघर्ष चलाकर कामरेड तथा किसान जनता के आत्म बलिदान के जरिये संगठन तथा संग्राम और क्रांतिकारी किसान कमेटी के राजनीतिक वर्चस्व को बनाये रखा गया। कई हजार बीघा जमीन क्रांतिकारी किसान कमेटी के नेतृत्व में आम भूमिहीनों में बांटा गया। जब्त की गयी संपत्ति भी जनता में जरूरत के मुताबिक बांटी गयी।

गया–औरंगाबाद जिला इलाके में इस संघर्ष की सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली और दूर तक दीर्घ प्रभावकारी घटना घटी। राजपूत–भूमिहारों के गांव दलालचक (दलेलचक)–बघौरा में हुए जन उभार में उत्पीड़ित जनता ने एक अत्याचारी जोतदार और उसके परिवार, उसके रिश्तेदारों और निजी सेनाओं के कुल 58 लोगों का सफाया कर दिया। उनके मकान, घर, खलिहान जला दिये गये। इसके कुछ एक महीने बाद लगभग इसी तर्ज पर दरमिया गांव में भी एक घटना हुई। वहां ऊंची जाति के 18 जोतदारों का सफाया किया गया और इस तरह किसानों ने अपने ऊपर होती रही अनेकों हत्याओं और जुल्म का बदला लिया।

इन तमाम घटनाओं के बाद व्यापक पुलिस दमन–उत्पीड़न शुरू हुआ। कई कामरेड एवं किसान जनता गिरफ्तार हो गये। इलाके में कई पुलिस कैंप लगा दिये गये और बीच–बीच में गांवों पर हमले कर लोगों के घर ढहा देना, बकरियां, मुर्गियां छीन लेना, आदि तरह–तरह के जुल्म चलाते रहे। फलस्वरूप राज्य दमन के परिप्रेक्ष्य में उसके मुकाबले की तैयारी के सिलसिले में सामरिक क्षमता मजबूत करने के लिए हथियार जुटाने का अभियान शुरू हुआ। सामंत प्रभुओं से जब्त की गई देशी–विदेशी बंदूकों के अलावा भी पुलिस पर हमले कर बंदूकें और अन्य उन्नत असलहों पर कब्जा करते हुए छापामार दस्तों की फौजी ताकत बढ़ाई गयी।

कई जिलों को लेकर अब संगठन के काम का एक विशाल इलाका बन गया। जनता की मिलिशिया वाहिनी में भी बंदूकें दी गयी। एक विशाल इलाका प्रशासन (के वर्चस्व के बाहर) विहीन हो गया। सामंत लोग इलाका छोड़ भाग खड़े हुए। संगठन ने भी ऐसी हालात का उचित इस्तेमाल करते हुए, पार्टी तथा जन संगठन के काम को और भी उन्नत करने के जरिये संग्राम के जरिए प्राप्त उपलब्धियों की रक्षा करना और जनता को और भी उन्नत कर्मसूची के जरिये क्रांति के काम को विकसित करने की आवश्यकता आन पड़ी। मगर यथेष्ट संख्या में कामरेडों (कार्यकर्ताओं) के अभाव में क्रांतिकारी कार्यकर्ता और जनता के राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाने तथा जनता की सत्ता को स्थापित करने में समस्याएं आ खड़ी हुई।

दूसरी ओर छोटानागपुर व पूर्वी–पश्चिमी सिंहभूम जिले के संगठन की जिम्मेदारी में रहे कामरेड किसान जेल से छूट कर दोबारा इलाके के काम में जुट गये। उनके काबिल नेतृत्व में हजारीबाग तथा गिरिडीह, रांची और बोकारो आदि जिलों में संगठन उठ खड़े हुए। खासकर गिरिडीह जिले के पारसनाथ पहाडों के इर्द–गिर्द एक विस्तृत इलाके के व्यापक गांवों में संगठन उठ खड़ा हुआ। यहां के सामंत प्रभुओं के शोषण–जुल्म तथा तरह–तरह के अत्याचारों के खिलाफ व्यापक जन–जागृति दिखाई दी। कृषि क्रांति की राजनीति के माध्यम से जन साधारण ने वहां के जोतदारों की जमीन जब्त करते हुए धान की फसल काट ली, सूदखोरी और रेहन–बंधक का कारोबार बंद करवा दिया, सामाजिक जुल्म के खिलाफ प्रतिरोध कार्यक्रम लेने के फलस्वरूप, पिछड़ी आदिवासी जनता के पहल के दरवाजे खुल गये। जब्त की गयी जमीनों को आदिवासियों के बीच बांटा गया। सिंचाई की कमी के चलते यहां फसल अच्छी नहीं होती थी। जनता चूंकि अब इन जमीनों के मालिक बन चुकी थी, उन्होंने कृषि की उन्नति के लिए किसान कमेटी के नेतृत्व में छोटे–मोटे बांध बनाकर पानी की समस्या का समाधान किया। जो फसल पहले जोतदारों के घर पर जाता था, अब वह किसानों के घरों में जाने लगा। संगठन के प्रयास/पहल से समवाय (सहयोग) की पद्धति के आधार पर खेती करने और बीज, धान तथा खाद की समस्या का समाधान हो जाने के फलस्वरूप फसल अच्छी हुई। जनता ने संग्राम के रूप को टिकाकर रखने के लिए संगठन को मजबूत करने

विचारधारा का प्रयोग करने का दावा किया और अनिवार्य रूप से विफलता का सामना किया। सर्वहारा दृष्टिकोण से वे अपनी खामियों और गलतियों के बारे में साहस के साथ मूल्यांकन नहीं कर सके। उनके पेटी बुर्जुआ नजरिये और जीवनयापन के तौर तरीकों की वजह से वे आत्म त्याग के लिए तैयार नहीं थे। फलतः दीर्घ, कठिन तथा कष्टप्रद लड़ाई के मैदान से भागने का रास्ता तलाशने के लिए उन्होंने भारत की विशेष परिस्थितियों की दुहाई देकर नयी लाइन के तौर पर चुनाव बहिष्कार के बदले सशस्त्र संग्राम का ही बहिष्कार कर डाला। एक समय आग उगलने वाले क्रांतिकारियों की इस परिणति ने सिर्फ नक्सलबाड़ी के महान संग्राम को कलुषित ही नहीं किया बल्कि कामरेड सी. एम. सहित अनगिनत शहीदों के आत्म–बलिदान के प्रति विश्वासघात भी किया। प्रसंगवश यहां सी पी आई (एम–एल) के सत्यनारायण सिंह के नेतृत्वाधीन संगठन के साथ हमारी बातचीत का उल्लेख भी कर देना चाहिए। उन्होंने पश्चिम बंगाल में कुछ काम शुरू किया था और उसके नेता थे कामरेड सैफुद्दीन बनाम बिशु। उन्होंने हमसे संपर्क किया और एस एन एस के साथ बैठक का प्रस्ताव दिया। उसके अनुसार बैठक की जगह और दिन तय हुए। कामरेड के. सी. और मैं बनारस पहुंचे। वहां एस एन एस के साथ रामनाथ (सी एल आई) और सैफुद्दीन थे। कामरेड के. सी. और एस एन एस पूर्व परिचित थे। एस एन एस जब जमशेदपुर में सी पी आई (एम) के हॉकर ट्रेड यूनियन चलाते थे, तब उनसे के. सी. का परिचय था।

साधारण बातचीत के बाद एस एन एस ने पार्टी गठन से पहले ए आई सी सी सी आर के बीच और बाद में पार्टी में जो अंतर्विरोध तथा वितर्क था, उसका विवरण दिया और कामरेड सी एम की तरह–तरह की आलोचना की। कामरेड रामनाथ ने व्यस्त होकर कहा कि बहुत कुछ और भी कहना है। उस समय कामरेड के. सी. ने सी पी आई (एम–एल) पार्टी गठन की प्रक्रिया को लेकर हमारे मतभेद के विषयों को रखा तथा सी पी आई (एम–एल) पार्टी की चुनाव बहिष्कार पर बातचीत हुई और दोनों सहमत हुए। अगली बैठक के दिन तय किये गये। बाद वाले बैठक में एस एन एस और पुल्ला रेड्डी थे। वहां भी तरह–तरह के विषयों पर बातचीत हुई। पुल्ला रेड्डी ने सशस्त्र संग्राम के पक्ष

व्यक्तिगत प्रभाव रहने के चलते वे उस कमेटी या उसके सदस्य का समर्थन प्राप्त कर सकते हैं। वे उस समय उच्चतर कमेटी के मत को अस्वीकार करते हुए प्रत्यक्ष रूप से उनके लिए जिम्मेदार (उच्च कमेटी के) नेता के मत को ही अपनाकर काम करते रहते हैं और इस तरह पार्टी में अपने–अपने प्रभाव मंडल वाले गुट खड़े हो जाते हैं और समूची पार्टी ही गुटबाजी का शिकार हो जाती है। सर्वहारा आदर्श को प्राथमिकता न दे कर पेटीबुर्जुआ सिद्धांत के शिकार ये तमाम कामरेड खुद को संशोधित न करें तो पार्टी अपनी एकता की रक्षा न कर सकेगी और इसका फायदा दुश्मन उठायेगा।

4. समूची पार्टी केंद्रीय कमेटी के अधीन – केंद्रीय कमेटी ही पार्टी की सर्वोच्च संस्था है। इस कमेटी को पार्टी सदस्य पार्टी के कांग्रेस या केंद्रीय सम्मेलन के जरिये चुनते हैं। फलस्वरूप केंद्रीय कमेटी सभी पार्टी कमेटियों की आस्था एवं विश्वास हासिल करती है। हर पांच साल बाद पार्टी कांग्रेस के जरिये यह कमेटी चुनी जाती है। कोई पार्टी कमेटी या सदस्य केंद्रीय कमेटी की राय के साथ सहमत नहीं भी हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में वे पार्टी कमेटी व्यवस्था के मार्फत केंद्रीय कमेटी को अपना वक्तव्य भेज सकते हैं। इस तरह सर्वहारा मत सिद्धांत के आधार पर उस व्यक्ति या सदस्य/कमेटी को केंद्रीय कमेटी के मत को ही स्वीकार करना पड़ेगा। हालांकि अगले पार्टी कांग्रेस में वह कमेटी या सदस्य दुबारा चर्चा की मांग रख सकेंगे। इससे पहले वे अपने मत को पार्टी में अथवा पार्टी के बाहर प्रचारित नहीं कर सकेंगे। यह सांगठनिक अनुशासन का सवाल है। पर कोई सदस्य या कमेटी अगर समझते हैं कि केंद्रीय कमेटी क्रांति विरोधी या संशोधनवादी हो गयी है, तो उसके खिलाफ विद्रोह करना ही न्यायसंगत बात होगी और वे क्रांति को बचाने के स्वार्थ/तकाजे में ऐसा कर सकते हैं। हम पार्टी में सिद्धांत, राजनीति और काम की एकता चाहते हैं। क्रांति की सफलता इन विषयों में एकता रहने पर निर्भर करती है। लेकिन यदि ऐसा दिखाई पड़े कि केंद्रीय कमेटी, उसके कार्यकलाप या दिशा के फलस्वरूप शासक, साम्राज्यवादी वर्ग

उसके दलाल बड़े पूंजीपति और सामंतवाद की हित रक्षा कर रहे हैं तथा अनगिनत पार्टी सदस्य, समर्थक और जनता के आत्म बलिदान व त्याग के प्रति विश्वासघात करते हुए अपने बदले हुए वर्गहित के लिए काम कर रहे हैं, उस समय पार्टी को तोड़ना उसका कर्तव्य हो जाता है। जहां पार्टी अनुशासन को यांत्रिक तौर पर महत्व देकर एकता बनाये रखने के लिए पार्टी की राय को मान लेते हैं, तो ऐसा करना उसके क्रांतिकारी आदर्श के खिलाफ होगा, जो कि महान तेलंगाना संग्राम के संदर्भ में हमने देखा हैं। लिहाजा परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में कभी–कभी फूट या विद्रोह करना न्यायसंगत है।

इस संदर्भ में एक और विषय ध्यान में लेना जरूरी है। पार्टी की उच्चत्तर कमेटियों के नेतृत्व में पेट्टी बुर्जुआ 'इगो' (अहंबोध) के फलस्वरूप विद्रोह या अनुशासनहीनता दिखाई दे जाती है। यह देखा गया है कि जब कोई केंद्रीय कमेटी का सदस्य किसी काम से दूसरे केंद्रीय सदस्य के इलाके में गये हैं, तो दूसरे केंद्रीय कमेटी के नेता अगर आगन्तुक केंद्रीय कमेटी के नेता के प्रति कार्यकर्ताओं के समक्ष पूरी मर्यादा और सम्मान नहीं प्रदान करते हैं और उनकी अनादर–अपमान करते हैं या कार्यकर्ताओं के सामने ही बहस में उतरते हैं, तो इसका प्रभाव कार्यकर्ताओं पर भी पड़ता है। परिणामतः वे उस आगंतुक सदस्य/नेता को उचित मर्यादा–सम्मान नहीं देते और उनकी राय की खुलेआम खिलाफत करते हैं। पार्टी एकता की खातिर उच्चत्तर कमेटी का नेतृत्व कभी ऐसा नहीं कर सकते हैं। कोई–कोई केंद्रीय कमेटी के नेता संकीर्णतावाद से ग्रसित हैं। इसका प्रतिबिंब – वे जिस कमेटी का संचालन कर रहे हैं या जिन कार्यकर्ताओं को शिक्षित कर रहे हैं, वह सब 100 प्रतिशत सही है जबकि दूसरे नेता जो कर रहे हैं, वह गलतियों से भरे तथा कमजोर हैं – इस तरह के दृष्टिकोण में होता है। दूसरे नेता के अच्छे काम उन्हें दिखलाई नहीं देते या वे कभी दूसरे के काम की प्रशंसा नहीं करते। इस मनोभाव से वे अपने प्रत्यक्ष निगरानी में रहे कार्यकर्ताओं को सर्वश्रेष्ठ तथा 'राजहंस' समान बेदाग मानते हैं – जबकि दूसरे कार्यकर्ताओं को 'बतख' समान मानते हैं।

व्यावहारिक नजरिये से इस आचरण के साथ सर्वहारा आदर्श का कोई मेल नहीं हैं। फलस्वरूप नेतृत्व के ''इगो'' का अंतर्विरोध या भिन्न मत, कमेटी

स्थापना बहुत ही दृढ़ रहा है। परिवर्तित हालात की दुहाई देकर एक बार चुनाव में हिस्सेदारी इस स्थापना को किसी भी तरह टिकाकर नहीं रख सकेगा। 'आई पी एफ' को महत्व देने से इसी के समानांतर सशस्त्र संग्राम का चलाया जाना संभव नहीं होगा, क्रमशः यह संग्राम कमजोर होगा, छापामार टुकड़ियां भी कमजोर होती जाएंगी तथा टूटने लगेंगी और बाद में पार्टी निर्वाचन मुखी/निर्भर होकर रह जाएगी।

हमने इसके अंजाम पर बातचीत करते हुए, वे जो विपरीत दिशा में सफर करने जा रहे हैं, यह बतलाकर उनके प्रस्ताव को खारिज किया। इसके बाद से उनके साथ हमारी और कोई बैठक नहीं हुई।

सारे विश्व में और भारत में संशोधनवादियों का उत्थान तथा विकास का इतिहास कह रहा है कि वे उनकी संशोधनवादी दिशा शुरू में ही पूरी तरह उजागर (खुलासा) नहीं करते। वे परिस्थिति की दुहाई देकर कुछ नयी सोच के तौर पर कुछ बातें रखते हैं, पर बाद में कार्यकर्ताओं और जनता के बीच धीरे–धीरे नयी लाइन उनके गले से उतार कर उनकी अवसरवादी लाइन को स्वीकार्य बना देते हैं। असल में आग उगलने वाले क्रांतिकारियों की छवि वाला यह समूह किस तरह संघर्ष के मैदान से निकल भागा, इसके लिए 'लाज बचाने' के तौर पर आईपीएफ की योजना ले आए। वे यह प्रचारित करते हैं कि वे काफी सशस्त्र संग्राम करते रहे हैं और उन्हें काफी अनुभव मिले हैं। इतने साल सोचकर केवल सशस्त्र संग्राम भर से सफलता नहीं आएगी और भारत की विशेष स्थितियों में कुछ नयी स्थापना लेनी पड़ेगी और इसके लिए चुनावों का इस्तेमाल करना चाहिए, इस नतीजे पर पहुंचे।

असल में माओ–त्से–तुंङ विचारधारा अभी माओवाद के मुताबिक दीर्घकालीन जनयुद्ध की रोशनी में भारत के परिदृश्य में फौज तथा आधार इलाके गढ़ने की वास्तविक पहल तथा योजना उनके पार्टी में कभी नहीं रही। भोजपुर के क्षणस्थायी अनुभव को छोड़ भी दें तो कहीं भी उन्होंने योजनाबद्ध रूप से किसी इलाके को बतौर रणनीतिक इलाके चुनकर वहां टिके रहकर संघर्ष और संगठन खड़ी करने के लिए नेतृत्व के सर्वश्रेष्ठ हिस्से को वहीं नियुक्त न कर छिटपुट कुछ ''सफाया लाइन'' चला कर इसे ही माओ

हम भी बराबर असली क्रांतिकारियों के साथ एकताबद्ध होकर एक सही क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी खड़ी करने के लक्ष्य से ही काम कर रहे थे। लिहाजा उन के प्रस्ताव का हमने उचित जवाब देते हुए बातचीत जारी रखी। दोनों संगठन सशस्त्र संग्राम कर रहे थे, लिहाजा एकता का एक आधार था बातचीत, मतभेद के विषय थे : पार्टी स्थापना के सवाल पर, जनसंगठन के लक्ष्य और स्वरूप को लेकर, क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे के गठन की प्रक्रिया को लेकर एवं और कुछ राजनीतिक सवालों पर। इन सवालों पर कई बैठकें होने के बाद (बैठकें हमारे तत्वावधान में हुआ करती थीं) उन्होंने जो वक्तव्य रखा, उससे हम अचम्भित रह गये। भारत की राजसत्ता का स्वभाव तथा चुनाव बहिष्कार, सशस्त्र संग्राम के जरिये फौज और आधार इलाके खड़ी करना तथा इलाकाई तौर पर सत्ता छीनने आदि के सवाल पर वे बराबर ही आग उगलने वाले वक्तव्य रखते।

अचानक एक बैठक में उन्होंने कहा कि बहुत सोच विचार कर देखा है कि सशस्त्र संग्राम को आगे ले जाने के लिए केवल नीचे से यह संग्राम चलाने से काम नहीं चलेगा। ऊपर के स्तर पर भी इस संग्राम का एक फ्रंट खोलना जरूरी है। सशस्त्र संग्राम चलाने के साथ–साथ नीचे के स्तर पर एक खुले मंच से इस संग्राम के पक्ष में प्रचार चलाना होगा। इसीलिए उन्होंने उनके तमाम जन संगठनों को एक छाते के नीचे एकजुट करने के लिए ''इंडियन पीपुल्स फ्रंट'' के नाम से एक योग्य मंच खड़ी करने की जरूरत महसूस की। यह मंच खुले में कानूनी कार्यकलाप चलाएगा एवं निर्वाचन में हिस्सा लेगा। पार्टी यथावत भूमिगत रह कर चुनाव बहिष्कार सहित सशस्त्र संग्राम चलाती जायेगी। इस तरह, ऊपर और नीचे से, दोनों तरफ से संघर्ष चलाकर अधिकतर लोगों को इस राजनीति के पक्ष में ले आकर सशस्त्र संग्राम को आगे ले जाना संभव होगा। उन्होंने हमसे अनुरोध किया कि एम.सी.सी. उसके जन संगठनों को उनके खुले मंच ''इंडियन पीपुल्स फ्रंट'' से एकताबद्ध करें। मास फ्रंट में एकताबद्ध होकर काम करते हुए हम और भी करीब आ सकेंगे तथा एक ही पार्टी में एकताबद्ध हो सकेंगे।

उनके इस वक्तव्य से हम समझ गये कि इस स्थापना में हमारे लिए कुछ भी मान लेना संभव नहीं। चुनाव बहिष्कार के बारे में एम.सी.सी. की

व्यवस्था में उनके सुलझाये बगैर पार्टी अनुशासन को नकार कर समूची पार्टी को ही अनुशासनहीनता में धकेल देते हैं। मिथ्या प्रचार तथा कुत्सा का आश्रय लेते हैं तथा पार्टी की सांगठनिक एकता तथा संघर्ष के क्षमता को कमजोर बना कर दुश्मन के हाथ ही मजबूत करते हैं।

vkykpuk o vkRekykpuk & y{; vkj i)fr

आलोचना – आत्मालोचना पार्टी की जान है। पार्टी की गलतियों को चिन्हित कर और उसके स्रोत या कारणों को तलाश कर व्यक्ति, कामरेड या कमेटी के स्तर पर आत्म–आलोचना करते हुए पार्टी के काम के विकास के लिए दोष निवारण करना और संघर्ष के मैदान में नयी जीत हासिल करना यही इसका मकसद है।

मगर आलोचना–आत्मालोचना के मामले में देखा गया है कि इसके मूल उद्देश्य को ही छोड़ा जा रहा है। इसका मूल उद्देश्य तो रोग का इलाज करके रोगी को बचाना है। बीमारी किसी भी व्यक्ति कामरेड या कमेटी को हो सकती है। जो आलोचना कर रहे हैं वे अगर सर्वहारा सिद्धांत के दृष्टिकोण से किसी कामरेड को दुश्मन न मान कर क्रांति के साथी के तौर पर उसकी आलोचना कर रहे हैं तो उसका उद्देश्य व पद्धति होगी उनके गलत विचार व काम–काज की गलत शैली को आलोचना के जरिये सुधारने में मदद करना। मदद का नजरिया ही इन तमाम आलोचनाकर्ताओं में नहीं रहता। इस मामले में कामरेड माओ ने बहुत कुछ कहा है। हमने काम के दौरान देखा है कि आलोचक जिसकी आलोचना कर रहे हैं उसे प्रतिपक्ष मान बैठते हैं और उसके मैत्रीपूर्ण आलोचना करके उसे और अच्छा पार्टी कामरेड के तौर पर खड़ा करने के लक्ष्य से आलोचना न करके उसे छोटा दिखाना, अपमानित करना या नंगा करने की कोशिश कर रहे हैं। फिर कभी–कभी ऐसा भी दिखा है, जिस कामरेड ने गलती की है, वे अपनी गलती समझ पाए हैं और भीतर ही भीतर पाश्चाताप में जल रहे हैं, इसे जानकर भी आलोचक कामरेड उसकी इस तरह आलोचना कर रहे हैं, मानो जले पर नमक छिड़क रहे हैं। फलस्वरूप वह कामरेड निराश हो, आत्मविश्वास खोकर सिकुड़ जाते हैं। आलोचना का उद्देश्य कभी किसी को नीचा दिखाना, उसका मानो कोई गुण ही नहीं है, ऐसा प्रमाणित

करना नहीं है। सर्वहारा दृष्टिकोण से किसी की आलोचना करना, किसी कामरेड की मदद करने, उसे एक कुशल कामरेड बनाने में मददगार होने, ताकि वह क्रांति के काम को और भी अच्छी तरह आगे ले जा सके, होना चाहिए।

हम में गलतियां और तरह–तरह की कमजोरियां रहे, दुश्मन यह चाहता है। इनका फायदा उठाकर क्रांतिकारी आंदोलन का दमन करने में उसे सुविधा होती है। आलोचना यूं करना चाहिए कि कामरेड अपनी गलतियों को पहचान सकें और इसके लिए उसको आत्मग्लानि हो और फलस्वरूप वह हिम्मत के साथ आत्मालोचना करने को प्रेरित हो। फिर कुछ ऐसे कामरेड हैं, जो क्रांति और पार्टी के प्रति निहायत ही विश्वसनीय हैं। इमानदार, मेहनती और अनुशासनबद्ध। फलतः वे अपने को आलोचना से परे मानते हैं। जब उनकी भी आलोचना की जाती है, तो वे क्षुब्ध हो जाते हैं।

ये तमाम गुण रहने के बावजूद पेट्टी बुर्जुआ मनोभाव के लिए उसे आलोचित होना होगा। क्योंकि वे पीठ पीछे बात करते हैं (back biting), ग्रुप मानसिकता रहना और नेतृत्व के चमचे के तौर पर रहना चाहते हैं। हर वक्त वे अपने को सही मानते रहते हैं। अपनी गलती वे स्वीकार करना नहीं चाहते। दूसरे की आलोचना में वे हर समय ही आगे रहते हैं, कभी भी आत्म–आलोचाना नहीं करते। उनकी इन तमाम पेटी बुर्जुआ मानसिकता के फलस्वरूप वे दूसरों की श्रद्धा अर्जन करने में व्यर्थ हुए। फिर आत्म–आलोचना के क्षेत्र में देखा गया है, बहुत कामरेड पेट्टी बुर्जुआ मानसिकता से आत्मालोचना न करते हुए समझते थे कि इससे अपने आप को छोटा करके देखना, अपमानबोध करना और दुनिया के कामरेडों के सामने उसकी गलती जाहिर/व्यक्त हो जाने से, वे कामरेड अब आगे उसे मानने से मुकर जाएंगे या उसे महत्व नहीं देंगे, इस आशंका से पीड़ित होते हैं। फलस्वरूप हर समय वे आत्म–आलोचना से बचने की कोशिश करते हैं या उसे ढंकने के लिए तरह–तरह के बहाने तथा झूठ का सहारा लेते हैं। महान शिक्षक (महामति) मार्क्स ने कहा है कि गुप्त पार्टी में काम करने के लिए अक्सर झूठ का सहारा लेना पड़ता हैं, वह अपराध भी नहीं है। कौशल के तौर पर ही ऐसा करना पड़ता है। झूठ बोलना अपराध तभी होता है, जब कोई कामरेड अपनी गलती तथा कमजोरी को ढंकने के लिए झूठ का सहारा

भेजी गयी। पहले दिन की बैठक में उन्होंने कहा, आप लोगों के बारे में हमारा मनोभाव बदला है। हम समझते हैं, आप लोग भी एक क्रांतिकारी ग्रुप हैं। खासकर आप लोगों के कांकसा में किसान संग्राम से इस मामले में हमारा प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। आप ने कांकसा में उन्नत स्तर/मान की लड़ाई की। इसके बारे में कोई प्रचार नहीं किया। यह आप लोगों की कमजोरी है। यह कांकसा के जेल में आपलोगों के कई किसान कामरेडों के आने के बाद उन लोगों से बातचीत के बाद हम लोग जान पाए। हम कांकसा के किसान संग्राम को ऊंचा उठाना चाहते हैं और आप लोगों के साथ पार्टी के स्तर पर एकताबद्ध होने के लिए मूल बातचीत शुरू करना चाहते हैं।

सी पी आई (एम–एल) के इस ग्रुप का मनोभाव हमें सकारात्मक लगा था। हम लोगों ने कई बैठकें की। मगर मतभिन्नता के बिंदू और विषयवस्तु इतने अधिक और विस्तृत थे कि इस पर आगे न बढ़ना मुनासिब समझा गया।

इसके बाद 1978 में सी पी आई (एम–एल)(पी.यू.) के साथ एकता की बातचीत शुरू हुई। उस बैठक में पी यू की तरफ से कामरेड नारायण सान्याल और पी. के. राय (अजय) थे। हमारी ओर से कामरेड के. सी. नेतृत्व कर रहे थे। मैं भी था। बहुत विषयों पर मित्रतापूर्ण बातचीत हुई। जहां तक याद आता है, मतभेद के विषय थे पार्टी गठन की प्रक्रिया के बारे में, चीन की दसवीं कॉंग्रेस के बारे में, 'युग' के सवाल पर, जन–संगठन के रूप तथा क्रांतिकारी कमेटी के सवाल पर एवं और कुछ राजनीतिक सवालों पर।

बाद में के. सी. के गुजर जाने पर पी यू के साथ एम सी सी के केंद्रीय कमेटी की कई बार बैठकें हुई। वहां उपरोक्त मतभेदों के अलावा भी बिहार के जहानाबाद जिले में काम के विस्तार के सिलसिले में आई कुछ कडुवाहट की सृष्टि हुई। फलस्वरूप बातचीत कई वर्षों तक बंद रही। इसके बाद भी कई बार बैठकें हुई, पर वह अंतिम परिणाम तक पहुंच नहीं पायी। पी. यू. संगठन सी पी आई (एम–एल) (पी डब्ल्यू) के साथ एकताबद्ध हो गया। इस बीच सी पी आई (एम–एल) के विनोद मिश्र के नेतृत्व वाले ग्रुप ने संपर्क कर बातचीत के लिए बैठक का प्रस्ताव दिया। उस समय ये लोग सशस्त्र संग्राम के समर्थन में जोरदार वक्तव्य रखते थे। हम सशस्त्र संग्राम चला रहे थे। अतः वे मानते थे कि हमें सी पी आई (एम–एल) पार्टी में एकताबद्ध होना चाहिए।

1. सी पी आई (एम–एल) पी. यू.
2. सी पी आई (एम–एल) वी. एम. के नेतृत्व वाली
3. सी पी आई (एम–एल) सेंट्रल टीम (रमेन बाबू)
4. सी ओ सी सी पी आई (एम–एल) शर्मा
5. यू सी सी आर आई (एम–एल) नागिरेड्डी। डी वी राव ग्रुप
6. सी पी आई (एम–एल) सत्यनारायण सिंह के नेतृत्वाधीन
7. सी पी आई (एम–एल) (पी डब्ल्यू) सीतारामैया के नेतृत्वाधीन

इनके अलाका विभिन्न राज्य स्तर के ग्रुपें भी :

1. सी पी आई (एम–एल) पश्चिम बंगाल कौशिक बनर्जी ग्रुप
2. सी पी आई (एम–एल) पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी – दीपक राय/वासु ग्रुप
3. सी पी आई (एम–एल) प्रदीप बनर्जी ग्रुप
4. सी पी आई (एम–एल) नक्सलबाड़ी, केरल
5. सी पी आई (एम–एल) तामिलनाडू राज्य कमेटी
6. सी पी आई (एम–एल) द्वितीय केंद्रीय कमेटी, पश्चिम बंगाल
7. आर सी सी आई (एम–एल) पंजाब, करम सिंह के नेतृत्वाधीन

प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि सी पी आई (एम–एल) के तमाम संगठनों ने ही पहले हम लोगों के साथ एकता पर बातचीत के लिए हमें बुलाया। हमने उसका सही तौर पर जवाब दिया। हमने पहले किसी को आह्वान नहीं किया। क्योंकि अविभाजित सी पी आई (एम–एल) नेताओं ने हमें कभी भी क्रांतिकारी ग्रुप के तौर पर स्वीकृति नहीं दी। किसी–किसी ने हमें सी पी आई (एम) का दलाल तक कहा था। कहीं–कहीं हमलोगों के कार्यकर्ताओं पर हमला भी बोला था। बीरभूम में सी पी आई (एम–एल) पार्टी के एक युवा नेता ने मेरी हत्या की योजना बनायी। कुछ भी हो यह सब कुछ आज इतिहास है।

1976 के बीचों–बीच पश्चिम बंगाल के सी पी आई (एम–एल) प्रदीप बनर्जी ग्रुप की ओर से पहली बार हमको एकता पर बातचीत के लिए चिट्ठी

लेते हैं। मार्क्स इससे बहुत नफरत करते थे।

सर्वहारा दृष्टिकोण से आत्म–आलोचना करने का अर्थ है, अपनी गलत सोच और काम को सबके सामने खोल देना तथा कामरेडों से आलोचना का आह्वान करना ताकि उनके भीतर का पेटी बुर्जुआ का कूड़ा कर्कट दृढ़ता से त्याग कर क्रांति के काम को और भी आगे ले जा सकें। आत्म–आलोचना व्यक्ति/कामरेड को उन्नत बनाता है। पार्टी के काम को उन्नत कर पार्टी एकता को मजबूत बनाता है और क्रांति का विकास करता है।

आत्म–आलोचना से किसी कामरेड की मानहानि नहीं होती बल्कि और भी सम्मान बढ़ता है और न करने पर सभी कामरेड समझ जाते हैं कि आपने गलती की है, पर आप मानने के लिए तैयार नहीं है। यह मानसिकता ही पार्टी और कामरेडों के बीच आपकी मर्यादा घट जाने का कारण बन जाता है।

नेतृत्व में भी आत्म–आलोचना करने का साहस होना चाहिए। कोई भी गलतियों से परे नहीं हैं। पार्टी नेतृत्व को अवश्य ही सम्मान देना होगा। पार्टी का सम्मान नेतृत्व के सम्मान के साथ जुड़ा हुआ है। पर नेतृत्व को अंधे की तरह सर पर न उठायें। सर पर कोई चीज होने पर दिखाई नहीं देता। नेतृत्व को मर्यादा के साथ कंधे पर उठाइये। उन्हें उनकी मर्यादा देना ठीक है और गर्दन घुमा कर देख भी पा रहे हैं कि वह क्या कर रहा है। पार्टी में हर एक की ही नजरदारी रहनी चाहिए।

मेरा परामर्श है – कोई भी किसी कामरेड का चमचा न बनें और किसी को चमचा नहीं बनाईए। क्रांतिकारी बनें और दूसरों को क्रांतिकारी बनाएं। पार्टी में पेटी बुर्जुआ मानसिकता की अधिकता के चलते ये बीमारी लगभग हर जगह दिखती है। हमारी महान पार्टी को अवश्य ही इस रोग से मुक्त करना होगा।

ikVh e xj&lokgkjk lkp fopkj d ckj e

कम्युनिस्ट पार्टी प्रचलित समाज जीवन का ही एक अंश है। समाज से कटा हुआ नहीं है। समाज के विभिन्न वर्ग, स्तर, जाति, धर्म, भाषा से ही लोग पार्टी में आते हैं। पार्टी में जब कोई आता है तो वह उस समय कम्युनिस्ट

नहीं होता। कम्युनिस्ट सिद्धांतों के बारे में एक सतही समझ तथा समाज परिवर्तन की एक आकांक्षा के साथ वह पार्टी से जुड़ता है। जिस वर्ग से वे आते हैं, उसी वर्ग के सोच–विचार, सामाजिक जीवन, आचार व्यवहार, संस्कार, तरह तरह के अवैज्ञानिक या पिछड़े हुए विचार या विश्वास साथ लेकर ही आते हैं। पार्टी में जुड़ते समय विभिन्न पेटी बुर्जुआ और सामंती सोच विचार का कूड़ा करकट भी साथ लाते हैं। पार्टी एक ऐसी जगह है जहां आने पर पार्टी की वैज्ञानिक विचारधारा, राजनीतिक शिक्षा एवं वर्ग संघर्ष में हिस्सा लेने के माध्यम से उसके सर्वहारा वर्ग के सोच–विचार जीवन यात्रा के तौर–तरीके एवं आदतों में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया शुरू होती है। और यह रातों–रात नहीं होता। कठोर परिश्रम, निष्ठा, इमानदारी, त्याग तथा कठोर अनुशासन के बीच अपने को गहराई से संलग्न रखकर बार–बार कठोर परीक्षा का सामना करना पड़ता है। और इस परीक्षा में सबसे अच्छा शिक्षक है मेहनती जनता। वे ही फैसला करेंगे कि आपने एक सही क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट होने की कितनी योग्यता हासिल की है। सभी कम्युनिस्ट अवश्य ही क्रांतिकारी हैं पर सभी क्रांतिकारी कम्युनिस्ट नहीं हैं। कम्युनिस्ट सिद्धांत पृथ्वी में सबसे उन्नत स्तर का विज्ञान है। उसे हासिल करना आसान नहीं है। खुद को वर्गच्युत न कर, जनता से और वर्ग संघर्ष से अलग रहकर कभी भी मानसिक व व्यावहारिक क्षेत्रों में यह परिवर्तन नहीं लाया जा सकता।

लिहाजा, यों सोचना कि पार्टी में गैर सर्वहारा सोच–विचार प्रकट नहीं होगा, मार्क्सवादी द्वंद्वात्मक (भौतिकवादी) दृष्टिकोण से गलत है। पार्टी में यह है, रहेगा और इसके प्रकट होने पर शिक्षा और संग्राम भी रहेगा। पार्टी में सैद्धांतिक तौर पर शिक्षा देना एक निरंतर प्रक्रिया है।

वस्तुतः नयी पार्टी खड़ी करने का अर्थ पार्टी को सैद्धांतिक और राजनीतिक तौर पर खड़ी करने का काम माना जाता है और यह काम एक दिन का नहीं है। पार्टी निर्माण के पहले दिन से ही, पार्टी के संचालन के दौरान और क्रांति के बाद भी यह काम निरंतर चलाते जाना होगा। चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने हमें सिखाया है कि समाजवादी समाज में भी वर्ग और वर्ग संघर्ष का अस्तित्व बना रहता है। फलस्वरूप स्पष्ट रूप से कहा जाय तो कम्युनिस्ट समाज में कदम रखने तक भी यह संघर्ष जारी रखना होगा।

सुपरिटेंडेंट कोई साथ नही आया। वे अकेले ही आये और अकेले ही लौट गये। विचित्र मामला है और तुम्हारा भी आचरण कैसा था। प्रधानमंत्री आये और तुम बैठे–बैठे सिगरेट पी रहे हो। क्या सिगरेट फेंक कर तुम्हें उठ खड़ा होना नहीं चाहिए था? प्रधानमंत्री ने क्या सोचा होगा, जरा सोचो तो! पुरूष नर्स ने हंस कर कहा – कामरेड भासानी आपके गुस्से का कारण मैं समझता हूं। आप असल में अपने देश में नेता और मंत्रियों को लेकर जो हो–हल्ला देखने के अभ्यस्त हैं, वह यहां नहीं मिलेगा। हम तो समाजवादी देश के नागरिक हैं और कामरेड चाऊ एन लाई एक समाजवादी देश के प्रधानमंत्री हैं। कामरेड चाऊ एन लाई हमारे नेता तथा शिक्षक हैं। इसके साथ वे हमारे अच्छे दोस्त भी हैं। आप सिगरेट फेंक कर उठ खड़ा होने की बात कर रहे थे। अच्छा आप ही बताइए तो आपके पास आपके कोई दोस्त के आने पर आप क्या सिगरेट फेंक कर उठ खड़े होते हैं? क्या आप जानते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री सरकारी काम के अलावा जब किसी निजी काम पर जाते हैं तब वे सरकारी गाड़ी का इस्तेमाल नहीं करते, साईकिल पर सवार होकर जाते हैं। चीन की सड़कों पर बहुतेरे लोगों ने प्रधानमंत्री को साईकिल चला कर जाते देखा है। अगर कभी–कभार मजबूरन सरकारी गाड़ी का इस्तेमाल करना पड़ ही गया, तो पेट्रोल का दाम वे दे देते हैं। हमारे देश की पार्टी तथा सरकार के नेतागण श्रम को मर्यादा देने तथा देश की जनता को इस बारे में शिक्षित करने के लिए हर रोज सुबह एक घंटा इसी काम के लिए खेती में श्रमदान करते हैं। यह सब सुन भासानी अवाक् हो कर देखते रह गये।

lh ih vkbZ ¼,e&,y½ ikVhZ ds fofHkUu xzqiksa ds lkFk gekjk ,drk&ppkZ dk iz;kl

इस समय 1976 से सी पी आई (एम–एल) पार्टी के विभिन्न ग्रुपों के साथ हमारी एकता की बातचीत प्रक्रिया चली। पी डब्ल्यू के साथ एकताबद्ध होकर सी पी आई (माओवादी) पार्टी का गठन होने तक यह प्रक्रिया जारी रही। सी पी आई (एम–एल) के जिन सब समूहों के साथ हमारा एक से अधिक बार बातचीत हुई, वे हैं :

सारे भारत में फैले संगठनों में –

चलायमान/जारी क्रांतिकारी आंदोलन (संग्राम) में नेतृत्व देने के साथ–साथ पार्टी का यह काम है कि वह लगातार इस गैर–सर्वहारा रूझान और अभिव्यक्ति के खिलाफ संग्राम चलाये। मुख्यतः सैद्धांतिक और राजनीतिक शिक्षा में शिक्षित करना ही इसका महत्वपूर्ण काम है। इसके बाद बीच–बीच में शुद्धीकरण अभियान, आलोचना व आत्म–आलोचना के हथियारों का सही इस्तेमाल कर कामरेडों को आदर्शगत चेतना और कर्तव्य की चेतना में प्रेरित किया जाये।

पार्टी नेतृत्व पर ऊपर के स्तर की कमेटियों में आदर्शगत स्तर और राजनीतिक चेतना कुछ उन्नत होने के कारण वहां समस्या उतनी तीव्र नहीं रहती। असल में देखना होगा कि नीचे की कमेटियां ठीक–ठाक चल रही हैं या नहीं। जो लोग रोजाना जनता के साथ जुड़कर काम करते हैं, उनके जीवनयापन के तरीके, आदतें, व्यावहारिक आचरण, विश्वास, जनता की आस्था तथा भरोसा हासिल कर रहे हैं या नहीं आदि। वर्ना वे जनता से अलग पड़ जाएंगे और पार्टी भी जनता से अलग पड़ जाएगी। एक क्रांतिकारी का चरित्र कैसा हो, इस बारे में जनता कोई मार्क्सवादी शिक्षा में शिक्षित न होने पर भी यह बखूबी जानती है कि क्रांतिकारियों को ईमानदार, त्यागी, निस्वार्थ, कठिन परिश्रमी, संयमी, अनुशासनबद्ध तथा विनम्र होना होगा। ऐसे ही इनसान जनता की आस्था, विश्वास, तथा श्रद्धा अर्जित कर सकेंगे तथा उन्हें देखकर ही जनता पार्टी पर, पार्टी की नीति और उसके नेतृत्व के प्रति श्रद्धा और विश्वास विकसित करेगी।

कामरेड लेनिन ने कहा है – ''क्रांतिकारियों को सरल जीवन, तथा उन्नत सोच रखना होगा।'' इस मामले में पार्टी अपने सदस्यों को शिक्षित करने के दौरान पार्टी के हर स्तर के सदस्यों (उच्च स्तर से निम्न स्तर तक), सामरिक संगठन की हर स्तर की कमेटियों एवं जन संगठनों के नेतृत्वकारी कमेटियों को ऐसे शिक्षित करना होगा ताकि वे जनता के बीच उदाहरण (मिसाल) बन कर पेश हो सकें। इस मामले में पार्टी तथा जन संगठनों में काफी गैर–सर्वहारा सोच–विचार और उसकी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इसमें कइयों का उदाहरण यूं हैं :

चाहिए? नेतृत्व में जनगण और पार्टी की संपत्ति के बारे में कैसी प्रतिबद्धता रहनी चाहिए? समाजवादी नेतृत्व कैसा होगा? इस मामले में एक सुंदर मिसाल बांग्लादेश के किसान आंदोलन के नेता मौलाना भासानी के एक लेख में मिलता है।

मौलाना भासानी कम्युनिस्ट नहीं थे। बांग्लादेश की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ उनका मैत्रीपूर्ण संबंध था। मौलाना भासानी बांग्लादेश के वामपंथी किसान आंदोलन के श्रद्धेय नेता थे। चीनी पार्टी के साथ भी उनका संपर्क था।

एक बार भासानी बुरी तरह बीमार पड़ गये। चीन की पार्टी नेतृत्व को इसका पता चला तो चिकित्सा के लिए चीन आने का आमंत्रण दिया। चीन जाने के मामले में भासानी दुविधाग्रस्त थे। मगर चीनी नेताओं के जोर देने पर अंततः वे चीन गये। वहां एक अत्याधुनिक अस्पताल में उनकी चिकित्सा चलती रही। कई दिन बाद उन्हें बताया गया कि चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई आगामी दिन शाम चार बजे आपसे मिलने आयेंगे। दूसरे दिन सुबह से ही वे आग्रही होकर इंतजार करने लगे। वक्त बढ़ने के साथ–साथ उन्होंने महसूस किया कि प्रधानमंत्री आयेंगे जानकर भी अस्पताल में कोई चहल–पहल नहीं है। अस्पताल को विशेष रूप से साफ कर मालाओं से सजाया भी नहीं गया। डाक्टरों–नर्सों की कोई कर्म व्यस्तता या भीड़ नहीं है। पुलिसी व्यवस्था नहीं है, नौकरशाहों का आना–जाना नहीं है, और दिनों जिस तरह अस्पताल चलता है, उसी तरह चल रहा है। प्रधानमंत्री आएंगे फिर भी प्रबंधकों का कोई हिलडोल तक नहीं नजर आया। भासानी ने सोचा कि अब आज शायद प्रधानमंत्री नहीं आयेंगे। भासानी के केबिन में केवल एक पुरूष नर्स ड्यूटी करते थे। भासानी ने उससे कुछ पूछताछ नहीं की। ठीक चार बजे के समय प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई उनके कमरे में प्रविष्ट हुए। सफेद बुशशर्ट तथा सफेद फुलपैंट पहने हाथ में गुलदस्ता लेकर। उन्होंने भासानी के हाथों में गुलदस्ता थमाया और हैंडशेक किया। कुर्सी पर बैठे नर्स के साथ भी हाथ मिलाया। बाद में भासानी का कुशल क्षेम पूछकर सारा समाचार लिया। चाऊ एन लाई करीब बीस मिनट रहने के बाद फिर से हाथ मिलाकर अकेले ही लौट गये।

इस बार भासानी ने बहुत ही क्षुब्ध होकर नर्स को यह कह कर धमकाया कि तुम लोगों का कैसा आचरण है? प्रधानमंत्री आये, फिर भी किसी ने उनका स्वागत नहीं किया। कोई सुरक्षाकर्मी नहीं है। डॉक्टर, नर्स या

1. कमेटी नेतृत्व खुद कुछ खास सुविधा भोगने की कोशिश करते हैं। साधारण कामरेडों को वे समान अधिकार तथा सम्मान देने के बजाय उन्हें निचले स्तर के कर्मचारियों के तौर पर देखते–समझते हैं।
2. खुद अनुशासन तथा समय पर काम करने को महत्व नहीं देते। समय का पाबंद नहीं होते हुए भी दूसरों को यांत्रिक अनुशासन मानने को मजबूर करते हैं।
3. खुद हल्का बोझ लेते हैं तथा औरों को भारी बोझ सौंपते हैं।
4. खुद पहले खतरा उठाने से बचते हैं पर दूसरों को खतरे में झोंक देते हैं।
5. अपने खाने–पीने के बारे में निश्चिंत होते हैं, पर दूसरों ने खाया–पीया है या नहीं इसकी सुध नहीं लेते।
6. खुद पहरा देने के मामले में दूसरों के साथ समान रूप से जिम्मेदारी नहीं लेते।
7. तूफान, बारिश या जाड़े की रात खुद निरापद पनाहगार चुन लेते हैं और दूसरों को तकलीफ उठाने को मजबूर करते हैं।
8. रुपये–पैसे खर्च करने के मामले में कमेटी के दूसरे सदस्यों से पूरा–पूरा हिसाब ले लेते हैं, पर अपने खर्च का हिसाब किसी को नहीं देते।
9. किसी कामरेड की कमीज या कपड़ों की जरूरत होने पर अपने पुराने कपड़े उन्हें दे देते हैं और इस तरह अपनी उदारता की मिसाल पेश करते हैं। पर बाद में खुद के लिए नये कपड़े खरीद लेते हैं। अपने पुराने कपड़े कामरेड को न देकर उन्हें नया पोशाक खरीद देने की नैतिक मानसिकता नहीं रखते।
10. खाने–पीने के मामले में गैर जरूरी खाने के हिसाब दिखला देते हैं। जिनमें काजू, बादाम, किसमिस, दूध, दही, मांस आदि होता है। गैर जरूरी कीमती साबुन, पाउडर, लिबास, जूते, काला चश्मा इत्यादि इस्तेमाल करते हैं।

11. अपना कपड़ा खुद नहीं धोते, दूसरों से धुलवाते हैं। खुद गहरी पढ़ाई लिखाई नहीं करते, दूसरों को भी पढ़ने–लिखने को उत्साहित नहीं करते।
12. दूसरों की कठोर आलोचना करते हैं पर खुद आत्म–आलोचना नहीं करते। जनता के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत नहीं करते, सामंती आचरण करते हैं।
13. कार्यकर्ताओं के किसी सवाल का जवाब देने में दिलचस्पी नहीं दिखाते या दो–चार बातें कह कर अपनी जिम्मेदारी निपटा डालते हैं। किसी को कोई काम देने पर, उस काम का राजनीतिक महत्व क्या है, नहीं बतलाते (समझाते) या उस काम में क्या–क्या दिक्कतें आ सकती हैं और उन्हें सुलझाने का रास्ता नहीं बतलाते, सिर्फ काम करने का हुक्म देकर ही अपना उत्तरदायित्व पूरा हुआ मान लेते हैं।

ये तमाम गैर–सर्वहारा रुझान या काम की धारा पद्धति केवल पार्टी में ही नहीं, जनसंगठनों में भी दिखाई देती है। जन संगठन में जो लोग पेशेवर के तौर पर काम कर रहे हैं, उन में भी ये तमाम समस्याएं हैं। उनकी जीवन यात्रा के तौर तरीके, आचरण और काम की पद्धति, आचरण, पोशाक, यातायात तथा हाथ खर्चे के मामले में आम कार्यकर्ताओं और जनता में बहुत सारे सवाल हैं। जन संगठन में गैर–पेशेवर कार्यकर्ता जो लोग पार्टी से हाथ खर्च नहीं लेते, उनकी जीवन यात्रा की पद्धति, आचरण तथा काम के तौर–तरीके में किसी क्रांतिकारी आदर्श का चिह्न नहीं मिलता। पार्टी के सामने की ये तमाम समस्याएं क्रांतिकारी समस्याएं हैं। पार्टी सदस्य तथा जन संगठन के सदस्यगण इस मामले में जागरुक न होने, आदर्शगत चेतना तथा कर्तव्य की चेतना में अपने आप को प्रेरित न कर पाने पर, पार्टी क्रमशः ही अवसरवाद तथा संशोधनवाद की कीचड़ में फँस जाएगी और क्रांन्ति असफल हो जाएगी और अनगिनत कामरेडों के आत्मबलिदान और स्वार्थत्याग बेकार हो जाएंगे तथा दुश्मन विजयोल्लास करेंगे।

पार्टी के उच्चतम नेतृत्व तथा आम कार्यकर्ताओं में सम्पर्क कैसा होना

गोली मार दी। उस त्याग को याद रखने के लिए क्रांति के बाद यह बगीचा बनाया गया।

कैंटन में एक कब्रगाह, एक बच्चों का स्कूल भी हमें दिखलाया गया। एक प्राइमरी स्कूल के शिक्षक के साथ हमारी बातचीत हुई। उन्होंने बतलाया कि सांस्कृतिक क्रांति के दौरान पूंजीवाद के राही कहकर किस तरह उनकी छिछालेदर की गयी थी। पर उसका कहना था कि सांस्कृतिक क्रांति में सब कुछ बुरा नहीं था।

चीनी नेताओं के साथ बातचीत में कुछ नया नहीं मिला। लगभग सभी सांस्कृतिक क्रांति के दौरान ''पूंजीवाद के राही'' के रूप में चिह्नित हुए थे। हम कोशिश कर रहे थे कि आम लोगों से भी बात किया जाये। मगर चीनी लोग बड़ी सतर्कता के साथ इससे कतरा रहे थे। चीन यात्रा में एक ओर सफलता मिलने के बावजूद माओ के अनुयायियों का कोई संधान हमें नहीं मिला। संभवतः हमारी बातचीत की विषयवस्तु से वे समझ गये थे कि हम माओ के अनुगामी और सांस्कृतिक क्रांति के समर्थक हैं। औपचारिक रूप से हमारे साथ दोस्ताना व्यवहार करने के बावजूद वे पहले ही दिन से समझ चुके थे कि राजनीतिक रूप से हम उनके विपरीत छोर पर खड़े हैं। एक बार मेरे साथी अध्यापक कामरेड ने मुझे सतर्क करते हुए कहा कि उनक तीव्र विरोध न कीजिए कौशल के साथ बात कीजिये, वर्ना हमें गिरफ्तार कर लेंगे। मैंने उन्हें समझाते हुए कहा कि हमें बिरादराना पार्टी का दर्जा दिया है, अतः वे ऐसा नहीं करेंगे। वर्ना इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी बदनामी होगी।

आते समय वे कामरेड हवाई अड्डे पर हमें विदा करने आये। उन्होंने कहा – हम लोगों में मतभेद है, इसे दुरूस्त करने में समय लगेगा। आप लोगों से अनुरोध है कि इस मतभेद की घोषणा तुरंत मत कीजिए और बहुत बातचीत की जरूरत है। इसके जवाब में मैंने कहा कि हम ऐसा कोई वादा नहीं कर सकेंगे। हम इस बातचीत की विषयवस्तु केंद्रीय कमेटी के समक्ष रखेंगे। वहां जो भी फैसला होगा, उससे आपलोगों को अवगत करा दिया जाएगा।

बाद में केंद्रीय कमेटी में इस बातचीत की रिपोर्ट रखी गयी। वहां

में जोरदार बातचीत रखी। सी पी आई (एम–एल) पार्टी की गठन प्रक्रिया गलत थी, इसे दोनों ने ही माना। कुछ भी हो, बातचीत चलते समय अचानक एस एन एस ने कहा – यह तो मैं चुनाव बहिष्कार पर एक पर्चा ले आया (उस समय संभवत कोई चुनाव होने की बात थी) मगर आपको बता रहा हूं – चुनाव बहिष्कार को लेकर मेरे मन में कुछ सवाल उठे हैं, मैं इसे सही नहीं मान रहा हूं। कामरेड के.सी. ने कहा, ठीक है इस मामले में अपने वक्तव्य को दस्तावेज के तौर पर हमें दीजिए। हमलोग पढ़ कर उस पर अपनी राय देंगे।

उस समय एस एन एस ने कहा, इसी बीच मैंने लिखना शुरू कर दिया है। कुछ दिनों के बाद सैफुद्दीन के हाथ से उसे भिजवा दूँगा। बाद में बैठक का और एक दिन तय हुआ। मगर हम लोगों के पास कोई दस्तावेज भेजने से पहले ही एस एन एस ने समाचार पत्र में वक्तव्य देकर बता दिया कि वे संसदीय चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे हैं।

एस एन एस की यह पलटी खाना हमलोगों से उसकी सिर्फ वादाखिलाफी ही नहीं, उनका यह सिद्धांत भारतीय क्रांतिकारी खेमे में एक बड़ी टूट की शुरूआत करेगी, ऐसा हम मानने लगे।

बाद में एस एन एस के साथ बैठक के लिए और भी एक दिन तय करके सैफुद्दीन ने हमलोगों से संपर्क किया। वहां कामरेड के.सी. ने सीधे तौर पर बता दिया कि हम और एस एन एस के साथ कोई बैठक नहीं करेंगे। एक तो यह वादाखिलाफी करते हैं और मनमाफिक एकतरफा निणर्य भी लिया है। दूसरे, चुनाव बायकॉट की जरूरत पर क्रांति की अग्रगति निर्भर कर रही है, इस विषय में एस एन एस की तीव्र मुखालिफत करते हुए के. सी. ने करीब तीन घंटों का वक्तव्य रखा। बेचारा सैफुद्दीन हक्का–बक्का रह गया। जवाब में वे कोई बात ही नहीं कर पाये। बाद में उनके साथ और बैठकें नहीं हुई।

इस बैठक के बाद कामरेड के. सी. ने मुझसे कहा कि इस मामले में सतर्क रहिएगा। यह मत समझिए कि यह सिर्फ एस एन एस की राय हैं, यह एक पेटी बुर्जुआ रूझान (ट्रेंड) है और आगामी दिनों में इस रूझान के और भी कई शिकार होंगे। बाद के दिनों में उनके इस वक्तव्य की सच्चाई हमने देखी है। एस एन एस ही पहले पहल इस लाइन के पक्ष में खड़े हुए, पर बाद में सी

पी आई (एम–एल) के कई ग्रुपों ने इसका अनुसरण किया। खासकर सी पी आई (एम–एल) वी एम के पलटी खाने के बाद सी पी आई (एम–एल) के कुछ ही ग्रुप सशस्त्र संग्राम के पक्ष में मजबूती से डटे रहे और उन्हें लेकर ही हमारी एकता की बातचीत जारी रही।

lh ih vkbZ ¼,e&,y½ ¼ih MCY;½ dh lkFk ,drk dh ckrphr dh izfØ;k 'kq:

1981 के फरवरी माह में वी एम ग्रुप की अगुआई में इंदिरा गांधी की तानाशाही के खिलाफ क्रांतिकारियों के एकजुट प्रतिरोध के मकसद से पश्चिम बंगाल के उत्तर चौबीस परगना जिले में एक बैठक का आयोजन किया गया। वी. एम. ग्रुप तब तक सशस्त्र संग्राम के पक्ष में ही काम कर रहा था और समूची व्यवस्था गुप्त रूप से की गई थी। उस बैठक में जो शामिल थे, वे –

1) सी पी आई (एम–एल) (पी डब्ल्यू) की तरफ से उपस्थित थे कामरेड सत्यमूर्ति व कामरेड गौरू माधवराव

2) सी पी आई (एम–एल) सीओसी ग्रुप की तरफ से कामरेड अप्पल सूरी एवं कामरेड गंटि प्रसादम तथा कामरेड अजय (बाद में वे पी. यू. में चले गये)

3) सी पी आई (एम–एल) एस एन सिंह ग्रुप

4) एम सी सी की तरफ से मैं

5) सी पी आई (एम–एल) पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी की तरफ से कामरेड दीपक राय तथा वासू

6) सी पी आई (एम–एल) चंद्र पुल्लारेड्डी ग्रुप की तरफ से कामरेड बनर्जी

7) शांति राय ग्रुप के शांति राय

8) सी पी आई (एम–एल) वी एम ग्रुप के सुकांत तथा बैठक की

जाया गया। लंबी विमान यात्रा के बाद हम शांघाई पहुंचे। वहां हमें विख्यात शांघाई बंदरगाह में ले जाया गया। वहां जहाज से एक घंटा नदी में घूमने के दौरान बंदरगाह के जिम्मेदार कामरेड के साथ विभिन्न विषयों पर बातचीत हुई। अगले दिन चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की जहां पहली पहल कांगेस हुई थी, हमें वहां ले जाया गया। उस कांग्रेस में खुद माओ हाजिर हुए थे। टेबल के चारों और बारह कुर्सियां थीं और टेबल पर बारह कप–तश्तरियां रखी थीं। फ्रांसीसी खुफिया पुलिस आने से पहले जिस दरवाजे से प्रतिनिधिगण भाग निकले थे, वह दरवाजा भी दिखाया गया।

अगले दिन शांघाई के मेयर हमारे साथ बातचीत करने बैठे। शांघाई के विकास पर विभिन्न फेहरिस्त दिये और क्रांति में शांघाई शहर के मजदूरों की भूमिका पर गर्व भरे बयान दिए। मैंने कहा सांस्कृतिक क्रांति के समय भी तो शांघाई पहली कतार में था। नीम–राजी होते हुए मेरी इस उक्ति को उन्होंने स्वीकारा।

तिएन–सियान शहर में माओ जिस घर पर रहते थे, उसे दिखाया गया। छोटे से कमरे में केवल एक खाट लगा था।

तिएन–सियान शहर का काफी हिस्सा हमारे कलकत्ता शहर की तरह है। बहुत पुराना शहर। चीनी क्रांति के पहले दौर में यहीं मजदूर आंदोलन उठ खड़ा हुआ था। कई कोयले की खानें हैं। एक दिन शाम को हमें एक फिल्म दिखाई गयी, जहां माओ मजदूरों को लेकर मजदूर आंदोलन करते दिखाए गये थे।

कैंटन शहर में क्रांतिकारी सन याट सेन की राजधानी और निवास स्थान दिखाया गया। कैंटन के म्यूजियम में जापान विरोधी युद्ध के विभिन्न चित्रों की प्रदर्शनी है। कैंटन के जिम्मेदार कामरेड ने हमें एक फूलों का बगीचा दिखाया। यहां एक जुड़वां फूलों का पेड़ है। इसका इतिहास है, जापान विरोधी लड़ाई में एक युगल कामरेड (एक महिला एक पुरूष) को गोली मारने से पहले जापानियों ने पूछा था कि उनकी अंतिम इच्छा क्या थी। उन्होंने तब कहा था कि वे शादी करना चाहते हैं। उनकी शादी की रस्म के बाद जापानियों ने उन्हें

किए गये रिवाल्वर, पोशाक तथा माओ के लालटेन थे। इसके अलावा चीन में कई सौ साल पहले से सामरिक व्यवस्था के प्रारंभ और विकास के इतिहास चित्रों में मैजूद हैं।

बातचीत में वे हमें समझाने की कोशिश कर रहे थे कि हमारे सवालों के माध्यम से चीन में आमूल परिवर्तन और वर्ग विभाजन से उत्पन्न जिन समस्याओं की आशंका हमने व्यक्त की, वे बेबुनियाद हैं। नयी व्यवस्था के तौर पर उन्होंने जो आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा और औद्योगिक नीति अपनायी है, उस से चीन में समाजवाद और मजबूत होगा, जनता की जीवन यात्रा का स्तर और ऊपर उठेगा। पर इस नीति के चलते पहले कुछ लोग धनी होंगे, बाद में सभी लोग धनी होंगे।

बातचीत के दौरान कोई बहस उठ खड़ी होने पर जिम्मेदार कामरेड बहुत बेचैन हो गये (उद्विग्न हो गये)। बीच–बीच में गंभीर हो चुप हो जाते। हर रोज ही बातचीत के बाद हाथ मिलाते। एक दिन इतना नाराज हुए कि हाथ मिलाये बगैर ही चले गये। उनके सहकर्मी लोग काफी शर्मिंदा हुए। अगले दिन जब बातचीत के लिए आये तो बिल्कुल स्वाभाविक थे।

कुछ भी हो, उनका अनुरोध था कि दो साल बाद दुबारा आइये, तब आप लोग देखेंगे कि आप लोगों की आशंकाएं निराधार/गलत थीं।

आखिरी दिन बातचीत के बाद रात को पीकिंग के एक विशाल होटल में रात्रिभोज का इन्तजाम किया गया था। हमारे आसपास की मेजों पर सब विदेशी ही भोजन कर रहे थे। जिम्मेदार कामरेड जाते–जाते विभिन्न विषयों पर बातचीत कर रहे थे। हमारे भोज में पीकिंग के मशहूर बतखें ''पीकिंग डक'' के मांस सहित ग्यारह प्रकार के व्यंजन परोसे गये। इसके बाद शराब और फल परोसे गये। मैं शराब नहीं पीता जानकर वे जरा विस्मित हुए। कारण जानना चाहा तो बताया कि यह वस्तु हमारे समाज में प्रचलित नहीं है। आम आदमी इसे अपसंस्कृति के तौर पर देखते और इसकी आलोचना करते हैं। क्रांतिकारी लोग नीतिगत रूप से इसका वर्जन करते हैं। पर भारत में धनी लोगों के बड़े–बड़े होटलों में यह आम है। जो भी हो शराब से अच्छी आमदनी होती है।

इसके बाद हम लोगों को शांघाई, तिएन–सियान तथा कैंटन में ले

अध्यक्षता वी एम ग्रुप के कामरेड रघु ने की।

इस बैठक के दौरान ही कामरेड सत्यमूर्ति ने मुझे आगोश में ले लिया, कहा – यह तो एक क्रांतिकारी मिल गये। एमसीसी के बारे में सी पी आई (एम–एल) पी यू के कामरेडों ने कोई रिपोर्टिंग की थी, जिसके चलते एम सी सी के बारे में पी. डब्ल्यू. की दिलचस्पी बढ़ी। उसी बैठक में कामरेड सत्यमूर्ति के साथ बैठक का दिन और स्थान तय हुआ। उसी के मुताबिक 1981 के अक्टूबर महीने में कामरेड के. सी. और मैं बैंगलूरु के एक आश्रय में पहुंचे। हमारे सफर के साथी थे पी डब्ल्यू के केंद्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड प्रकाश। शेल्टर में देखरेख के लिए थे कामरेड मधु। अगले दिन बातचीत शुरू हुई। पी. डब्ल्यूं की तरफ से मूल बातचीत कामरेड सीतारामैया की तरफ से होती थी, कामरेड प्रकाश मूलतः अनुवाद का काम करते थे। निहायत ही मित्रतापूर्ण वातावरण में सात दिन तक बातचीत चली। वहां कामरेड के.सी. ने पार्टी गठन की प्रक्रिया में जो गड़बडियां हुई और हमारे मत विरोध के कारणों को विस्तार से रखा। इस के अलावा फौज और आधार इलाके तथा संग्रामी इलाके में इलाकाई आधार पर सत्ता छीनने के लिए प्रायोजित क्षेत्र चुनकर, चुनाव बहिष्कार करते हुए तथा जनता की जवाबी (वैकल्पिक) सत्ता के तौर पर क्रांतिकारी किसान कमेटी गठित करने आदि विषयों पर विस्तार से बातचीत की। कामरेड सीतारामैया ने इन सभी विषयों का समर्थन किया और कहा कि पार्टी गठन की प्रक्रिया के प्रश्न पर आपने बाहर से और हमने भीतर से संघर्ष चलाया है। इस मामले में हम एक ही तरफ (जगह पर) हैं। हमारे बीच एकता का आधार है। हमारे बीच घनिष्ठ संबंध रखते हुए एक पार्टी में एकताबद्ध होने के लिए बातचीत चलाते रहना होगा।

इस पर 1982 के फरवरी में दुबारा बैठक का दिन तय हुआ। पर वह बैठक हो नहीं पाई। उससे पहले ही कामरेड सीतारामैया अचानक गिरफ्तार हो गये। कामरेड के. सी. और कामरेड सीतारामैया के बीच में वही बैठक शायद पहली और अंतिम बैठक थी, क्योंकि 18 जुलाई 1982 को कामरेड के. सी. की मृत्यु हो गयी।

कामरेड सीतारामैया की गिरफ्तारी के बाद पी डब्ल्यू ने एक पत्र लिखकर हमें सूचित किया कि हमारी बैठक कुछ दिन के लिए स्थगित कर दी गयी है, क्योंकि नये नेतृत्व के चुनाव के लिए उन्हें कुछ दिनों का समय चाहिए।

,e lh lh d lLFkkid dkejM veY; lu ¼ekLVkj ek'kkb½ vkj dkejM dUgkb pkVth ¼d-lh-½ dh vle; eR;

1969 के दिसंबर महीने में एम सी सी के एक संस्थापक नेता कामरेड चंद्रशेखर दास (दादू) को हमने असमय खो दिया था। सी.पी.आई. के जोतदार के गुण्डों ने उनकी नृशंस हत्या की थी।

इसके बाद 1981 की 23 मार्च को कामरेड अमूल्य सेन बीमारी से भुगतते हुए अंतिम यात्रा पर निकल पड़े और आखिरी सांसें ली। यह हमारे लिए बहुत ही नुकसानदेह और दुखःद घटना थी। उन्होंने शुरू में अनुशीलन पार्टी तथा बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदीर्घ काम के अनुभव के जरिये हमें समृद्ध किया।

कामरेड अमूल्य सेन की मृत्यु के मात्र एक वर्ष और चार महीने के भीतर ही कामरेड कन्हाई चाटर्जी ने भी किडनी (गुर्दों) की बीमारी से बुरी तरह ग्रस्त होकर 18 जुलाई 1982 के दिन मात्र 49 वर्ष की आयु में ही अंतिम सांस ली।

हमने ऐसा सोचा था कि वे और भी दीर्घकाल तक रहकर हमारा और भारत की क्रांति का नेतृत्व करेंगे। कामरेड अमूल्य सेन की मृत्यु अपूरणीय होने पर भी कामरेड कन्हाई चाटर्जी की मृत्यु से हमपर से पेड़ की छाया ही मानो छिन गयी। उनकी राजनीतिक छत्रछाया में हम लोग बहुत सुरक्षित महसूस करते थे। कामरेड कन्हाई (के. सी.) की मृत्यु, खासकर सिर्फ एम. सी. सी. के लिए ही नहीं बल्कि समूचे भारतीय क्रांति के लिए भी अपूरणीय क्षति थी। उनका सैद्धांतिक तथा राजनीतिक जीवन, उनकी नेतृत्व की प्रतिभा, व्यावहारिक अनुभव, सृजन क्षमता, दूरदृष्टि, सादी जीवनशैली, तकलीफ सहने की क्षमता, अपरिसीम परिश्रम करने की क्षमता, भारतीय क्रांति के नेतृत्व में एक विरल

चीन की पार्टी की ओर से बातचीत में नेतृत्व दक्षिण एशिया के पार्टी के प्रभारी कामरेड चेन उन ने की।

शुरूआती बातचीत के बाद उन लोगों ने मुझे 'गैंग–ऑफ–फोर' के बारे में एक अंग्रेजी किताब देकर पढ़ने के लिए कहा। किताब लौटाते हुए मैंने कहा यह किताब मैं कलकत्ता में पढ़ चुका हूँ। यहां जो कहा गया है, उससे मैं संतुष्ट नहीं हूँ। वे लोग थोड़ा गंभीर हो गए और आपस में कुछ बातचीत कर लिया। कुछ भी हो, पहले दिन बातचीत खास नहीं जमी। इसके बाद दो दिनों तक बातचीत बन्द रही। इन दो दिनों में हमें पीकिंग घुमाकर दिखाया गया। जिन में तिएन–आन–मेन स्क्वैयर, ग्रेट हाल ऑफ द पीपुल, माओ की समाधि, पीकिंग के चिंग राजवंश का राज महल आदि।

ऐतिहासिक तिएन–आन–मेन स्क्वैयर तथा ग्रेट हॉल ऑफ द पीपुल देख मन भर गया। इन सब के बारे में कितने लेख पढ़े हैं और बातें सुनी हैं। अंत में महान माओ को देखा। तिएन–आन–मेन स्क्वैयर में लंबी कतार लगी हुई है। सभी निःशब्द लोग एक गेट से प्रवेश कर रहे हैं और दूसरे गेट से बाहर आ रहे हैं। माओ को एक शीशे के बक्से में रखा गया है। सारा शरीर लाल झंडे से ढंका हुआ है। सिर्फ चेहरा दिख रहा है। अंदर घुसकर मैं भीतर ही भीतर बहुत ही रोमांचित हो रहा था। ज्यादा समय तक रुकना मुनासिब न था। अपार जनता का सैलाब था। माओ के प्रति उस मुल्क की जनता के अपार श्रद्धा का एहसास हुआ। इसके बाद चिंग वंश की राजधानी व मुल्क में उन लोगों का शोषण और विद्रोहियों को बेरहमी से हत्या करने का नमूना देखा। राजा का सिंहासन पूरी तरह सोने से मढ़ा हुआ है। यहां तक भोजन की थाली–चम्मच तक सब सोने के बने हैं। दो कमरों में दो सौ मन सोने के गोले रखे हुए हैं। उनकी सबसे बेरहमी के नमूने के तौर पर हमें दिखाया गया कि राजप्रसाद से जुड़े बगीचे में जो सिमेंट से पक्के बने हैं। वहां तीन–तीन हाथ की दूरी पर सजी थी, करीब 300 के आसपास बलिवेदियां। राजा–रानी के मंच पर बैठने के बाद बदकिस्मत विद्रोहियों की एक साथ बलि दी जाती थी।

दो दिन बाद से सात दिन तक लगातार सुबह नौ बजे से दोपहर एक बजे तक बातचीत होती थी। शाम को किसी प्रदर्शनी, म्यूजियम या माओ पर कोई फिल्म दिखायी जाती थी। म्यूजियम में माओ और च्यू–तेह के इस्तेमाल

1. सांस्कृतिक क्रांति के कारण और उसके बाद की परिस्थिति।
2. तथाकथित ''गैंग ऑफ फोर'' की गिरफ्तारियों के कारण?
3. चीन में सामूहिक खेती को तोड़ कर खेती निजी मिल्कियत के मातहत लायी जा रही है, उससे ग्रामांचल में नये तौर पर वर्ग विभाजन तथा वर्गीय द्वंद्व दिखाई देगा या नहीं?
4. मजदूरों को कारखाने के परिचालन के उत्तदायित्व से हटा कर जहां वर्तमान में मैनेजर प्रणाली लागू की जा रही है, उससे मजदूरों के अधिकार तथा प्राधिकार कम होगा या नहीं?
5. परिकल्पित इलाकों में जो विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) बने हैं, उसमें चीन की पूंजी और संचालन पर विदेशियों का प्रबंधन होगा, कल उन तमाम उद्योगों में काम कर रहे मजदूर गुलाम की तरह माने जाएगें या नहीं। इसके अलावा ये इलाके पूरी तरह विदेशी संस्कृति और विलासिता से सिक्त होने के चलते चीनी जनता का सांस्कृतिक स्तर और नैतिकता का पतन होगा या नहीं?
6. दुनिया के क्रांतिकारियों की आलोचनाओं के बारे में आप लोगों का क्या विचार है?
7. भारत में नागाओं के आंदोलन को आप लोग जो मदद कर रहे थे, उसे जारी रखेंगे या नहीं?
8. छोटे व्यापारों को व्यक्तिगत मिल्कियत के अंतर्गत ले आने के फलस्वरूप वहां पूंजीवादी चिंतन तथा भ्रष्टाचार दिखाई देगा या नहीं?
9. शिक्षा व्यवस्था में जो बदलाव की बात की जा रही है, उसके फलस्वरूप मजदूर किसानों के बच्चे जो सुविधाएं पा रहे थे, उन्हें खारिज करने से धनी बच्चों को ही वे अवसर बढ़ेंगे या नहीं?
10. माओ–त्से–तुङ विचारधारा को आप लोग अपने विचारधारात्मक और पार्टी के सैद्धांतिक आधार के तौर पर जारी रखेंगे या नहीं?

हम समझ गये कि हमारे ये सवाल उनके मर्जी माफिक नहीं बने हैं। कुछ भी हो दूसरे दिन शाम से हमारी मूल चर्चा शुरू हुई।

मिसाल है। उनके मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए सी पी आई (एम–एल) के लगभग सभी ग्रुपों ने हमें शोक संदेश भेजा। हालांकि क्रांतिकारी शिविर में कुछ लोगों ने सोचा था कि एम सी सी संगठन ही बिखर जाएगा। लेकिन हमने जो उनके छात्र थे, उनके नेतृत्व में इस अंश को सभी पार्टी सदस्यों में जनता के बीच जड़ें जमा कर संघर्ष और संगठन को आगे ही बढ़ाया। जनता और पार्टी सदस्यों की आस्था हासिल कर तथा अनुभव की रोशनी में हम लोगों ने यह तय कर लिया कि एम.सी.सी. के नेतृत्व में पार्टी और संघर्ष को मजबूती से आगे ले जाना होगा। संगठन के अतीत के संग्रामों के मूल्यांकन के आधार पर भारतीय क्रांति की रणनीति तथा कार्यनीति की लाइन को वास्तव में प्रयुक्त करते हुए एक ओर जनफौज और आधार इलाकों के काम को आगे ले जाना और दूसरी ओर इसी के समानांतर क्रांतिकारियों को एकताबद्ध करने के काम को बिना थके चलाते जाना होगा।

जरूरी बैठक बुलायी गयी। नयी केंद्रीय कमेटी गठित की गयी और सर्वसम्मति से मुझे अगस्त 82 को एम सी सी का महासचिव चुना गया। नयी केंद्रीय कमेटी की तरफ से एक लिखित बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि नेतृत्व द्वारा प्रदर्शित लाइन और काम की धारा को हम आगे ले जाएंगे। तमाम सदस्यों और संगठन को आश्वस्त किया और उन्हें एकजुट रहने का आह्वान किया गया। पार्टी के तमाम सदस्यों, छापामार टुकड़ियाँ, जन संगठन और समर्थक तथा सहानुभतिशीलों ने नये नेतृत्व का समर्थन करते हुए क्रांतिकारी अभिनन्दन किया और संग्राम तथा संगठन को आगे ले जाने की शपथ ली।

केंद्रीय कमेटी के सचिव के तौर पर मेरे ऊपर विराट उत्तरदायित्व आ पड़ा। कमेटी के सहयोगी साथियों ने इस समय मुझे काफी हिम्मत बढ़ाया तथा सहयोग किया। कभी सर्वोच्च नेतृत्व का यह दायित्व निभाना पड़ेगा, ऐसा नहीं सोचा था। एक ओर संगठन की ऊँची कमेटियों के साथ जरूरत के मुताबिक बैठक करना, एकता, आलोचना का मुल्य, उत्तरदायित्व लेकर काम करना, असम, त्रिपुरा तथा ओड़िशा में संगठन बनाना तथा उसे संचालित करना। केंद्रीय कमेटी का मुखपत्र 'दक्षिण देश' का प्रकाशन का उत्तरदायित्व लेने के अलावा भी पश्चिम बंगाल में मेरे काम के इलाकों के तौर पर हावड़ा, हुगली,

पूर्व मेदिनीपुर जिले के दायित्व में रहना तथा कलकत्ता शहर के मजदूरों में संगठन बनाने के काम का दायित्व लेना पड़ा।

केंद्रीय कमेटी का सचिव चुने जाने से पहले मैं पश्चिम बंगाल के प्रादेशिक कमेटी के सचिव के तौर पर काम करता रहा था। जहाँ प्रादेशिक कमेटी के संचालन के साथ–साथ कमेटी का मुखपत्र ''दक्षिण देश'' के प्रकाशन का दायित्व था। उस समय और एक पहलकदमी मैंने ली। उस समय विभिन्न ग्रुपों के साथ हमारी एकता पर बातचीत चल रही थी। लिहाजा इन तमाम समान सोचवाले संगठनों के साथ एकताबद्ध होने का कार्यक्रम चलाने के लिए ''जनवादी अधिकार स्थापना कमेटी'' नाम से एक संगठन बनाया गया। उस संगठन में जिन लोगों ने हिस्सा लिया, वे लोग थे –

1. सी पी आई (एम–एल) पश्चिम बंग कमेटी दीपक राय /वासु ग्रुप
2. सी पी आई (एम–एल) प्रद्योत घोष (पी.जी.) ग्रुप
3. सी ओ सी सी पी आई (एम–एल) पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी
4. यू सी सी आर आई (एम–एल) पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी
5. ट्रेड यूनियन नेता शान्ति राय का मजदूर संगठन

विभिन्न मुद्दों पर एकताबद्ध होकर कुछ कार्यक्रम के अलावा भी इस मोर्चे की तरफ से एक जन पत्रिका 'देशेर डाक' प्रकाशित किया गया। दो साल के लगभग चलने के बाद दूसरे ग्रुपों की सांगठनिक कमजोरी के चलते इस मोर्चे के काम को आगे नहीं बढ़ाया जा सका।

बाद में एम.सी.सी. की तरफ से गणप्रतिरोध का एक मंच खोलने की आवश्यकता महसूस हुई। गणप्रतिरोध मंच जनसंगठन के माध्यम से चुनाव बहिष्कार करना तथा सशस्त्र संग्राम पर राज्यशक्ति के हमले के विरुद्ध प्रचार करने के साथ–साथ स्थानीय मुद्दों को लेकर जनता को एकजुट करने का शहर तथा देहाती इलाकों में कार्यक्रम इसे दिया जाता। पत्र पत्रिका के तौर पर पहले 'इश्तेहार' प्रकाशित होता, बाद में मुक्तिकामी प्रकाशित होता था। प्रादेशिक पार्टी पत्रिका मुखपत्र के तौर पर दक्षिण देश प्रकाशित किया जाता। बाद में दक्षिण देश को केंद्रीय कमेटी की बांग्ला मुखपत्र के तौर पर प्रकाशित किया जाने लगा। केंद्रीय कमेटी के हिंदी मुखपत्र के तौर पर 'लाल पताका' का

कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में हमारा मूल्यांकन भी भेजा। हालांकि हम जानते थे कि इसे वे कतई कोई महत्व नहीं देंगे। मगर दस्तावेज मिलने के बाद भी वे हमें अपना दोस्त संगठन के तौर पर ही देखते हैं ऐसा सूचित करते हुए चीन आने का न्योता दिया। उनका कहना था कि चीन में जाकर प्रत्यक्ष वास्तविक परिस्थिति का अवलोकन करने के बाद और नेतृत्व के साथ बातचीत के बाद कोई मूल्यांकन करें। यातायात सहित समूचे खर्च का उत्तरदायित्व उनका रहेगा।

उनका आमंत्रण मिलने के बाद केंद्रीय कमेटी की बैठक में हम इस नतीजे पर पहुंचे कि चीनी पार्टी के दस्तावेज पढ़कर हम जिस मूल्यांकन पर पहुंचे हैं, उसमें कोई बदलाव नहीं कर रहे हैं। पर किस कारण से हम उपरोक्त मूल्यांकन पर पहुंचे, सीधे–सीधे उनके समक्ष रखने के अवसर का इस्तेमाल हमें करना चाहिए। दूसरे, वहां जाने पर इसका अंदाज किया जा सकेगा कि चीन की पार्टी में माओ के अनुयायियों का अब भी अस्तित्व है या नहीं तथा उनके प्रति श्रद्धा है या नहीं। फलस्वरूप किसी भी प्रकार के मोह न रख कर ही चीन जाने का फैसला हुआ और केंद्रीय कमेटी ने सर्वसम्मति से मुझे ही प्रतिनिधि के तौर पर निर्वाचित किया।

इसी के मुताबिक पासपोर्ट और अन्य विषयों की व्यवस्था कर मैंने दिसंबर 1983 में चीन की यात्रा की। साथ में मेरे एक सहयोगी के तौर पर एक अध्यापक कामरेड भी मेरे साथ गये। बाद में घूम फिर कर हम 23 दिसंबर को पीकिंग पहुंचे, वहां पहले ही से परिचित चीनी दूतावास के एक कामरेड और उनके साथ कई और लोग हवाई अड्डे पर हमारा स्वागत करने के लिए उपस्थित थे। बाद में करीब डेढ़ घंटा मोटर–कार की यात्रा के बाद हमें पीकिंग के अतिथिगृह में ले जाया गया। प्रचंड ठंड के लिए हम जो पोशाक (गर्म कोट तथा पैंट) ले गये थे, उसके ऊपर पहनने के लिए हमें गर्म ओवरकोट और टोपियां दी गयी और कहा गया कि इन्हें कभी भी न उतारियेगा।

अगले दिन हम किन–किन विषयों पर बातचीत करना चाहते हैं, इस बाबत एक लिखित नोट उन्हें सौंपा। उसमें हमने दस बिंदुओ में कुल 23 सवाल रखे थे :–

मामला है, घोषणा करने में कुछ देर हुई है, इस में शक नहीं। पर वह मोह के चलते नहीं। नेतृत्वकारी पंक्तियों में इस पर मूल्यांकन पहले से ही थी। पर केवल औपचारिक तौर पर इसकी घोषणा में देर हुई। असल में उस समय हम लोग दो नेताओं के निधन से नई परिस्थिति और लड़ाई के मैदान में अत्यधिक व्यस्त हो गये (इस तरह का उत्तरदायित्व रामचंद्रन को नहीं था), उस समय केंद्रीय कमेटी की बैठक बुलाना तत्काल संभव नहीं था और जल्दबाजी में मूल्यांकन करना अगर कोई बहादुरी है, (रामचंद्रन बहादुरी दिखायी) पर संघर्ष के मैदान में जनता और पार्टी केवल बहादुरी का खिताब पाने के लिए काम नहीं करती, पूरी पार्टी को शिक्षित करने का बड़ा उत्तरदायित्व उन्हें पूरी करनी पड़ती है।

ejh phu ;k=k

इतिहास यह है कि 1971 में ही हमारे संगठन के साथ चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का संपर्क कायम हुआ। हमने 1969 में प्रकाशित ''भारतीय क्रांति की रणनीति और रणकौशल'' का दस्तावेज हमारे खास स्रोतों के माध्यम से चीन के नेतृत्व को भेजा। कई महीने बाद उनका जवाब आया कि दस्तावेज मोटे तौर पर ठीक ही है और बिरादराना संगठन के तौर पर उन्होंने एम सी सी से संबंध कायम करने का प्रस्ताव भेजा। इसके बाद कांकसा के किसान संग्राम की एक रिपोर्ट हमनें उन्हें भेजी थी, साथ ही वहां ''इलाका विस्तार'' की समस्या का उल्लेख भी किया था। उन्होंने कहा कि जिसे समस्या के तौर पर चित्रित किया है, वह ठीक ही था। छापामार युद्ध चलाने के लिए विस्तृत इलाके का होना अपरिहार्य है। साथ ही हमें कामरेड माओ की रचनावली का गहराई से अध्ययन करने की सलाह भी दी।

कुछ भी हो, तभी से चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ एक दोस्ताना संबंध बना। नियमित दस्तावेज भेजे जाने लगे। चीन की पार्टी उस समय कामरेड के. सी. तथा अमूल्य सेन की सेहत की खोज खबर लेती।

बीच में संपर्क कुछ शिथिल हुआ था। बाद में 1983 में चीन की

प्रकाशन किया जाता। एस ए सी के मुखपत्र के तौर पर 'लाल चिंगारी' प्रकाशित होती थी।

केंद्रीय कमेटी का उत्तरदायित्व पालन करते समय विदेशी पार्टियों के कार्यकलाप के बारे में अनुसंधान और मूल्यांकन की जरूरत महसूस हुई। खासकर कामरेड माओ के अवसान के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की गति–प्रकृति का मूल्यांकन जरूरी हो गया। चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के बाद 1969 में संपन्न चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की 9 वीं कांग्रेस में पारित राजनीतिक रिपोर्ट को हमने मजबूती से समर्थन दिया था, जिसमें 'युग – स्वभाव' पर कहा गया था – वर्तमान युग है साम्राज्यवाद के अंतिम पतन का तथा समाजवाद के विश्वव्यापी विजय हासिल करने का युग, इस मूल्यांकन को हमने पूरी दृढ़ता के साथ उठाया। 9वीं कांग्रेस की इस रिपोर्ट को उस समय की तमाम (एम–एल) ग्रुपों ने मान लिया था।

1973 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की 10वीं कांग्रेस की रिपोर्ट के तरफ समस्या दिखलाई दी। उस पार्टी की 10वीं कांग्रेस की रिपोर्ट ने भले ही 9वीं कांग्रेस के युग की व्याख्या (मूल्यांकन) को गलत न बतलाया हो, पर 10वीं कांग्रेस की रिपोर्ट में कहा गया कि युग में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वर्तमान युग कामरेड लेनिन द्वारा वर्णित साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों का युग है।

और इसी सवाल पर क्रांतिकारी खेमे में तरह–तरह के भ्रम फैलते रहे। बहुत लोग कहते रहे कि 10वीं कांग्रेस की रिपोर्ट में 9वीं कांग्रेस की रिपोर्ट में उल्लिखित 'युग' के सवाल पर स्थापना को गलत मानकर 10वीं कांग्रेस में उसे सुधार दिया गया है। बहुत से विप्लवी यह कहते रहे कि सी पी आई (एम–एल) पार्टी में ''अंतिम पतन का युग'' वाले मूल्यांकन को मान लेने के चलते ही द्रुत क्रांति पूरी करने की ''वाम दुस्साहसवादी'' लाइन अपनाई और इसी के चलते तरह–तरह के विनाश/पराजय का सामना करना पड़ा।

हम इस वक्तव्य से कभी सहमत नहीं थे। इसका असल में उनकी पेटी बुर्जुआ चिंतन तथा कार्यकलापों की गलतियों को सही तौर पर चिह्नित न करके, इससे बचते हुए उसे विपर्यय (विनाश) के कारण के तौर पर 9वीं कांग्रेस के 'युग' के मूल्यांकन को पेश कर वे अपने पक्ष का समर्थन करने की नाकाम

कोशिश कर रहे हैं। यह अनैतिक तथा मार्क्सवाद विरोधी काम है।

अगर यही होता तो एम सी सी तो बराबर ही 9वीं कांग्रेस के 'युग' के मूल्यांकन को दृढ़ता के साथ समर्थन करती आयी है। पर क्रांतिकारी शिविर में कोई भी यह नहीं कह सका है कि 9वीं कांग्रेस में पारित 'युग' की समझ के समर्थन के कारण ही एम सी सी वाम दुस्साहसवाद का शिकार हुआ है।

असल में 10वीं कांग्रेस के 'युग' के मूल्यांकन को हमने कभी 9वीं कांग्रेस की रिपोर्ट से जुदा और नये मूल्यांकन के तौर पर नहीं माना। हमारा वक्तव्य था कि वह 9 वीं कांग्रेस की रिपोर्ट की स्थापना का ही धारावाहिक रूप है। यह बात अस्वीकार करने की कोई वजह नहीं है कि लेनिनवाद का युग यानी साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों का युग अब भी जारी है। लेनिनवाद के युग में कोई गुणात्मक–परिवर्तन नहीं आया। पर साथ ही यह भी ठीक है कि युग के अंतर्विरोध आज उसी जगह स्थिर खड़ा नहीं है। खासकर दूसरे विश्वयुद्ध और चीनी क्रांति के बाद तो वह और भी आगे जाकर एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिका में मुल्क–दर–मुल्क में होते रहे साम्राज्यवाद विरोधी संघर्षों ने यह दिखला दिया है कि साम्राज्यवाद को अब दम लेने का मौका भी नहीं मिल रहा। आज साम्राज्यवाद का संकट है – स्थायी, धारावाहिक और क्रमवर्धमान संकट। तीसरे विश्व के देश ही हैं क्रांति के तूफानी केंद्र (Strom Centres), फलस्वरूप लेनिनवाद के युग के अंतर्विरोध भी धारावाहिक विकास के परिणामस्वरूप वर्तमान युग है – साम्राज्यवाद के ''अंतिम पतन का युग'' और साम्राज्यवाद के पतन के बाद नयी समाजव्यवस्था के तौर पर समाजवाद के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता। उस अर्थ में ''दुनियाभर में समाजवाद के विजय का युग'' यह मूल्यांकन सही है।

चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के लक्षण तब नजर आये, जब पता चला कि सांस्कृतिक क्रांति के चार अग्रणी नेता कामरेड च्यांग–चुन चियावो (कामरेड माओ के दामाद), वांगहुङ वेन (शंघाई के मजदूर), याओ वेन (सैद्धांतिक नेता), तथा मैडम चियांग चिंग (माओ की अर्धांगिनी) को कुख्यात ''गैंग ऑफ फोर'' (चार का गिरोह) का नाम देकर अचानक गिरफ्तार किया गया। चीन के नये नेतृत्व की तरफ से चीन की महान सांस्कृतिक क्रांति पर यही पहली चोट थी। बाद में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की 11वीं कांग्रेस में जो

रिपोर्ट पेश की गयी, उसमें देखा गया कि सांस्कृतिक क्रांति का समर्थन किये जाने के बावजूद आगामी दिनों में चीन की समाज व्यवस्था को आमूलचूल परिवर्तित करने का एक संकेत इसमें है। समाजवाद से वापस पूंजीवादी राह पर लौट आने के मध्यमवर्ती मार्ग के तौर पर इस दस्तावेज का इस्तेमाल किया गया है।

बाद में 11वीं कांग्रेस की 7वीं प्लीनरी सत्र (सेशन) में पूरी तरह सांस्कृतिक क्रांति की विभिन्न त्रुटियों का उल्लेख कर उसकी निंदा की गयी तथा पूंजीवाद के पक्ष की लाइन का समर्थन करने के साथ–साथ डेंग–शियाओं पिंग को पुनर्वासित कर सत्ता में लाने का संकेत दिया गया। यह अवश्य ही याद रखना होगा कि 1976 के एक ही साल के दौरान चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के पहली कतार के नेता कामरेड माओ–त्से–तुंङ (9 सिंतबर), कामरेड चाऊ एन लाई (जनवरी) एवं कामरेड च्यू तेह (जुलाई) के निधन के बाद नेतृत्व का गहरा संकट नजर आया। फलस्वरूप पार्टी में छिपे हुए पूंजीवाद के राही तथा सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के माध्यम से जो पूरी तरह उखाड़ नहीं दिये जा सके, वे सर उठाने लगे।

1981 वर्ष तक चीन में पूंजीवाद के पुनरुत्थान की प्रक्रिया लगभग पूरी हो गयी। हमलोगों ने एम सी सी की तरफ से भारत में समान सोच वाले संगठनों से उनकी राय जानने की कोशिश की। साथ ही सांगठनिक तौर पर इस मामले में अंतिम फैसला लेने के लिए आपस में विभिन्न दस्तावेज इकट्ठे कर सामूहिक रूप से अध्ययन और चर्चा चलाते रहे। 1983 के मार्च महीने में (कामरेड के. सी. की मृत्यु के बाद) केंद्रीय कमेटी की एक बैठक के बाद हम निश्चित नतीजे पर पहुंचे कि चीन में अब और सर्वहारा के हाथों में राजसत्ता नहीं है और अब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का रंग बदल गया है।

यहां उल्लेखनीय है कि हमारे इस फैसले के जाहिर होने के बाद केरल के के (एन) रामचंद्रन के नेतृत्ववाली सी पी आई एम–एल ग्रुप ने हमारी आलोचना करते हुए कहा कि एम सी सी ने इस विषय के मूल्यांकन में बहुत देर की है क्योंकि उसके भीतर चीनी पार्टी के प्रति मोह काम कर रहा था और दावा किया कि उन्हींने सर्वप्रथम चीन की पार्टी के कलइया खाने (पलट जाने) को ताड़ पाया था, यह उनके लिए गर्व का विषय है।

और कार्यकर्ताओं के माध्यम से जो अपना प्रभाव विस्तार करते आये हैं, पार्टी एकताबद्ध हो जाने पर उनका वह वर्चस्व खतरे में पड़ जायगा या खत्म हो जाएगा।

उन्हें और भी डर था कि एकताबद्ध हो जाने पर उनके कार्यक्षेत्र बदले जा सकते हैं और दूसरे राज्य या जिले में काम का उत्तरदायित्व लेने की नौबत आ सकती है। मानसिक तौर पर वे अपने—अपने प्रभाव के इलाके छोड़ने को तैयार नहीं थे। दूसरे राज्य में जिम्मेदारी लेनी पड़ सकती है, इस भय से बादल ने तो जान— बूझकर हिंदी नहीं सीखी। भरत कहने लगा कि एकता के बाद पी.डब्ल्यू. के फलां—फलां कामरेड के साथ एक कमेटी में काम करना असंभव है। उसका कहना था कि एम. सी. सी. के तौर पर शुरू से हम अकेले काम करते आये हैं। हमारे काम की एक शैली और एक पद्धति रही है, जिसमें जनता को हम शिक्षित करते आये हैं। एकता होने पर काफी ''बाढ़ का पानी'' (अवांछित लोग) संगठन में प्रवेश कर जाएंगे। परिणामस्वरूप सिर्फ संगठन कमजोर ही नहीं होगा, बल्कि उसका फायदा दुश्मन भी उठाएगा। उसका सवाल था कि क्या केंद्रीय नेतृत्व एम.सी.सी. की लाइन को गलत मानने लगा है? इसी लाइन का इस्तेमाल करते हुए ही हमने संगठन और आंदोलन (संग्राम) को विकास के इस स्तर पर लाया है। अब क्यों हम इस लाइन पर आस्था नहीं रख पा रहे हैं।

बादल ने सीधे—सीधे एकता की मुखालिफत न करते हुए बेमिसाल चालाकी का प्रदर्शन किया। उसने माओवाद के बारे में सवाल उठाना शुरू किया। आश्चर्य इस बात का है कि एम.सी.सी. का जन्म ही माओवाद से जुड़ा हुआ है, बादल 1973 से एम सी सी से जुड़ा रहा है। कामरेड के. सी. के जीवनकाल में या इसके बाद भी उसने पहले कभी माओवाद को लेकर सवाल नहीं उठाया। अब एकता की वास्तविक जमीन पर खड़ा होकर पी.डब्ल्यू. के साथ वह मानसिक तौर पर एकताबद्ध होने को तैयार नहीं था। माओवाद के बारे में उसका कहना था कि माओवाद मान लेना कामरेड स्तालिन को नकारना या उन्हें छोटा करने के बराबर होगा। स्तालिन एक अर्थ में माओ के शिक्षक रहे। मार्क्सवाद—लेनिनवाद के विकास में स्तालिन की देन है, उसे कतराकर सिर्फ माओवाद कहना ठीक नहीं, ऐसे में माओ विचारधारा कहना ही ठीक

सर्वसम्मति से फैसला किया गया कि चीन की पार्टी में सर्वहारा का नेतृत्व नहीं है। पार्टी और राजसत्ता दोनों पर पूंजीवाद के राहियों ने कब्जा कर लिया है और महान चीन को अधःपतित कर उन्होंने पूंजीवाद वापस लाया है।

हमारे इस निर्णय से चीन के नेताओं को अवगत कर दिया गया और यह भी सूचित कर दिया गया कि हम उनसे हर तरह के संपर्क तोड़ रहे हैं।

lh ih vkbl ¼,e&,y½¼ih MCY;½ ls /kkjkokfgd ckrphr 'kq: vkj feyu tqy dkedkt dk nkj

कामरेड सीतारामैया की गिरफ्तारी और कामरेड के.सी. की मृत्यु के बाद दोबारा एकता के विषय पर सी पी आई (एम—एल)(पी डब्ल्यू) से बातचीत शुरू हुई। एम सी सी की तरफ से मैंने और पी डब्ल्यू की तरफ से कामरेड सत्यमूर्ति ने इस बातचीत में नेतृत्व दिया।

असल में बातचीत के इन दौरों को एक अंतर्वर्तीकालीन यानी बीच के समय की प्रक्रिया के तौर पर देखा जाता था। क्योंकि सीतारामैया की अनुपस्थिति में महत्वपूर्ण विषयों पर पूरा निर्णय लेने के मामले में सत्यमूर्ति को दिक्कत थी। पर कई विषयों में आम बातचीत में हमलोग सहमत हुए। खासकर सांस्कृतिक फ्रंट में मिलजुल कर काम करने के बारे में सहमति हुई। इसके कुछ महीनों बाद कामरेड सीतारमैया को पी डब्ल्यू के कामरेडों ने एक साहसी कार्रवाई में बंदी जीवन से छुड़ा लाया था। कुछ माह बाद मेरी कामरेड सीतारामैया से बातचीत हुई। कई विषयों पर हम सहमत हुए। पर सीतारामैया हमारे मतभेद के विषय—वस्तुओं को उतना महत्व नहीं देते थे। बगैर वितर्क के ही या थोड़ी बहुत बहस के बाद हमारी स्थापनाओं को वे आसानी से मान लेते थे। हम उनकी इस मानसिकता से कुछ ज्यादा संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था कि मतभेद बहुत हैं और रहेंगे। अभी इन्हें ज्यादा महत्व देने की जरूरत नहीं। पहले हम एकजुट हों, फिर पार्टी में इन्हें सुलझा लिया जायेगा।

एक ऐसा समय आया जब हम पार्टी का नाम, केंद्रीय कमेटी की सदस्य संख्या, केंद्रीय अंग्रेजी तथा हिंदी मुखपत्रों के नाम, नयी पार्टी का मुख्यालय कहां होगा आदि तमाम विषयों पर सहमत हुए ताकि एक एकताबद्ध पार्टी खड़ी हो। इस

बातचीत के समय एकताबद्ध कार्यक्रम पर भी चर्चा हुई और कुछ कार्यक्रम लिये गये। इनमें उल्लेखनीय है, 1985 में एआईएलआरसी के साथ संयुक्त कार्यक्रम, हमारे काम के इलाके धनबाद में एआईएलआरसी के दूसरे सम्मेलन में हमने हिस्सा लिया। सम्मेलन की तमाम जिम्मेदारी तथा तत्वावधान में हमारे सांस्कृतिक फ्रंट के नेता और कार्यकर्ता रहे। भारत के विभिन्न राज्यों से सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में हिस्सा लिया।

आंध्र प्रदेश के 'विरसम्' के अलावा भी पश्चिम बंगाल, बिहार आदि की सांस्कृतिक टीमों ने रात भर अपना अपना कार्यक्रम पेश किया। दूसरे दिन सम्मेलन के बाद विशाल जुलूस ने धनबाद शहर की परिक्रमा की। दोनों संगठनों में इस कार्यक्रम के जरिये और भी ज्यादा बिरादराना संबंध विकसित हुआ।

इसके बाद 1988 में एआईएलआरसी का तीसरा सम्मेलन भी हमारे तत्वावधान में कलकत्ता में हुआ। विशाल मोन्यूमेंट मैदान में विशाल मंच पर विभिन्न राज्यों की जनता के सामने आंध्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा आदि राज्यों से आये संस्कृतिकर्मियों ने अपना–अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के एक दिन पहले कलकत्ता के कॉलेज स्ट्रीट से विशाल रंगारंग जुलूस मैदान में आया। उस जुलूस में विशेष आकर्षण था झारखंड के ''झारखंड एभेन'' के कर्मियों का ''युद्धनृत्य''। बहुत सज–धज कर आदिवासी युवक–युवती सांस्कृतिक कार्यकर्ता ''युद्धनृत्य'' करते हुए मैदान में पहुंचे। धर्मतला के दोनों ओर सड़कों के किनारे से मजमा लगाकर कलकत्ता की जनता इस सांस्कृतिक कार्यक्रम को निहार रही थी।

मैदान में सारी रात कार्यक्रम करने के बाद कार्यकर्ता सम्मेलन सभागार में पहुंचे, एम सी सी की तरफ से मैदान में मौजूद हजारों–हजार जनता को खाना और पानी मुहैया कराया गया। इन कार्यक्रमों के दौरान ही 1988 में एकता पर बातचीत आगे बढ़ाने के लिए कोंडापल्ली सीतारामैया कलकत्ता पहुंचे। उन्होंने एकबार इच्छा जताई थी कि 1948 के बाद कभी कलकत्ता नहीं गये थे और एक बार कलकत्ता जाना चाहते हैं। उनकी इस इच्छा का सम्मान करते हुए हमने यह बैठक कलकत्ता में ही आयोजित की थी।

इसी के चलते सी पी आई (एम–एल) में जो ''माओवाद'' का समर्थन कर रहे हैं, वो तमाम संगठन जैसे सी पी आई (एम–एल) नक्सलबाड़ी और पंजाब के करम सिंह के नेतृत्वाधीन आरसीसीआई (एम–एल) के साथ एकता की बातचीत की पहल की गयी। इसी तरह करम सिंह के संगठन के साथ बातचीत क्रमशः परिणति की दिशा में आगे बढ़ने लगी। आखिरकार करम सिंह एम सी सी के साथ एकजुट हुए और उनके प्रस्ताव के मुताबिक संगठन का नाम एम सी सी के बजाए एम सी सी आई रखा गया। इसी के साथ करम सिंह को केंद्रीय कमेटी में शामिल किया गया।

बाद में सी पी आई (एम–एल) सेकेंड सी सी और पंजाब के आरसीसीआई (एम–एल–एम) के साथ एकता पर बातचीत शुरू हुई और चन्द बैठकों के बाद वे भी एम सी सी आई संगठन में एकताबद्ध हुए।

,e lh lh e ,drk & fojk/kh rkdr dk mHkjuk rFkk mldk urhtk

इतिहास के तौर पर 1969 में एम सी सी संगठन के जन्म के बाद संगठन में विभिन्न सवालों पर वितर्क होने पर भी कभी कोई उपदल (Faction) या ग्रुप नहीं उभरा।

मगर बिहार में पी.डब्ल्यू. के साथ संघर्ष का वातावरण नियंत्रण में ला कर फिर से दानों संगठनों के केंद्रीय स्तर पर गर्माहट का संचार करने और एकता की बातचीत दोबारा शुरू करने की पहल करने के पश्चात् संगठन के दो केंद्रीय नेता बिहार के गया, औरंगाबाद, पलामू जिलों के प्रभारी कामरेड भरत और पश्चिम बंगाल की राज्य कमेटी के सचिव बादल एकता के मामले में अलग मत पालते रहे। हालांकि उन्होंने बहुसंख्यकों की राय को जुबानी तौर पर मान लिया। केंद्रीय कमेटी के फैसले के मुताबिक हमने पी.डब्ल्यू. के नेतृत्व को दोबारा बातचीत शुरू करने का न्यौता दिया। लेकिन भरत तथा बादल के एकता विरोधी विचारों ने हमें विस्मित किया। बाद में जब हमने गहनता से उनकी एकता विरोधी सिद्धांत का अध्ययन किया, तो सामने आया कि इलाके में वे लोग नेतृत्व में रहने के चलते जो इज्जत पा रहे हैं और कुछ अनुयायियों

दिखाई देने पर देर न कर तत्काल इलाके में पहुंचेंगे।

इसी के मुताबिक एम सी सी की तरफ से कामरेड परेश तथा पी. डब्ल्यू. की ओर से कामरेड विमल को जिम्मेदारी सौंपी गयी। दोनों संगठन के इस मामले में सहमत होने के बाद ही एक आपदा प्रबंधन समिति (Crisis Management Committee) का गठन कर काम शुरू किया गया। इस कमेटी ने एक के बाद एक कर संयुक्त रूप से दोनों संगठनों की स्थानीय कमेटियों, छापामार दस्तों और जन–संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत शुरू की। इन कदमों के चलते इलाके में उत्तेजना कम हुई, परचेबाजी और हमले बंद हुए। परिस्थिति नियंत्रण में तो आया पर इलाके में अविश्वास का वातावरण जारी रहा। दो–एक छिटपुट घटनाएं भी घटीं, पर उन्हें शीघ्र ही नियंत्रण में ला लिया गया।

धीरे–धीरे अविश्वास का वातावरण छंटने लगा और एक दूसरे के इलाके में आना–जाना शुरू हुआ। जन–संगठन आपस में और भी करीब आये। अंत में स्क्वाड भी जो हाल तक एक दूसरे का सामना हो जाने पर एक दूसरे के खिलाफ बंदूकें उठा लेते और कभी–कभी संघर्ष में फंस जाते, उस भयावह स्थिति से उबरकर अब सामना हो जाने पर एक दूसरे को क्रांतिकारी अभिवादन करने लगे थे। स्क्वाड के लोग अब इकट्ठा खाना–पीना और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के स्तर पर आ पहुँचे। इस तरह परिस्थिति के आमूल परिवर्तन के परिणामस्वरूप दुश्मन बेचैन हो उठा और उसने हमले भी शुरू कर दिया। इस तरह एकता के प्रदर्शन के तौर पर दोनों छापामार स्क्वाड एक ही कमान के अंतर्गत प्रतिरोध करने उतरे। दीर्घ कई महीनों तक लगातार प्रयास के बाद जो नयी परिस्थिति बनी, वह केवल स्थानीय स्तर तक ही सीमित नहीं रही। दोनों संगठनों के केंद्रीय नेतृत्व के बीच जो ठंडापन आ गया था, उसे त्याग कर संबंधों में गर्माहट लाने की जरूरत समझी जाने लगी। इसी सोच से हमने पी. डब्ल्यू. के नेतृत्व को पत्र लिखकर भारतीय क्रांति के हित में एकता पर बातचीत का न्यौता दिया। साथ ही हमलोगों ने निर्णय लिया कि अगर किसी वजह से पी.डब्ल्यू. के साथ हमारी एकता न भी हुई तो भी हमारा चुपचाप बैठा रहना उचित नहीं होगा। सी पी आई (एम–एल) के समान सोच वाले संगठनों से एकता का प्रयास चलाते रहना चाहिए।

कॉलेज स्ट्रीट की मुख्य सड़क पर एक बड़े दो मंजिला मकान में बैठक की व्यवस्था की गयी। वे रोज सुबह बरामदे में बैठकर सड़क पर ट्रामों–बसों का आनाजाना और जनता की भीड़ देखते थे। इस समय उनके आचरण में कुछ असंगति महसूस की, जब बैठे रहते थे, तो शून्य दृष्टि से ताकते रहते। आसपास के परिवेश के बारे में सजग नहीं थे। उस समय मैं जानता था कि वे बीमारी से बुरी तरह अस्वस्थ हैं। बातचीत के लिए सात दिन तय था। फलस्वरूप हर तरह की तैयारी के साथ हमने बातचीत शुरू की। दूसरे दिन शुरू में उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत में उन्होंने पार्टी को एक स्तर पर लाया है। अब उन्होंने कहा कि पूर्व भारत में भी खासकर एम सी सी के काम के इलाकों में असम, त्रिपुरा के सफर में जायेंगे और चार महीने तक वहां रहेंगे।

उनके इस इच्छा को सुनकर तो हम बिल्कुल ही हक्के–बक्के रह गये। क्योंकि ऐसी कोई बात पहले नहीं हुई थी। एक तो हमने जितने दिनों की चर्चा की बात तय की है और उसी के मुताबिक शेल्टर की व्यवस्था की है, उसके बाद हम सभी अपने–अपने काम के इलाकों में लौट जायेंगे। इसके अलावा उन्हें असम–त्रिपुरा ले जाने की व्यवस्था हम नहीं कर पायेंगे। मैंने यह समस्या पी डब्ल्यू के नेता प्रकाश के सामने रखी। प्रकाश ने कहा – ठीक है, मैं उन्हें समझा दूंगा। दूसरे दिन बैठक शुरू होने से पहले उन्होंने कहा – मैं कल ही लौट जाऊंगा। मेरी पत्नी बीमार हैं। मैंने कहा – वह कैसे संभव है। मूल बातचीत तो अभी शुरू ही नहीं हुई है। आप चले जायेंगे तो सारा का सारा मामला बंटाधार हो जायेगा। प्रकाश से मैंने समस्या का जिक्र किया। प्रकाश ने सबकुछ भली तरह सम्भाल लिया और अगले छः दिनों तक बातचीत चलती रही। पर अधिकतर समय उन्होंने सोकर गुजारा। उसी समय हमें यह लगा था कि उनका यह आचरण और बैठक में ध्यान न देना उनकी बीमारी की ही वजह से है।

इसके बाद 1990 में पी.डब्ल्यू. का विशेष केंद्रीय सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में शामिल होने के लिए हम आमंत्रित हुए। हम दो कामरेड उस सम्मेलन में उपस्थित रहे। इसी सम्मेलन में पहली बार कामरेड उदय (कामरेड आजाद) और कामरेड प्रह्लाद (कामरेड किशनजी) के साथ परिचय हुआ।

कामरेड प्रह्लाद ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। कामरेड गदर के साथ भी यहीं परिचय हुआ। कामरेड गदर ने मेरे कुछ बांग्ला और हिंदी जनगीत कैसेटबद्ध किये। हालांकि हमने सुना था कि इसी सम्मेलन में कामरेड सीतारामैया के बदले कामरेड गणपति के नाम की सचिव के रूप में घोषणा होगी, पर बाद में देखा गया कि इस सवाल पर उनमें वितर्क है और इस वितर्क के फलस्वरूप सम्मेलन एक दिन बढ़ा दिया गया। अंत में सम्मेलन में कामरेड सीतारामैया के नाम की ही घोषणा सचिव के तौर पर की गयी।

लगता है इस सम्मेलन से ही पी.डब्ल्यू. में नये सिरे से फूट की शुरूआत हुई, जिसका अंजाम कामरेड सीतारामैया का पार्टी से निष्कासन के तौर पर सामने आया। कामरेड सीतारामैया को पार्टी से निष्कासित किये जाने की घटना ने हमें चकित किया। हालांकि हमने इसे उनकी पार्टी की अंदरूनी समस्या मानकर इसपर कोई टिप्पणी नहीं की। बाद में कामरेड गणपति को नये सचिव के तौर पर घोषित किया गया।

,e- lh- lh- dk igyk rFkk nwljk lEesyu

1990 में हमने एम.सी.सी. का प्रथम केंद्रीय सम्मेलन आयोजित किया। 1969 में एम.सी.सी. के गठन के बाद विभिन्न राज्यों के निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ केंद्रीय स्तर पर यह सम्मेलन हुआ। बंगाल, बिहार (उस समय झारखंड राज्य बिहार से अलग नहीं हुआ था) और असम के निर्वाचित प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। चार दिन के इस सम्मेलन में संगठन के मुख्य–मुख्य दस्तावेजों के तौर पर प्रकाशित समस्त दस्तावेजों को औपचारिक तौर पर इस सम्मेलन में पारित किया गया। स्वीकृत किया गया। इसके अलावा संगठन का राजनीतिक तथा सांगठनिक रिपोर्ट, कार्यशैली का दस्तावेज, आत्म–आलोचना की रिपोर्ट तथा बजट पेश किया गया। सारे दस्तावेज सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। नयी केंद्रीय कमेटी सम्मेलन के माध्यम से चुनी गयी और मुझे दुबारा सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

बहुत ही सुंदर परिवेश में प्रतिनिधियों ने खुल कर बातचीत के जरिये संगठन के राजनीतिक तात्पर्य (महत्व) को सामने रख, सम्मेलन को सफल बनाया।

बेचैनी का इजहार करते हुए पी.डब्ल्यू. के नेतृत्व को चिट्ठी भेजी गयी। हमने यह भी बताया कि केंद्रीय स्तर पर इस मामले में बैठक न करने के बावजूद हम प्रतिनिधि स्तर पर इस समस्या पर बातचीत करना चाहते हैं। असुविधा न होने पर हम अपने एक नेता को आप से बात करने के लिए भेज सकते हैं या आप भी अपनी तरफ से किसी को यहां भेज सकते हैं।

पी.डब्ल्यू. के नेताओं ने चिट्ठी पाने के बाद सूचित किया कि वे भी इस विषय पर बेचैन हैं तथा इसका एक समाधान जरूरी मानते हैं। इसीलिए कामरेड विमल (किशनजी) को हमसे बातचीत करने के लिए भेज रहे हैं। कामरेड विमल ही पी.डब्ल्यू. की तरफ से बिहार के प्रभारी हैं, अतः उन्हें सारी बातों की जानकारी भी है। इसी के मुताबिक कामरेड विमल यहां आये और बातचीत की। कामरेड विमल ने प्रस्ताव रखा कि इस मसले के उद्‌भव के कारणों और गलती किसकी है, निर्धारित करने के लिए एक जांच कमेटी का गठन किया जाय।

हमने कहा, वह दीर्घ प्रक्रिया का मामला है और इस जटिल परिस्थिति में एक दूसरे की गलतियां खोजने में बहस और भी बढ़ेगी, क्योंकि अपनी गलतियों के बारे में आत्म–आलोचना करने की मानसिकता किसी में नहीं है, फलस्वरूप परिस्थिति में और गिरावट ही आयेगी। पहले परिस्थितियों को नियंत्रण में लाना होगा। इसके बाद ही दोनों संगठन को साथ बैठकर इस विषय पर चर्चा और समीक्षा करने के जरिये कारणों की जड़ तक जाया जा सकेगा।

परिस्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए हमने कई जरूरी कदम उठाने की बात की, वे हैं :– क) दोनों संगठन उनके कार्यकर्ताओं को निर्देश दे कि कोई किसे से गाली–गलौज नहीं करेंगे और कोई किसी पर हमला नहीं करेंगे, कोई भी परचाबाजी और कोई आक्रमण नहीं करेगा। इसे तुरंत रोकना होगा। ख) कहीं कोई घटना घटने पर दोनों संगठन के जिम्मेदार केंद्रीय नेता साथ–साथ उस में शामिल कमेटियों के साथ बैठेंगे। दोनों ही समाधान में एक ही नजरिये से बात करेंगे। आपस में मतभेद दिखाई देने पर वे अलग से बैठकर बात करेंगे। ग) इसके लिए दोनों संगठनों की तरफ से दो केंद्रीय कमेटी के सदस्य मूल जिम्मेदारी लेंगे। वे आपस में घनिष्ठ संपर्क में रहेंगे और समस्या

डब्ल्यू. व एमसीसी के बीच के रूप में आ गया।

केंद्रीय स्तर पर संघर्ष बंद करने के लिए चिट्ठी–पत्री चलती रही, मगर दोनों संगठनों के नेतृत्व की बैठक की व्यवस्था नहीं की जा सकी। एक अविश्वास का वातावरण फैल गया।

इस अविश्वास के वातावरण की स्थिति हाथ से परे चले जाने को रोकने की गरज से हमारी केंद्रीय कमेटी ने फैसला किया कि इस भ्रातृघाती संघर्ष को जैसे भी हो रोकना होगा और उसके प्राथमिक सीढ़ी के तौर पर हमें ही ज्यादा त्याग स्वीकार करना होगा। हमने फैसला किया कि पी.डब्ल्यू. के खिलाफ हम कोई जवाबी व्यवस्था या हमले में नहीं जाएंगे। हम पर हमला होने पर भी हम उसका बदला नहीं लेंगे। इस प्रकार से तमाम आपसी संघर्ष को एमसीसी की तरफ से एकतरफा तौर पर तुरंत बंद करने की खुली घोषणा की गयी।

केंद्रीय कमेटी के इस फैसले को लेकर हम जब इलाके में क्रियान्वित करने गये, तो हमें घोर विरोध का सामना करना पड़ा। स्थानीय तौर पर भुक्तभोगी जनता के एक हिस्से, नेता तथा कार्यकर्ताओं ने कहना शुरू किया कि पी.डब्ल्यू. के हाथों एकतरफा मार खाते जाने पर संगठन को टिकाये नहीं रखा जा सकेगा। इसके फलस्वरूप लड़ाकू जनता तथा छापामार टुकड़ियां हताश हो जाएंगी और दुश्मन तथा पुलिस हमले चलाकर हमें खत्म कर देंगी।

कुछ भी हो, बहुत बात–वितंडा के बाद उन लोगों को समझाया गया कि यहां सिर्फ एम सी सी का हित देखने से काम नहीं चलेगा। सवाल भारत की क्रांति के हितों को देखने का है। इस भ्रातृघाती संघर्ष से नुकसान हमारे 28 साल के संगठन की ही नहीं हो रही है, उससे से भी ज्यादा नुकसान भारतीय क्रांति का और जो तमाम कामरेड भारत की क्रांति के हित में शहीद हुए हैं, उनके सपनों को साकार करने की राह में होगा। हम पी.डब्ल्यू. के नेतृत्व के समक्ष इस विषय पर बात करेंगे। वर्तमान स्थिति में बदलाव लाना होगा और इसके लिए पहल हमीं को करनी होगी। इसके बाद हमारी केंद्रीय कमेटी की तरफ से परिस्थिति में तेजी से आयी गिरावट, दोनों तरफ के कई महत्वपूर्ण (बहुमूल्य) कामरेडों का शहीद होना और भारतीय क्रांति के लिए ही आ खड़े हुए सामूहिक संकट को रेखांकित करते हुए, हमारी आशंका और

केंद्रीय सम्मेलन आम तौर पर हर पांच साल में करने का नियम है। पर दूसरा केंद्रीय सम्मेलन करने में हमें एक साल की देरी हो गयी। 1996 में हमने एम. सी. सी. का दूसरा सम्मेलन आयोजित किया। केंद्रीय सम्मेलन से पहले स्पेशल एरिया कमेटी (SAC), पश्चिम बंग राज्य कमेटी, विभिन्न ज़ोनल तथा सबज़ोनल कमेटियों के सम्मेलनों के माध्यम से इस केंद्रीय सम्मेलन के प्रतिनिधियों का निर्वाचन किया गया। पिछले सालों के दौरान हुए काम के राजनीतिक सांगठनिक रिपोर्ट, आत्म–आलोचना की रिपोर्ट, केंद्रीय बजट तथा आगामी योजनाओं की रिपोर्ट रखी गयी, जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। नयी केंद्रीय कमेटी चुनी गयी।

इस सम्मेलन में सचिव की जिम्मेदारी कामरेड किसान को सौंपने के लिए मैंने प्रस्ताव रखा। 1995 में मेरी आंख के ऑपरेशन के बाद एक आंख तो पूरी तरह नष्ट हो गयी थी। दूसरी में भी समस्या दिखाई दी। फलस्वरूप सम्मेलन के बाद काम में गति लाने के लिए जिस तरह काम का भार बढ़ेगा, उसे उठा पाने में मेरे गिरते स्वास्थ्य के कारण दिक्कत होगी, इसलिए उस दायित्व से मैंने छुटकारा मांगा।

सब कुछ सोच विचार के बाद कामरेडों ने मेरे इस प्रस्ताव को मान लिया। इसके बाद मेरे प्रस्ताव के अनुसार ही कामरेड किसान को केंद्रीय सचिव चुन लिया गया। अत्यंत सुंदर वातावरण में तमाम प्रतिनिधियों ने संगठन के राजनीतिक व सांगठनिक रिपोर्ट पर अपनी राय दी। सम्मेलन के बाद विभिन्न राज्यों से आये सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने अपने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये। पांच दिन तक चला यह सम्मेलन निहायत ही जोश–खरोश के साथ संपन्न हुआ।

uiky dh dE;fuLV ikVh ¼lh ih ,u½ d lkFk gekjk lid] l;ä dke rFkk fje (RIM) lxBu l tMko

1987 के आसपास नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से कामरेड रणवीर शर्मा (गुजरेल) ने हम से संपर्क किया। शर्मा के साथ प्राथमिक बातचीत के बाद दोनों देशों की पार्टियों के बीच दोस्ताना संबंध रखने का फैसला हुआ। बाद में कामरेड शर्मा के साथ ही बातचीत में कामरेड 'प्रचंड' भी उपस्थित रहते

थे। 'प्रचंड' ने हमसे संबंध बनाने में बहुत उत्साह दिखाया। कई बैठकों में दोनों देशों की राजनीतिक परिस्थिति का विचार और विश्लेषण के बाद कामरेड 'प्रचंड' ने कहा कि हम भी नक्सलबाड़ी के पथ पर ही नेपाल में सशस्त्र संग्राम शुरु करना चाहते हैं। मगर इस मामले में हमारी कोई धारणा/अनुभव नहीं है। बिहार की लड़ाई के बारे में हमने बहुत सुना है। हम लोग कुछ सीखना चाहते हैं। अनुभव हासिल करने के लिए गया के लड़ाकू इलाकों में हम जाना चाहते हैं। आप व्यवस्था कर दीजिए। मैंने कहा, 'मसला मुझे पार्टी में उठाना होगा। वहां जो भी फैसला होगा, हम बाद में आप को बता देंगे।' बाद में उनके बिहार जाने का हर प्रकार का इन्तजाम कर दिया गया। कामरेड प्रचंड तथा शर्मा ने लगातार डेढ़ महीने तक लड़ाकू इलाके का दौरा किया। वहां उन्होंने पार्टी, गुरिल्ला टुकड़ियों और व्यापक जनता से बातचीत की। विदा लेते समय वे बहुत ही भावुक हो गये (आवेग ताड़ित)। दोनों ही रोने लगे। उन्होंने कहा इतने दिनों तक यहां रहे। एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि हम अलग देश और अलग पार्टी में हैं। आप लोगों का अपनापन और जनता के प्यार ने हमें अभिभूत कर दिया। हम फिर आएंगे।

इसके बाद उन्होंने उनके इलाके (देश) से कई युवकों को फौजी तालीम के लिए भेजा। वहां उन्हें हर तरह की सामरिक ट्रेनिंग दी गयी और साथ ही राजनीतिक शाला के क्लास भी लिए गये। जाते समय उपहारस्वरूप संगठन के माध्यम से दो बंदूकें और गोलियां दी गयी। इसके बदले उन्होंने हमें नेपाल की पार्टी का झंडा भेंट किया।

इसके बाद प्रचंड तथा शर्मा के साथ कई बार बातचीत हुई। उन्होंने जो–जो मदद मांगी, उन सब की व्यवस्था की गई। दोनों पार्टियों के बीच अपनापन बढ़ता गया। बाद में उन्होंने हथियारबंद लड़ाई शुरू करने की योजना बनाई और इस सिलसिले में हमसे मदद मांगी। बिरादराना पार्टी के तौर पर उन्हें सीधी मदद की। उन्होंने अपने देश में जो पहली कार्रवाई की वह हमारे द्वारा दिये गये हथियारों से ही किया। इसके बारे में उन्होंने हमें आभार भी प्रकट किया। बाद में उनके साथ हमारी बैठकें होती रही। उनकी पार्टी की महत्वपूर्ण बैठकों की जगह बिहार में हमारी देखरेख में तय हुई। उस समय सभी बैठकों में कामरेड प्रचंड हमसे रेवोल्यूशनरी इंटरनेशनल मूवमेंट (RIM) के साथ बैठक करने का बारबार अनुरोध करते रहे। बाद में केंद्रीय कमेटी में

0fcgkj dk ih-MCY;w- vkSj ,e-lh-lh- laxBu ds chp fojks/k dk lw=ikr] dkWejsM rFkk l?k"kZ dk okrkoj.k

केंद्रीय स्तर पर पी.डब्ल्यू. के साथ रिश्ते में ठंडापन के चलते बिहार में हमारे काम के इलाके में पी.डब्ल्यू. के साथ संबंधों में भी गिरावट आयी।

हमारी केंद्रीय कमेटी की एक बैठक में गया, चतरा, औरंगाबाद इलाके के प्रधान जिम्मेवार कामरेड ने एक सनसनीखेज शिकायत की। उन्होंने कहा कि लंबे अर्से से हमारे मूल इलाके में पी.यू. अपने पेशेवर कार्यकर्ता नियुक्त कर हमारे संगठन को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

इससे पहले पी.यू. के साथ बिरादराना संगठन के तौर पर हमारे दोनों संगठनों में समझौता हुआ था कि कामरेडाना रिश्ते बनाये रखने के लिए एक दूसरे के इलाके में कोई जवाबी संगठन नहीं बनायेंगे।

मगर कार्यक्षेत्र में देखा गया कि संबंधों में ठंडापन आने के चलते पी.यू. के कामरेड अपने पूर्व के समझौता पर टिके नहीं रह सके। इस मामले के बारे में हमने पी.यू. को पत्र भेजकर उन्हें सूचित किया। पर उन्होंने इस मामले को कोई महत्व नहीं दिया और हमारी शिकायत की सुध नहीं ली। धीरे–धीरे देहाती इलकों में जवाबी जन संगठन के गठन के काम में वे बढ़ते चले गये। हमारे काम के इलाके के गावों में जनता में विभाजन शुरू हो गया। बाद में विरोध की तीव्रता में एक दूसरे के प्रभावित गांवों और इलाके में जनता में संघर्ष शुरू हो गया। एक दूसरे की निंदा करना, गाली–गलौज करना, परचे बाजी तथा छोटे–मोटे हमले शुरू हो गये। इस मामले में एक दूसरे को उत्तरदायी बताते रहे। स्थानीय स्तर पर इन दोनों संगठनों ने मिल–बैठकर समस्या को सुलझाने के प्रयास भी किये, पर कोई नतीजा नहीं निकला। बल्कि वह धीरे–धीरे और फैलता चला गया। अंत में दोनों संगठन की सशस्त्र टुकड़ियां भी इसकी चपेट में आ गयी। इसके परिणामस्वरूप दोनों संगठनों के छापामार टुकडियों के बहुत मूल्यवान कामरेडों की मृत्यु हुई। करीब तीन साल तक बिहार के उस इलाके में एक घोर अंधकार का युग तथा दुश्मनी भरा संबंध जारी रहा तथा एमसीसी और पी.यू के बीच आपसी सशस्त्र संघर्ष चलते समय ही 1998 में पी. डब्ल्यू. व पी.यू. का विलय पूरा हो गया और आपसी विवाद पी.

1- Hkkjr dh jktlÙkk dk oxl LoHkko
2- Hkkjr jkT; dk foLrkjoknh pfj= dk ckjs e
3- fo'o0;kih lkekT;oknh 0;oLFkk dk ladV dk Lo:i dk ckjs e
4- tulxBuk dk fofHkUu :ik dk loky ij
5- /kkfed eyrRookn dk ckjs e

इन तमाम मौलिक सवालों को छोड़ कर भी कई छोटे–मोटे मतभेद रहे, पर उनका यहां उल्लेख करना जरूरी नहीं।

शुरू की कई बैठकों के दौरान जो सब मतभेद उभरे और उन्हें सुलझाने की कोशिश हुई। पर दोनों पक्ष ही अपने–अपने सिद्धांत व तर्क पर खड़े रहने के कारण समस्याओं का समाधान नहीं निकला। पी.डब्ल्यू. की तरफ से बातचीत कामरेड आजाद तथा कामरेड किशनजी चलाते। गणपति बीच–बीच में टिप्पणी करते थे। वितर्क चलाते समय कभी–कभी वातावरण बहुत भारी (गर्म) हो उठता तो बाद की बैठक में समस्याओं का समाधान होगा कहना उचित नहीं। अंतिम बैठक में भी कई मौलिक सवालों पर विरोध रह गया। उस समय पी.डब्ल्यू. की तरफ से प्रस्ताव आया कि ऐसी परिस्थिति में और एकता की बातचीत चलाकर कोई फायदा नहीं है। बातचीत स्थगित रखी जाये। विषयों पर उत्तर (जवाब) संगठन अपने भीतर और अध्ययन चलाकर अपने वक्तव्य लिखित रूप से एक दूसरे को देंगे। हमने अनिच्छा के बावजूद यह प्रस्ताव मान लिया। इसके बाद एकता की बातचीत यहीं टूट गयी।

हालांकि दो संगठनों के बीच चिट्ठी के माध्यम से एक संपर्क रखा जाता था। निर्णय के मुताबिक हमारी ओर से लिखित वक्तव्य जो भेजा गया, उसमें नया कोई बदलाव नहीं था, क्योंकि राजनीतिक विचार से दूसरा कोई परिवर्तन संभव नहीं था।

दोनों संगठनों में राजनीतिक विरोध चलते रहने से धीरे–धीरे एक मानसिक व्यवधान आ गया और पूर्व के संबंधों की गर्माहट के बदले में संपर्क में ठंडापन आ गया।

बातचीत के बाद हमने RIM के साथ बैठक करने का फैसला किया।

RIM के साथ बेठक में अमेरिकी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि के साथ नेपाल की पार्टी के कामरेड शर्मा रहते थे। नेपाल की पार्टी ने बहुत पहले ही RIM संगठन की सदस्यता ले ली थी। RIM के अमेरिकी प्रतिनिधि कई बार हमारे काम के इलाके में भी गये। विदेशी प्रतिनिधि होते हुए भी वे एशियाई खासकर भारत, नेपाल तथा बांग्लादेश की जनता की जीवन शैली तथा खान–पान के अभ्यस्त हो गये थे। बाद में नेपाल पार्टी के प्रस्ताव के मुताबिक RIM की देखरेख में दक्षिण एशिया की मुल्कों को लेकर को–ऑर्डिनेशन कमेटी ऑफ माओइस्ट पार्टीज एंड आर्गनाइज़ेशन्स ऑफ साउथ एशिया (Co-ordination committee of Maoist Parties and Organisations of South Asia – COMPOSA) का गठन किया गया।

इस संगठन में भारत की सी पी आई (एम–एल) नक्सलबाड़ी तथा पंजाब के करमसिंह के नेतृत्वाधीन ग्रुप के अलावा हम, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका तथा बाद में भूटान की पार्टी ने शिरकत की। ''काम्पोसा'' की बैठकों में नेपाल की तरफ से कामरेड बाबूराम भट्टरई तथा शर्मा प्रतिनिधित्व करते थे। एम सी सी की तरफ से मैं प्रतिनिधित्व करता था। काम्पोसा की बैठकों में मूलतः विभिन्न देशों की राजनीतिक तथा सांगठनिक परिस्थितियों को लेकर बातचीत होती और सशस्त्र संग्राम खड़ा करने के रास्ते में उभरी समस्याओं पर चर्चा होती, सम्मिलित कार्यक्रम के तौर पर कुछ प्रचारात्मक कार्यक्रम लिया जाता। काम्पोसा के कुल तीन सम्मेलन हुए। आखिरी सम्मेलन हमारे तत्वावधान में झारखंड में हुआ।

काम्पोसा की बैठक के साथ–साथ रिम के साथ भी बैठकें आयोजित की गयी। रिम के प्रतिनिधि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिन–जिन देशों की पार्टियों ने सदस्यता ग्रहण की हैं, उनकी राजनीतिक तथा सांगठनिक स्थितियों का विवरण देते। उस समय पेरू की पार्टी की अंदरूनी समस्याओं पर बातचीत की गई, इसके अलावा फिलिपींस, ग्रीस, इटली, इरान आदि देशों में पार्टियों की स्थितियों की भी व्याख्या की गयी। हमारे साथ विभिन्न बातचीत चलाते समय ''माओवाद'' के महत्व पर जोर दिया गया। इस विषय में बातचीत करते हुए कामरेड स्तालिन का मूल्यांकन सामने चला आया। कामरेड स्तालिन के बारे में एम. सी. सी. का अपना कोई मूल्यांकन नहीं है और हमारे लिए यह करना

संभव भी नहीं था। हम चीन की ''महान बहस'' के दस्तावेजों में जो कामरेड स्तालिन का मूल्यांकन है – अर्थात कामरेड स्तालिन 70 प्रतिशत सही और 30 प्रतिशत गलत रहे हैं – इसी मूल्यांकन को मानते आये हैं। स्तालिन के सवाल पर रिम के प्रतिनिधि ने जो मूल्यांकन रखा, उससे हम सहमत नहीं हो सके। इसके अलावा उन्होंने सैद्धांतिक स्तर पर माओवाद की जो व्याख्या की, हम उसे भी स्वीकार नहीं पाये।

इसके अलावा हमने रिम संगठन के निर्माण की जरूरत और इसके लक्ष्य के बारे में भी सवाल उठाया। इसे क्या चौथे इंटरनेशनल के लक्ष्य से बनाया जा रहा है? उन्होंने कहा – अभी उस तरह का कोई उद्देश्य नहीं है। सिर्फ विश्व की ''माओवादी'' पार्टियों और संगठनों को एकताबद्ध करने की कोशिश चल रही है। हम लोगों ने कहा दूर भविष्य में चौथा इंटरनेशनल संगठन खड़ा करने की जरूरत है। पर ऐसा करने के लिए तीसरे अंतर्राष्ट्रीय संगठन की कार्यपद्धति का मूल्यांकन करना जरूरी है। खासकर एशिया की पार्टियों में चीन और भारत के मामलों को तीसरे इंटरनेशनल ने जिस तरह संचालित किया है। चीन की पार्टी की सीधे–सीधे तीसरा इंटरनेशनल देख–रेख करती थी तथा भारत में ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन की देखरेख में काम होता था। उसका विस्तार से मूल्यांकन जरूरी है। ऐसा मूल्यांकन करने के लिए तीसरे अंतर्राष्ट्रीय की 7वीं कांग्रेस में स्वीकृत तथा चीन, भारत की पार्टियों का जो मूल्यांकन है, उसे सामने रखकर बातचीत करनी होगी।

रिम की तरफ से बताया गया कि, 'आप के प्रस्ताव का स्वागत है, पर इन विषयों पर चर्चा के लिए 'रिम' के नियम के मुताबिक रिम की कोर कमेटी में चर्चा करनी होगी और इसके लिए आपको 'रिम' का सदस्य बनना होगा। नेपाल की पार्टी ने भी आप लोगों को सदस्य बनाने का अनुरोध किया है।' बाद में हमने अपनी पार्टी की केंद्रीय कमेटी में चर्चा के बाद (2002 में) रिम की सदस्यता लेने के लिए और कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बहस करने की जरूरत पर बल दिया और एक पत्र भेजा। पर, बहुत दिनों के बाद जब एमसीसीआई और सीपीआई (पी. डब्ल्यू.) के साथ एकता प्रक्रिया पूरी होने की स्थिति में पहुंच गयी, तब बिना किसी अधिकारिक पत्र के, मौखिक रूप से हमें जानकारी दी गई कि एमसीसीआई को RIM का (कमेटी ऑफ द रीम का नहीं) साधारण

सदस्यता दी गयी, जिस पर हमने तीव्र आपत्ति जतायी।

पुनः सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) तथा एम सी सी आई का विलय हो जाने के बाद रिम के बारे में बातचीत हुई। बाद में नयी एकताबद्ध पार्टी के फैसले के अनुसार हमने रिम से संपर्क तोड़ दिया।

lh ih vkbZ ¼,e&,y½ ¼ih- MCY;w-½ ds u;s usr`Ro ds lkFk ckrphr vkSj muls erHksn dk mHkjuk

सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) से सीतारामैया के निष्कासन के साथ नये केंद्रीय नेतृत्व के साथ फिर से बातचीत शुरू हुई। केंद्रीय कमेटी के सचिव कामरेड गणपति के नेतृत्व में हमसे बातचीत में कामरेड परिमल (आजाद) व कामरेड विमल (किशन जी) ने हिस्सा लिया।

चर्चा में पहले किस परिस्थिति में कामरेड सीतारामैया को निकाला गया, इसकी विस्तृत रिपोर्ट कामरेड गणपति ने पेश किया। रिपोर्ट पूरा सुनने के बाद हमने वर्तमान नेतृत्व की राजनीतिक एवं सांगठनिक लाइन को सही और उनके प्रतिद्वंद्वी गुट की लाइन को गलत माना। दो दिशाओं की बहस में कामरेड सीतारामैया के राजनीतिक अधःपतन से हम काफी चकित्/अवाक् थे। कुछ भी हो, हमारे साथ सीतारामैया की बातचीत में हम जिन मुद्दों पर सहमत हुए थे, उसकी एक रिपार्ट हमने प्रस्तुत की। इसपर उन्होंने सब सुनकर कहा कि इसका बहुत कुछ वे नहीं जानते यानी पार्टी में इन मसलों पर और चर्चा के अंजाम पर कामरेड सीतारामैया ने कोई बातचीत नहीं की थी। फलतः सभी मुद्दों पर नये नेतृत्व ने बातचीत की। उन्होंने कहा कि सीतारामैया के पहले के नजरिये के बहुत कुछ को वे यानी नए नेतृत्व गलत मानते हैं और जिन सब विषयों पर हम सीतारामैया से सहमत हुए थे, उन विषयों को वे लोग मानने को तैयार नहीं हैं। फलतः सीतारामैया के साथ हुई हमारी बातचीत व उसके कई बिंदु पर हुई सहमति इत्यादि अब बेकार हो गया था। कुछ भी हो, भारतीय क्रांति के हित में और एकता के हित में हम दोबारा उन विषयों पर बातचीत करने को तैयार हुए। इस बातचीत में जो राजनीतिक–सांगठनिक मतभेद नजर आये, वे निम्मांकित हैं –

vej 'kghn dkejM l|'khy jk; d fu/ku d ckn dh rLohj

dkejM l|'khy jk; l ckrphr djr g, Økfrdkjh dfo ojojk jko

Hkkjr dh dE;fuLV ikVh ¼ekvkoknh½

होगा। पी.डब्ल्यू. के बारे में उसका वक्तव्य था कि वे स्तालिन को नहीं मानते। स्तालिन के मूल्यांकन के सवाल पर विश्व–कम्युनिस्ट आंदोलन में काफी टूट–फूट हुई है। लिहाजा, पी.डब्ल्यू. के साथ एकता करना हो तो पहले स्तालिन के सवाल पर फैसला करना होगा। उसके इस वक्तव्य के बाद हम समझ गये कि सैद्धांतिक धुएं का धुंध फैलाकर असल में वह चालाकी का सहारा लेकर एकता का विरोध कर रहा है।

दूसरी ओर भरत के बारे में छानबीन करने पर पता चला कि दूसरी तथा तीसरी पायदान की नेतृत्वकारी कमेटियां उसकी गैर–सर्वहारा जीवनशैली, काम के तौर–तरीके और आर्थिक अराजकता के बारे में काफी समय से सवाल उठाते रही थी और शिकायत दर्ज करती आ रही थी। पी. डब्ल्यू. के साथ संघर्ष खत्म करने के मामले में भी उसे दिलचस्पी नहीं थी। जो उसकी आलोचना करता, उसकी वह तरह–तरह से फजीहत करता, शुद्धिकरण के नाम पर वह उन्हें संगठन में किनारे कर दिया करता अथवा किसी–किसी को संगठन से बाहर भी निकाल दिया जाता। उसके इस तानाशाही व्यवहार से कार्यकर्ता इतने ही नाराज थे कि उन्होंने केंद्रीय कमेटी को पत्र लिखकर सूचित किया था कि अब और वे भरत के नेतृत्व में काम करने को कतई तैयार नहीं हैं।

केंद्रीय कमेटी की बैठक में हमने भरत से पूछताछ की। रूपयों–पैसों के बारे में भी उससे पूछा गया। पूरा मामला उसने अस्वीकार किया। हमने उससे अनुरोध किया कि अगर कोई गलती हुई है तो कमेटी में आत्म–आलोचना कर खुद को वापस सुधारने का मौका है और इलाके में नेतृत्व स्थापित करने का मौका है।

बहुत बहस के बाद रुपये की बात उसने स्वीकार की। करीब 1 करोड़ रूपया केंद्रीय कमेटी को सूचित किये बिना, बिना हिसाब देकर अपने पास रख छोड़ा है। बाद में उसने माना कि समूचा पैसा वह कमेटी को सौंप देगा।

आगामी बैठक में बैठने से पहले फिर निचली कमेटियों ने लिखित रूप से केंद्रीय कमेटी को सूचित किया कि अगर भरत इलाके में आता है, तो उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ये कमेटियां नहीं ले सकेंगी। हमने मसले की गंभीरता को समझा और यह भी समझा कि एक समय उसके विश्वस्त (मातहत) रहे कामरेड ही जब ऐसा कह रहे हैं, तो ऐसे में उन इलाकों में भरत की जान

सुरक्षित नहीं।

केंद्रीय कमेटी की विशेष बैठक में उसे बुलाया गया। भरत को दोबारा आत्म–आलोचना करने को कहा गया और जिन रुपयों को लौटाने की बात हुई थी, वह कहां लौटाएगा, यह पूछा गया। भरत ने जवाबी मांग की कि जब तक वह इलाके में नहीं लौट पाता, पैसा नहीं लौटा सकता। कुछ भी हो, ऐसी स्थिति में भरत का इलाके में जाना खतरे से खाली नहीं जान, हमने उसे दूसरे आश्रय में अगली बैठक तक रुकने को कहा। कई दिनों तक वहां रहने के बाद भरत लापता हो गया।

अगली बैठक से पहले पता चला कि बादल के नेतृत्व में दक्षिण चौबीस परगना जिले की जोनल कमेटी को केंद्रीय कमेटी के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसा रहा है। इसी के साथ पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी को तोड़ने की जुगत कर रहा है। इस मामले में उसे कारण बताओ सूचना भेजी गयी, पर उसने इसका कोई जवाब नहीं दिया। इसके बाद यह भी पता चला कि भरत और बादल एक गुट बनाकर पश्चिम बंगाल की राज्य कमेटी में फूट डालने की कोशिश में हैं।

पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के अन्य सदस्यों ने केंद्रीय कमेटी को सूचित किया कि भरत–बादल अलग–अलग ढंग से बैठकें करते हुए राज्य कमेटी में फूट डालने का काम पूरा कर रहे हैं।

तमाम रिपोर्टें मिलने के बाद केंद्रीय कमेटी ने तय किया कि जल्द ही बैठक बुलानी चाहिए। उसी के अनुरूप बैठक का दिन और स्थान सूचित कर, उन्हें अवश्य ही उपस्थित रहने को कहा गया। परंतु इस बैठक में वे उपस्थित नहीं हुए। ऐसा उनके समूचे राजनीतिक जीवन में पहले कभी नहीं हुआ था। बाद में उन्हें एक और अवसर देते हुए दूसरी बैठक में भी बुलाया गया, पर वे इस बार भी नहीं आये और अलग गुट के तौर पर काम करने की तैयारी करते रहे।

ऐसी हालत में केंद्रीय कमेटी ने उन्हें एकता विरोधी ताकत के तौर पर घोषित (चिन्हित) किया। किसी भी तरह केंद्रीय कमेटी के काम के साथ न जुड़ने के कारण उन्हें पार्टी के तमाम संवैधानिक नियमों का पालन करते हुए भारतीय क्रांति के हित में पार्टी से निष्कासित कर दिया गया।

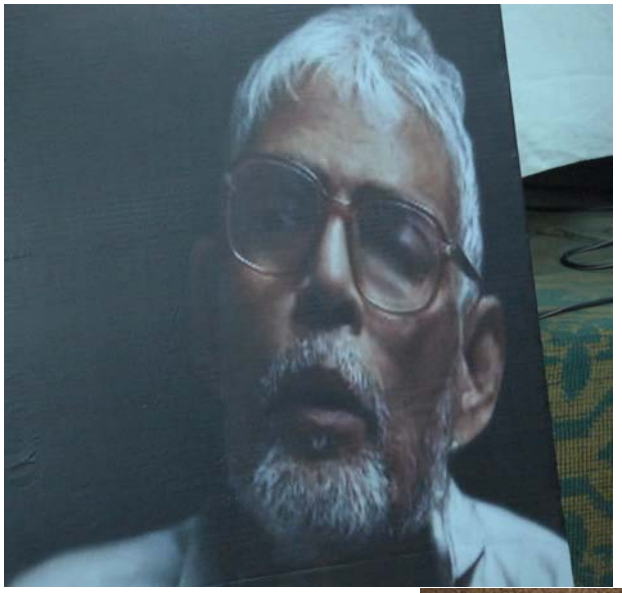

vej 'kghn
dkejsM
l|'khy jk;
dh
i|jkuh rLohjs

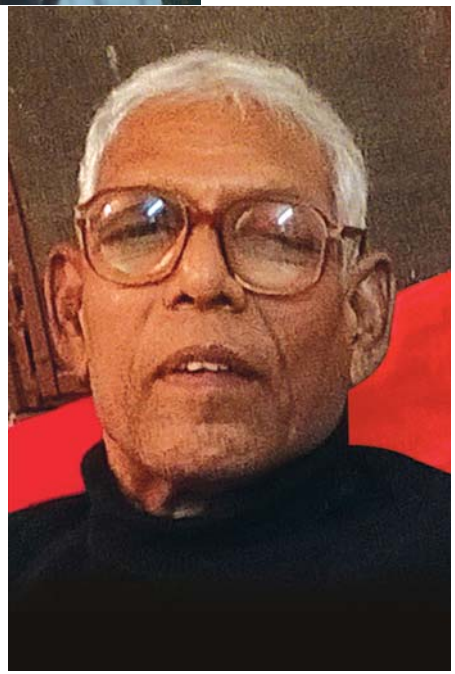

ही विजयी होगी, इसका मुझे दृढ़ विश्वास है।

सबसे अंत में जिन तमाम महान कामरेडों के आत्म–बलिदान से हम आज क्रांति के विजय पथ पर बढ़ते जा रहे हैं, उन सभी भारत की श्रेष्ठ संतानों और जिन माताओं ने उन्हें जन्म दिया और अपनी आंचल का दूध पिलाकर इस काबिल बनाया, उन सब माताओं को गरमजोशी भरा लाल सलाम करता हूँ।

***

lh ih vkbZ ¼,e&,y½ ¼ih- MCY;w-½ ds lkFk vfre nkSj dh ckrphr rFkk ,drkc) vkRe&vkykspuk

तीन साल के काले अध्याय के बाद भारतीय क्रांति के हित में दो क्रांतिकारी संगठनों के बीच एकता संबंधी बातचीत शुरू करने के लिए हमने पी.डब्ल्यू. के नेतृत्व के समक्ष जो आवेदन किया था, उन्होंने उसी तर्ज पर उसका जवाब दिया। इसी बीच सी पी आई (एम–एल) (पी.यू) तथा सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के बीच एकता पूरी हो गयी तथा उनकी नयी केंद्रीय कमेटी का गठन भी हो चुका था। उन्होंने हमें पत्र के माध्यम से सूचित किया कि वे भी दोबारा एकता पर बातचीत शुरू करने में दिलचस्पी रखते हैं। इसी तरह हमने उन्हें बातचीत के लिए हमारे इलाके में आने का अनुरोध किया। इस मामले में उच्च क्षमता संपन्न टीम भेजने की भी पेशकश की। 2003 से शुरू होकर 2004 में कुल चार राउण्ड बातचीत हुई। इसी क्रम में 2004 की फरवरी में कामरेड गणपति के नेतृत्व में एक टीम हमारे इलाके में आयी, उस टीम में और जो लोग थे, वे क्रमशः कामरेड प्रकाश, कामरेड आजाद, कामरेड विमल (कामरेड किशनजी) तथा कामरेड नारायण सन्याल थे।

हमारी ओर से जो उपस्थित थे वे, एम सी सी के सचिव किसान (पी. बी.), कामरेड भूपेशजी, बनबिहारी, कामरेड परेश तथा मैं।

सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) का गर्मजोशी से गले लगाकर स्वागत किया गया। बैठक का परिवेश तथा समूची व्यवस्था देख सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के कामरेड भावुक हो उठे। बैठक के शुरू में प्रस्तावना के तौर पर मैंने कहा – 'हमने एक महत्वपूर्ण समयकाल में बहुत ही महत्व का काम पूरा करने के लिए इस बैठक का आयोजन किया है। भारतीय क्रांति के हित में और दोनों संगठनों के बहुत से नेताओं और कार्यकर्ताओं के अमूल्य बलिदान को सही सम्मान देने के लिए हमलोगों को एकजुट होने के लिए कसम खानी होगी। हम तीन दशकों से ज्यादा समय तक अलग–अलग समूहों की तरह काम करते रहे हैं। समूह टिकाये रखने के जरिये अपने–अपने नेतृत्वों का वर्चस्व आगे भी जारी रख सकेंगे। कोई हमें नेतृत्व से हटा नहीं सकता यह तो ठीक है, पर उससे भारत की क्रांति सफल नहीं होगी। एकताबद्ध पार्टी के न होने से क्रांतिकारी जनता भी विभाजित रहेगी। इसके अलावा एकताबद्ध

पार्टी न रहने के चलते, उनके क्रांति के प्रति समर्पित होने के बावजूद, पार्टी के अभाव में, आस्था के साथ सब कुछ न्यौछावर कर जी जान समर्पित करने के बारे में वे दुविधाग्रस्त हैं। ऐसा ही चलता रहा तो दुश्मन हमें बर्बाद कर देगा। इसीलिए हम प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि चाहे जैसे भी हो, हम एकजुट होंगे ही। पारस्परिक सम्मान–आदर–मर्यादा, सम–अधिकार तथा विश्वास रखकर मतभेद के मुद्दों को हल करना ही होगा। जितना सुलझाया जा सका, उसे सुलझाते हुए बांकी की बातें जनवादी केंद्रीयता के नियम के अंतर्गत एकताबद्ध पार्टी में सुलझाते हुए बाकी मतभेदों/अनसुलझे मुद्दों को पार्टी कांग्रेस में सुलझा लिया जाएगा।

'हम मानते हैं कि इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पहले अपने नेतृत्वकारी पांतों को सुधारना होगा। हमारी गलतियों को और गैर सर्वहारा मानसिकता को पराजित करने के लिए खुलकर आत्म–आलोचना करना जरूरी है। अपनी पेटीबुर्जुआ मानसिकता तथा नजरिये को निर्भयता से उजागर कर आत्म–आलोचना की अग्निपरीक्षा से गुजरते हुए हमारे साथियों को नये इन्सान के तौर पर उन्मुक्त करना होगा। इसीलिए इस बैठक की निर्दिष्ट कार्यसूची में जाने से पहले हम चाहते हैं कि पिछले तीन सालों से जिस अंधकार पर्व से हम गुजरे हैं और इसके चलते भारतीय क्रांति को जो अपार क्षति हुई है, उसकी जिम्मेदारी से हम बच नहीं सकते, यह बात स्वीकारें। लिहाजा हमारा प्रस्ताव है कि दोनों संगठन अपनी प्रतिबद्धता से आगे जाकर अपनी–अपनी आत्म–आलोचना रखे और एकताबद्ध होने की पृष्ठभूमि में यह आत्म–आलोचना हमें नयी दिशा दिखलाए।'

हमारे वक्तव्य रखे जाने के बाद सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू-) के नेतृत्व ने भी इसका पूरा समर्थन किया और कहा कि आत्म–आलोचना के माध्यम से ही हम फिर नया परिवेश और संबंधों के लिए वातावरण तैयार कर सकेंगे। एकताबद्ध होने और किसी भी तरह आगे और बंटे न रहने की दृष्टि से ही यह महान आत्म–आलोचना करनी होगी।

ऐसे भावगंभीर परिवेश में एम सी सी की ओर से महासचिव कामरेड किसान ने अपनी आत्मलोचना पेश की। उभय संगठनों के महासचिवों की

लगभग समूचे नेतृत्व ने भी इस आनंदपूर्ण वातावरण में सांस्कृतिक कर्मियों के साथ शामिल होकर कार्यक्रम में भाग लिया। लगभग रात भर यह कार्यक्रम चलता रहा।

केंद्रीय तौर पर पार्टी के गठन के बाद मूल काम था ऊपर से नीचे तक सभी स्तरों पर कमेटियों को लेकर एकताबद्ध कमेटियां गठित करना। जिन सब राज्यों में दोनों पार्टियों/संगठनों की पार्टी कमेटियां, छापामार टुकड़ियां, और जन संगठन मौजूद हैं, उन्हें लेकर एकताबद्ध कमेटियां गठित करना। जिन दस्तावेजों को पारित किया गया, विभिन्न भाषाओं में उनका अनुवाद करना, दूसरे एम–एल संगठन जो एकताबद्ध पार्टी के न रहने के चलते अलग–थलग थे, उन्हें पार्टी में एकताबद्ध होने का आह्वान करना।

इसके अलावा पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य होने के नाते मुझ पर विदेश विभाग देखने और केंद्रीय मुखपत्र के बोर्ड के साथ जुड़ने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इसके अलावा एक और जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी। मुझे कामरेड के. सी. के जीवन और कृतित्व पर एक रचना लिखनी थी और कई सरकुलर भी लिखने थे।

यह काम जब मैं लगभग खत्म कर चुका था, तब 21 मई 2005 को मैं पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के कोननगर के एक मजदूर बस्ती से काम निपटाकर, नवगठित राज्य कमेटी के सचिव कामरेड तापस (पतितपावन हालदार) के साथ रिक्शे में सवार होते समय सादे लिबास की पुलिस ने हमें घेर लिया और हम गिरफ्तार हो गये। इसके बाद दीर्घ आठ साल तक मैं पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के विभिन्न जेलों में रहा। ये आठ साल मेरे क्रांतिकारी जीवन के सबसे मूल्यवान समय के नुकसान के थे। मुझे पता है कि मैं यह समय वापस नहीं पा सकूंगा। इसलिए मैं अंतिम दिन तक क्रांति के काम करते रहना चाहता हूं। कितने दिन तक जीऊंगा नहीं जानता। यह भी नहीं जानता कि मेरे जीवन काल में क्रांति की विजय देख पाना संभव होगा, पर मुझे इस एक बात का संतोष है कि अंत में लंबे समय के परिश्रम और लगातार धीरज के साथ चलाई गयी कोशिश के फलस्वरूप भारत की एकताबद्ध क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के गठन में मैं अपना सामान्य–सा अवदान कर पाया हूँ। यही मेरे लिए गर्व और सान्त्वना का विषय है। भारतीय क्रांति अवश्य

अब शहीद कामरेड चारु मजुमदार की शहादत के दिन 28 जुलाई को शहीद दिवस मनाना तय हुआ।

इसके बाद पार्टी के पोलित ब्यूरो का गठन किया गया। पोलित ब्यूरो में एक (सचिव को लेकर) की संख्या से सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) की बढ़त थी।

केंद्रीय स्तर पर एकताबद्ध होने के बाद, मूल सांगठनिक काम था, उन तमाम राज्यों, जहां दोनों घटक संगठनों का काम रहा है, वहां राज्य कमेटी तथा दूसरी तमाम कमेटियों के स्तर पर दोनों कमेटियों को मिलाकर एक साथ बैठना और मिलकर नयी कमेटियां गठित करना। इस मामले में, पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के गठन के बारे में विस्तृत बातचीत हुई। इसके अलावा केंद्रीय कमेटी के अंतर्गत सब–कमेटियों का गठन किया गया। जैसे केंद्रीय मुखपत्र का संपादक मंडल (बोर्ड), विदेश विभाग की जिम्मेदारी, जनसंगठनों की जिम्मेदार कमेटी, केंद्रीय मिलिटरी कमीशन आदि।

कुल मिलाकर 56 दिन तक कि दीर्घ–प्रक्रिया के बाद 2004 के 21 सितंबर को भारत की नयी कम्युनिस्ट पार्टी, सी.पी.आई. (माओवादी) का गठन किया गया। सम्मेलन स्थल पर उपस्थित सभी कामरेड उठ खड़े हुए। मंच पर एक दूसरे के हाथ थाम हाथों को उपर उठाये, नवगठित पार्टी के नाम से नारे देते रहे। साथ–साथ शहीद कामरेडों के नामों पर भी नारे लगाये गये तथा क्रांति की विजय के लिए शपथ लिया गया।

लगभग बीस मिनट तक एक भावपूर्ण–आवेगपूर्ण मुहूर्त बना रहा। एक दूसरे का आलिंगन करते हुए हॉल से निकल कर बाहर इन्तजार कर रही छापामार टुकड़ियों तथा शिविर में उपस्थित दूसरे कामरेडों के साथ मिलकर नारे लगाये।

शाम के समय तमाम छापामार टुकड़ियां, जन संगठन के कार्यकर्ता तथा दूसरे कामरेडों के सामने पार्टी गठन की घोषणा करने के लिए मुझे बुलाया। महान एकताबद्ध पार्टी के गठन की मैंने ज्यों ही घोषणा की, उसी के साथ–साथ प्रचंड हर्षोल्लास से सभी पार्टी के नाम के नारे लगाने लगे।

मेरे वक्तव्य के बाद कामरेड गणपति सहित अन्य कामरेडों ने अपना अपना वक्तव्य रखा। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का आगाज हुआ।

आत्म–आलोचना की रपट इस बीच बड़े पैमाने पर प्रचारित हो चुकी है। इस मामले में क्रांतिकारी कार्यकर्ता, समर्थक तथा जनता सभी इस आत्म–आलोचना की विषयवस्तु से भलीभांति परिचित हैं। फिर भी इस आत्म–आलोचना के एक अविभाज्य हिस्सेदार के तौर पर मैं इस मामले में कुछ प्रत्यक्ष अनुभव प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूं।

मुझे नहीं लगता कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में पहले और कभी इस तरह की गहरी आत्म–विश्लेषणकारी, अपनी गलती तथा पेटीबुर्जुआ दृष्टिकोण के बारे में क्षमाहीन तथा खुद को पूरी तरह से निर्मम होकर खोलकर रख देने वाली आत्म–आलोचना कभी हुई है। कामरेड किसान की इस प्रदीर्घ 3 घंटे तक चली आत्म–आलोचना ने पूरे परिवेश को ही बदल डाला। ऐसे एक वातावरण का सृजन हुआ, जिसमें सभी को महसूस हुआ कि इतने दिनों से हम भारत की क्रांति को कितना नुकसान पहुंचाते आये हैं। वे इसकी अनुभूति से पछताने पर मजबूर हुए। कामरेड किसान के वक्तव्य के समाप्त होने पर पूरे वातावरण में भाव गंभीरता छा गयी। कोई कुछ कह नहीं पा रहा था।

इसके बाद बैठक के अध्यक्ष के तौर पर मैंने कहा – 'इस आत्म–आलोचना की भावना ने एकता की मानसिकता को मजबूत किया है और दूसरों को भी बेखटके उन्मुक्त होकर आत्म–आलोचना करने के द्वार खोल दिया है। कामरेड किसान की आत्म–आलोचना की तर्जपर ही हम सभी को आत्म–आलोचना करनी चाहिए।'

इसके बाद पी. डब्ल्यू. की ओर से उस के सचिव कामरेड गणपति ने आत्म–आलोचना पेश की।

कामरेड गणपति की आत्म–आलोचना में कामरेड किसान के वक्तव्य की ही अनुगूंज सुनाई पड़ी। उन्होंने भी अपने वक्तव्य में अपनी गलतियों और गैर–सर्वहारा नजरिये को पूरी तरह खोलकर रख दिया और क्रांतिकारी खेमे में आत्म–आलोचना के मामलों में एक अनन्य/बेमिसाल नदी की सृष्टि की। दोनों पार्टी सचिवों की आत्म–आलोचनाओं ने वहां मौजूद सभी कामरेडों को अपनी–अपनी आत्म–आलोचना रखने के लिए प्रेरित किया और हर एक ने आत्म–आलोचना की।

कामरेड किशनजी की आत्मालोचना ने पूरी बैठक में एक अलग स्तर कायम कर दिया। वक्तव्य रखने जाकर वे बहुत भाव–प्रवण हो गए। एक तो कवि उपर से शायद आत्मग्लानि से पीड़ित थे। वक्तव्य रखते समय ''मैंने कितनी गलतियाँ तथा नुकसान की है'' कहकर फूट–फूट कर रो पड़े। उनकी रुलाई का वेग इतना तीव्र हो उठा कि हम सबके उन्हें बाहों में बाँधकर सान्त्वना देने के बावजूद उनकी रुलाई का वेग नहीं थमा। लगभग दस मिनट तक सारी बातचीत बन्द रही। धीरे–धीरे किशनजी शान्त हुए और आत्म–आलोचना पूरी की।

क्रांतिकारी सर्वहारा नेतृत्व के आत्म–आलोचना की दृष्टि से यह बैठक बेमिसाल थी। इस आत्म–आलोचना के जरिए सभी मानो एक विशाल अग्निकुंड के बीच से मजबूती से गुजरकर नये इंसान के तौर पर पैदा हुए। इसी आदर्श के जोर पर उन्होंने ''अवश्य ही एकजुट होंगे'' की शपथ ली और सी पी आई (एम–एल) पार्टी के गठन तथा बाद में बिखराव के युग को हमेशा के लिए खत्म कर एक नयी उन्नत एकता, नयी पार्टी तथा नये नेतृत्व का शुभ संकेत दिया।

vr e] ,drkc) egku lh-ih-vkbZ- ¼ekvksoknh½ ikVhZ dk xBu

2004 के फरवरी महीने में तीसरे दौर की एकता–वार्ता में आत्म–आलोचनापरक बैठक के बाद और उस बैठक के पहले के मतभेद के विषयों को यानी *(1) भारतीय सत्ता का चरित्र नया औपनिवेशिक तर्ज का अर्ध– औपनिवेशिक अर्ध–सामन्ती राजसत्ता का है। (2) भारत में साम्राज्यवादी नया औपनिवेशिक तरीके से शासन, शोषण तथा नियंत्रण करते हैं (3) भारत का विस्तारवाद साम्राज्यवाद के हित में भारत के बड़ा पूंजीपति वर्ग की उपएजेंट की भूमिका की अभिव्यक्ति है। (4) कठमुल्लावाद के सवाल पर, एक ओर हिन्दू कुठमुल्लावाद हालांकि प्रधान खतरा है, वह एकमात्र खतरा नहीं है, अप्रधान खतरे के तौर पर मुस्लिम कठमुल्लावाद है और (5) गुप्त जन संगठन के तौर पर शुरू से ही क्रांतिकारी किसान कमेटी बनाने का काम करना;* आदि विषयों पर एम. सी. सी. की पहले की अवधारणाओं/अवस्थितियों से सहमति व्यक्त करने पर एकता बनाने की पक्की बुनियाद पड़ गयी। इसके अलावा तय

(एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) की तरफ से एक कामरेड ने कहा – एम.सी.सी. के वर्तमान सचिव कामरेड किसान क्यों पार्टी के सचिव नहीं होंगे? कुछ बातचीत हुई। मैंने कहा एकताबद्ध पार्टी के सचिव के पद के लिए कामरेड किसान अवश्य ही योग्य हैं। उनके सैद्धांतिक ज्ञान, राजनीतिक अनुभव, संघर्ष और संगठन निर्माण की योग्यता पर कोई सवाल ही नहीं उठता। वे सचिव बन ही सकते हैं। इस विशेष परिस्थिति में बड़े संगठन के प्रतिनिधि होने के नाते कामरेड गणपति का ही सचिव बनना उचित है। इसके आलावा हम उन्हें लंबे अर्से से जानते हैं और उनके सचिव बनाये जाने के मामले में एम.सी.सी. को कोई समस्या नहीं है। थोड़ी और चर्चा हुई। इसके बाद यह तय हुआ कि आगामी कांग्रेस तक कामरेड गणपति ही सचिव रहेंगे तथा कांग्रेस में ही इस विषय का अंतिम फैसला होगा। सभी ने यह प्रस्ताव मान लिया।

केंद्रीय कमेटी का अंग्रेजी तथा हिंदी मुखपत्र क्रमशः ''पीपुल्स वार'' तथा ''लाल पताका'' होगा, यह फैसला सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

जनमुक्ति फौज के गठन की शुरूआत की प्रक्रिया के तौर पर कामरेड श्याम, मुरली और महेश की शहादत के दिन 2 दिसंबर 2000 को माना गया। इसके बाद जन मुक्ति फौज के प्राथमिक संगठन का नाम ''पीपुल्स गुरिल्ला आर्मी'' रखने का प्रस्ताव आया। मैंने कहा कि इस नामकरण से यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि जनता क्यों गुरिल्ला आर्मी बना रही हैं, इसकी दिशा साफ नहीं हो रही हैं, बल्कि पीपुल्स 'लिबरेशन' गुरिल्ला आर्मी नाम रखना विज्ञान सम्मत होगा। इससे यह लक्ष्य स्पष्ट हो जाएगा कि जनता अपनी मुक्ति के लिए इस वाहिनी का गठन कर रही है। तब सर्वसम्मति से फौजी इकाई का नाम 'पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी' (पी.एल.जी.ए.) रखने का फैसला हुआ।

सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) की तरफ से फौजी वाहिनी के मुखपत्र के तौर पर एक हिंदी पत्रिका 'जंग' प्रकाशित किया जा रहा था। उसे रोक दिया गया और मेरे प्रस्ताव के मुताबिक 'जंग' का नाम 'अवाम–ए–जंग' (जनयुद्ध) रखना ठीक होगा, यह तय हुआ। इसे सर्वसम्मति से मान लिया गया। इसके बाद एकताबद्ध पार्टी के शहीद दिवस मनाने की तारीख तय की गयी। हम एम.सी.सी. की तरफ से कामरेड अमूल्य सेन की मृत्यु दिवस 23 मार्च को शहीद दिवस के तौर पर मनाते थे। परंतु पार्टी के एकताबद्ध होने पर,

सवालों के समाधान का रास्ता निकल आया। दोनों संगठनों ने मानसिक रूप से यह तैयारी कर ली कि इस बार की इस बैठक से ही नयी पार्टी के गठन का निर्णायक फैसला यहीं से करना होगा।

इस तरह करीब डेढ़ माह तक हर तरह की राजनीतिक तथा सांगठनिक तैयारियां पूरी कर नयी पार्टी तथा केंद्रीय कमेटी के गठन के लिए मूल सभा भवन में ही, पचास नव–निर्वाचित प्रतिनिधियों ने गहन चर्चा शुरू की। दोनों संगठनों के नेतृत्व द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किये गये दस्तावेज चर्चा के लिए प्रतिनिधियों के समक्ष पेश किये गये। ये दस्तावेज हैं :–

1. राजनीतिक प्रस्ताव
2. रणनीति तथा कार्यनीति
3. पार्टी कार्यक्रम
4. पार्टी का संविधान और आत्म–आलोचना रिपोर्ट

दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा छह दिनों तक इन दस्तावेजों पर चर्चा और अपनी–अपनी राय रखने के बाद सर्वसम्मति से विपुल हर्षोल्लास के साथ इन्हें पारित किया गया।

इस पर पार्टी का नाम सी.पी.आई.(माओवादी) रखने का प्रस्ताव आया। इसे विपुल उल्लास के साथ स्वीकृत किया गया और नवगठित पार्टी के नाम पर रह–रह कर नारे गूंजते रहे।

इसके बाद नयी केंद्रीय कमेटी का गठन किया गया। कमेटी में पी. डब्ल्यू. के सदस्य ही संख्या में अधिक रहे। पी.डब्ल्यू. की ओर से केंद्रीय कमेटी में एम.सी.सी. की ओर से और अधिक कामरेडों को स्थान देने का अनुरोध किया। पर हमने तत्काल इस प्रस्ताव पर प्रतिस्पंदन नहीं किया। हमारी आपत्ति का कारण यह था कि संख्या बढ़ाने की गरज से किसी को केंद्रीय कमेटी में जगह देना उचित नहीं है। इसके लिए अनुभव और योग्यता की जरूरत है। बाद में बहुत सोच विचार के बाद हमने तीन युवा आदिवासी कामरेडों और एक महिला आदिवासी कामरेड को मनोनीत किया।

इसके बाद केंद्रीय कमेटी के सचिव के चुनाव का विषय आया। एम. सी.सी. की ओर से मैंने एकताबद्ध पार्टी के सचिव के तौर पर कामरेड गणपति के नाम का प्रस्ताव रखा। कुछ देर तक सभी चुपचाप रहे। फिर सी पी आई

हुआ कि महान आत्म–आलोचना के जरिये आज एक नयी एकता का आधार बन गया है, जिसे लिखित तौर पर दोनों संगठनों के सचिव पेश करेंगे।

बातचीत के दौरान सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) की ओर से एक नये विषय पर बातचीत की मांग की गयी। उनकी राय से पंजाब के कृषि क्षेत्र में पूँजीवाद का विकास हुआ है, फलस्वरूप वहाँ सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली नहीं है।

हमने इस राय का विरोध किया और बताया कि वहाँ कृषि उत्पादन में यंत्र का इस्तेमाल होने के बावजूद उत्पादन संबंध मूलतः अर्ध–सामन्ती ही है। इस विषय पर कुछ दोस्ताना बहस हुई। बाद में तय हुआ कि इस मामले में और भी गहराई से अनुसन्धान तथा उसके आधार पर मूल्यांकन करने के लिए एकताबद्ध पार्टी से एक रिसर्च टीम वहाँ भेजी जाएगी। इसके बाद भी वितर्क का समाधान न होने पर इस मुद्दे को नवगठित पार्टी की प्रथम कांग्रेस में चर्चा के लिए पेश किया जाएगा और कांग्रेस की राय सभी मान लेंगे।

उस बैठक में यह भी तय हुआ कि अधिक देर न करके अगले अगस्त महीने में बारिश की मौसम में उपयुक्त परिवेश में अगली बैठक में एकता पूरी करने की कोशिश करनी होगी, उस बैठक में सिर्फ इन दो संगठनों के केंद्रीय नेतृत्व ही नहीं रहेगी, बल्कि दोनों संगठनों के विभिन्न राज्य कमेटियों के सदस्य और S.A.C. के सदस्य भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्वपूर्ण बैठक की व्यवस्था का उत्तरदायित्व एम.सी.सी. पर होगा।

उसी के मुताबिक अगस्त 2004 के शुरू में ही इस बैठक की व्यवस्था की गयी। लगभग तीन महीना पहले ही से विशाल जंगल का इलाका साफ करके वहाँ नया रास्ता बनाया गया। 18 कैम्प बनाये गये। कैम्पों को लाल झण्डा और लाल कपड़े से मढ़ दिया गया और कागज की जंजीरों से उन्हें सजाया गया। पहाड़ों से होते हुए झरने का पानी कैम्प तक पहुंचाने की व्यवस्था की गयी और उपयुक्त संख्या में स्नान घर तथा शौचालयों की भी व्यवस्था की गयी। बिजली के तरह तरह के उपकरण तथा भोजन सामग्री सहित दूसरी जरूरी चीजें पहले से ही थोड़ी–थोड़ी मात्रा में वहां पहुंचायी गयी। स्थानीय छापामार टुकड़ी, पार्टी के कार्यकर्ताओं, जन संगठन के कार्यकर्ता और जनता के दिन–रात अथक परिश्रम के फलस्वरूप बैठक के

स्थान ने एक खूबसूरत गाँव का सा रूप ले लिया। वहाँ जो कैम्प बनाए गये, उनमें जहाँ सौ लोग बैठ सकते हैं, ऐसा प्रधान सभा भवन और उस भवन में एक बड़ा सा मंच तैयार किया गया। मंच की पृष्ठभूमि में लाल झण्डा और फूलों की माला सहित मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन तथा माओ की बड़ी–बड़ी तस्वीरें टांगी गयी। चारों ओर लाल झण्डों से सजाया गया। इसके आलाव जो कैम्प बने, वे हैं –

1.	अतिथि भवन	–2
2.	सैनिक कक्ष	–2
3.	महिला कक्ष	–3
4.	रसोई घर	–1
5.	भोजनालय	–1
6.	कम्प्यूटर भवन	–1
7.	नेतृत्व का कक्ष	–1
8.	पढ़ने–लिखने का कक्ष	–1
9.	जेनरेटर कक्ष	–1
10.	स्वास्थ्य केंद्र	–1
11.	बाल कक्ष	–1
12.	सांस्कृतिक कक्ष	–1
13.	गोदाम	–1

निर्माण का काम पूरा होने के बाद निर्धारित दिन तथा सूची के अनुसार विभिन्न प्रान्त और विभिन्न रुट से सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के कामरेड एक–एक टीम के तौर पर सम्मेलन स्थल पर उपस्थित होने लगे। एक बड़े मैदान में सजे हुए शमियाने तान कर नीचे कुरसी लगाकर बैठक का इन्तजाम किया गया। एक–एक टीम के मैदान में पहुंचने पर उनका गर्मजोशी से गीतों और नारों की गूंज के बीच जोरदार स्वागत किया गया। उन्हें ठंडा पेय और चाय आदि के साथ जलपान कराया गया। सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के कामरेड ऐसी व्यवस्था देख आवेगताड़ित (भावुक) और अभिभूत हो गये। वे आपस में एक दूसरे से कहते पाये गये कि ऐसी सुंदर व्यवस्था और परिवेश (वातावरण) में अगर एकता संपन्न न हो सकी, तो लज्जा और अफसोस

की सीमा न रहेगी। ऐसा मौका बारबार नहीं आयेगा।

सुरक्षा का व्यापक इंतजाम किया गया। सुरक्षा के लिए विशाल इलाका घेर कर छापामारों के तीन घेरे डाले गये। आधुनिक संचार व्यवस्था से लैस गुप्तचरों का विशाल जाल चारों ओर फैला दिया गया। इसके बाद भी विश्वसनीय ग्रामवासी पहरे पर रहेंगे। सारा इंतजाम कुल 25 दिनों में पूरा किया गया।

मगर सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) की विभिन्न कमेटियों की कुछ समस्याएं रही। जिन सब कमेटियों के सदस्य यहां आये, वे काफी समय से उनकी बैठकें तक नहीं कर पाये थे। उनके आपस में भी कई मतभेद (वितर्क) थे, जिन्हें सुलझाने के लिए उन्हें अलग से बैठक लेने की जरूरत हुई। अगर वे बैठक नहीं कर पाये, तो एकताबद्ध पार्टी की केंद्रीय कमेटी में कौन–कौन सदस्य उनकी ओर से निवार्चित होंगे, यह तय नहीं किया जा सकेगा। जबकि बैठक करने के लिए 20–22 दिन और अतिरिक्त समय की जरूरत होगी। ऐसी हालत में सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के नेतृत्व ने इस मुद्दे पर हमसे बात की। हमने उनकी समस्या समझी। पर ऐसी बैठक के लिए इतने लंबे समय तक सुरक्षा मुहैया कराने का प्रश्न बना हुआ था। इसके अलावा इतने लंबे समय तक बैठक चलाने की हालत में लगभव 400 लोगों की भोजन सामग्री से शुरू कर अन्य सामग्रियों का दोबारा इन्तजाम करना होगा। साथ ही, छापामार टुकड़ियों को इसके लिए तैनात करने पर, उनके अपने–अपने काम के इलाकों में समस्याएं दिखाई देंगी। बैठक के बाद आये हुए प्रतिनिधियों को इलाके से सुरक्षित बाहर निकाल ले जाने की जो व्यवस्था है, वह सब बदलनी होगी।

जो भी हो, ऐसी बैठक की व्यवस्था बार–बार नहीं की जा सकेगी। लिहाजा चाहे जितनी भी समस्या हो, इनको सुलझाना ही होगा, ये जान समूची व्यवस्था को नये सिरे से ढालकर पुनर्व्यवस्थित किया गया। सी पी आई (एम–एल) (पी. डब्ल्यू.) के नेतृत्व से अनुरोध किया गया कि वे अपनी पूरी प्रक्रिया दो सप्ताह में सम्पन्न कर ले।

इस बीच चर्चा के मूल विषयवस्तु को लेकर दोनों संगठनों के नेतृत्व के बीच बातचीत चलती रही। तब विषयों को अंतिम रूप देने के लिए बैठक करते रहे। एक लंबी प्रक्रिया के माध्यम से आपसी विरोध तथा अनसुलझे